राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 299

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, सोमवार, 6 अप्रैल 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

अमिताभ बच्चन देंगे एक लाख दैनिक कामगारों को मासिक राशन

>>7

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	स्पेन	भारत	30 मार्च की स्थिति	दिल्ली
कुल केस	1,245,207	323,516	130,759	3,577	1,123	503
मौतें	67,910	9,171	12,418	126	27	18
स्वस्थ हुए	256,503	16,590	38,080	274	83	7

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	690	24
तमिलनाडु	571	3
केरल	314	2
उत्तर प्रदेश	283	3
राजस्थान	253	1
आंध्र प्रदेश	252	1
कर्नाटक	151	4
गुजरात	120	0
अन्य	935	83

रात 11:45 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	इटली	जर्मनी	फ्रांस
केस	128,948	98,737	89,953
मौतें	15,887	1,523	7,560

नोट : कोरोना से प्रभावित लोगों के संदर्भ में आंकड़े उल्लिखित दो स्रोतों के अतिरिक्त जागरण न्यूज नेटवर्क के रूप में अन्य माध्यमों से भी लिए गए हैं। अत : तालिका तथा दैनिक जागरण के इस अंक में प्रकाशित सामग्री में आंकड़ों का अंतर संभव है।

पूरे देश में संकल्प, समर्पण, समर्थन और सहयोग की दिवाली

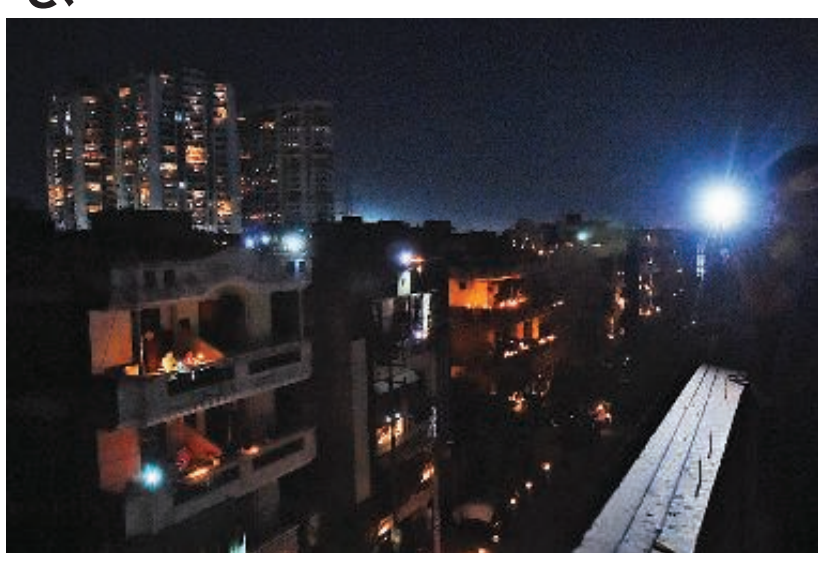

130

करोड़ भारतीयों ने कोरोना के विरुद्ध युद्ध में दिखाई एकजुटता

घरों की लाइट बंद थी, लेकिन हिम्मत की रोशनी से नहा रहा था देश

पूरे देश की तरह साहिबाबाद क्षेत्र में भी लोगों ने रविवार रात 9 बजे अपने घरों में दीये,मोमबत्ती और मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाकर कोरोना से जंग में पीएम मोदी के साथ एकजुटता दिखाई। जगदीश यादव

जेएनएन, नई दिल्ली

पांच अप्रैल रात नौ बजे, यह दिवाली तो नहीं थी लेकिन इस पल का अनुभव दिवाली से कम भी नहीं था। वास्तव में यह 130 करोड़ भारतीयों के संकल्प, समर्पण, समर्थन और सहयोग की दिवाली थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर पूरे देश ने एक साथ नौ मिनट की यह दिवाली मनाई। पीएम ने भी अपने आवास पर लाइटें बंद कर दीया जलाते हुए अपनी चार तस्वीरें ट्विटर पर साझा कीं।

कोरोना के विरुद्ध युद्ध में सभी भारतीयों से प्रधानमंत्री मोदी ने नौ मिनट तक दीया, मोमबत्ती और टॉर्च की रोशनी के साथ अपनी एकजुटता दिखाने को कहा था। पीएम की अपील का ही असर था कि ठीक नौ बजते ही लोगों ने घरों की लाइटें बंद कीं और छतों, दरवाजों और बालकनी पर दीया जलाकर खड़े हो गए। हर ओर दीपों की लड़ियां सजी हुई दिख रही थीं। इन नौ मिनट ने दिखा दिया कि 130 करोड़ भारतीय हर लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हैं और अपने नेतृत्व के साथ हैं। यह दिवाली इस महामारी के बीच लोगों की सेवा में लगे स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिस के जवानों और अन्य आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों का हौसला बढ़ाने वाली भी रही। इसने दिखा दिया कि इस लड़ाई में वो अकेले नहीं हैं, पूरा देश उनके साथ खड़ा है।

... और नहीं गई लाइट : ये नौ मिनट बीतने के साथ ऐसी तमाम आशंकाएं भी हवा हो गईं, जिनमें कहा जा रहा था कि एक साथ लाइटें बंद होने और फिर नौ मिनट बाद चालू होने से पड़ने वाले दबाव से ग्रिड फेल हो जाएंगे। सरकार की चाकचौबंद व्यवस्था और लोगों की ओर से केवल लाइटें बंद करने व अन्य इलेक्ट्रिक वस्तुओं को यथावत रखने की सतर्कता से ऐसा कुछ नहीं हुआ।

जनता कर्फ्यू में भी दिखा था ऐसा ही उत्साह : प्रधानमंत्री मोदी की अपील पर 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दिन भी लोगों में यही उत्साह दिखा था। उस दिन मोदी ने शाम पांच बजे पांच मिनट के लिए लोगों से थाली, ताली या घंटी बजाकर कोरोना के खिलाफ लड़ाई में जुटे योद्धाओं के प्रति सम्मान दिखाने की अपील की थी।

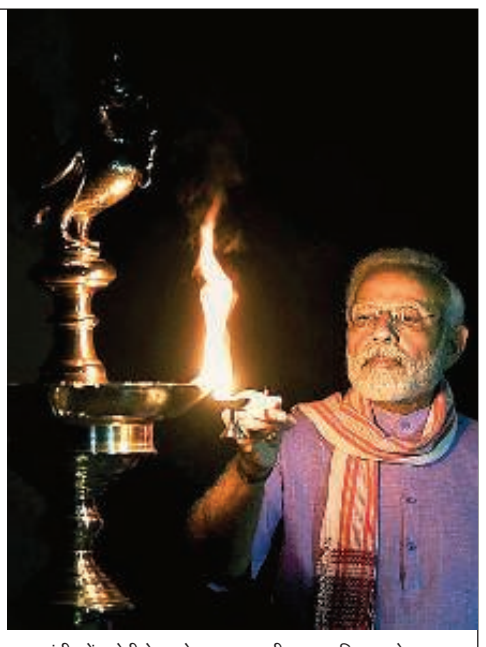

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने आवास पर दीप प्रज्जवलित करके संकल्प को प्रकट किया। एएनआइ

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +9190131515 15

एडवांस हुआ पोर्टेबल वेंटीलेटर, पूर्व छात्रों ने किया तैयार ● पेज 6

पाक ने एयर इंडिया को कहा, हमें आप पर गर्व ● पेज 6

सीडीआरआइ और आइआइटीआर में जांच की तैयारी पूरी ● पेज 7

सरोकार

कोरोना से जंग के लिए मैदान में उतरे स्वयं सहायता समूह

देवरिया : उप्र के देवरिया जिले में चार स्वयं सहायता समूह की महिलाएं कोरोना से जंग को मैदान में उतर गई हैं। वह लोगों के लिए सैनिटाइजर और मास्क बना रही हैं। (पेज-13)

जागरण विशेष

लॉकडाउन के बीच किसानों को मिला ई-बाजार

वाराणसी : लॉकडाउन से जब पहिए रुक गए, दुकानों में ताला लग गया तो उस वक्त बहुतायत घरों तक खाद्यान्न व अन्य घरेलू सामान पहुंचाने की डा. दीप्ति की दृढ़ इच्छा और प्रबल हो गई। वह गृहस्थ ज्योर्जिक लिमिटेड स्टार्टअप के नाम से कार्य कर रही हैं। (पेज-13)

तब्लीगियों ने दोगुना कर दिया कोरोना का संकट

कमजोर हुई मुहिम ▶ जमात की करतूतों से गत कुछ दिनों में तेजी से बढ़े मामले

जमात से इतर संक्रमितों के मामले में अब भी स्थिति नियंत्रण में

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

तमाम देशों की तुलना में भारत ने समय रहते सतर्कता बरतते हुए देशव्यापी लॉकडाउन का एलान कर दिया गया था। इसके दम पर देश ने कोरोना के विरुद्ध युद्ध में अपनी स्थिति को काफी मजबूत भी कर लिया था, लेकिन इस पूरी कोशिश को तब्लीगी जमात ने अपनी गलती से कमजोर कर दिया। आंकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि अगर तब्लीगी जमात से जुड़े संक्रमण के मामले नहीं आए होते तो देश में कुल मामले बढ़ने की रफ्तार आधी होती। हालांकि राहत की बात है कि अब भी तब्लीगी मरीजों को हटाकर देखा जाए तो स्थिति काफी हद तक नियंत्रण में है। स्वास्थ्य मंत्रालय को देश में हालात काबू में रहने की पूरी उम्मीद है।

राहत की बात : लॉकडाउन ने फीसद के आधार पर हो रही वृद्धि को धीमा किया

4.1 दिन में दोगुनी हो रही है देश में कुल संक्रमितों की संख्या

7.4 दिन लगते दोगुना होने में अगर तब्लीगी मरीज न बढ़ते

30 फीसद से ज्यादा है तब्लीगियों की संख्या कुल संक्रमितों में

नई दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित मरकज की फॉरेंसिक और क्राइम ब्रांच ने रविवार को जांच की। टीम ने यहां से जरूरी साक्ष्य जुटाए। प्रेट्र

स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल के अनुसार भारत में इस समय कोरोना के मरीजों की कुल संख्या को दोगुना होने में 4.1 दिन का समय लग रहा है। अगर तब्लीगी जमात के मरीजों को इसमें से हटा दिया जाए तो यह रफ्तार अब भी आधी है। जमात से इतर मरीजों की संख्या को दोगुनी होने में अभी 7.4 दिन का वक्त लग रहा है। देश में कोरोना मरीजों में तिहाई अकेले जमात से जुड़े हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने फिलहाल कोई आंकड़ा नहीं दिया है, लेकिन अग्रवाल ने दावा किया कि लॉकडाउन के बाद से मरीजों की संख्या में हर दिन फीसद के आधार पर होने वाली वृद्धि में लगातार कमी आ रही है।

प्रयागराज में कोरोना के लिए जमातियों को जिम्मेदार बताने पर युवक की हत्या पेज>>4

जांच की रणनीति सही

भारत में कोरोना वायरस को लेकर टेस्टिंग गाइडलाइंस को सही बताते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि हमारे यहां अभी तक केवल उन मरीजों का टेस्ट किया गया, जिनमें कोरोना के लक्षण थे। उनमें केवल तीन फीसद मरीजों में ही कोरोना के वायरस पाए गए। जर्मनी, इटली, फ्रांस, दक्षिण कोरिया और जापान जैसे देशों में, जिन्होंने मास टेस्टिंग का रास्ता अपनाया, वहां भी कुल टेस्ट में से केवल तीन फीसद में ही कोरोना के वायरस मिले हैं। इससे यह भी साबित होता है कि भारत में कोरोना का वायरस अभी तक कम्युनिटी ट्रांसमिशन के स्तर तक नहीं पहुंचा है। पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) की कमी पर अग्रवाल ने कहा कि सरकार अन्य देशों से भी इनकी खरीद कर रही है। साथ ही समाजसेवा से जुड़े कई संगठन भी आपूर्ति बढ़ाने में सहयोग कर रहे हैं।

हॉटस्पॉट के लिए खास रणनीति

लॉकडाउन के अंतिम चरण में पहुंचने और कोरोना से प्रभावित हॉटस्पॉट वाले इलाकों की स्पष्ट पहचान के बाद स्वास्थ्य मंत्रालय मास टेस्टिंग की तैयारी में जुट गया है। हॉटस्पॉट वाले इलाके में वायरस को सीमित रखने लिए इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) ने शनिवार को विस्तृत कंटेनमेंट प्लान के साथ लोगों की मास टेस्टिंग के लिए एंटीबॉडी आधारित टेस्टिंग की नई गाइडलाइन भी जारी की है। आइसीएमआर के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर ने कहा, बुधवार को इन इलाकों में किट पहुंच जाएगी। उसके बाद टेस्टिंग शुरू कर दी जाएगी। एंटीबॉडी आधारित ब्लड टेस्ट से कोरोना की पुष्टि नहीं होती, लेकिन इंफ्लूएंजा संक्रमण का पता चलता है, जो कोरोना के कारण हो सकता है। किसी क्षेत्र में इंफ्लूएंजा के मामले अचानक बढ़ने पर भी निगाह रखी जाएगी। एंटीबॉडी टेस्ट के पॉजिटिव मरीज को संभावित कोरोना मरीज मानते हुए इलाज और आइसोलेशन से जुड़े प्रोटोकॉल का पालन होगा। जांच निगेटिव होने पर लक्षण के आधार पर आरटी-पीसीआर जांच होगी। अन्यथा 10 दिन फिर एंटीबॉडी टेस्ट होगा, जिसके 15 से 30 मिनट में मिल जाते हैं।

मोदी ने सोनिया गांधी समेत प्रमुख नेताओं से की चर्चा

नई दिल्ली : पीएम नरेंद्र मोदी ने कोरोना से जंग के मुद्दे पर पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, प्रतिभा पाटिल, पूर्व पीएम मनमोहन सिंह और एचडी देवगौड़ा से बात की। इसी क्रम में कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, तृकां प्रमुख ममता बनर्जी, सपा प्रमुख अखिलेश यादव समेत कई नेताओं से भी चर्चा की। (पेज-3)

लॉकडाउन के दौरान एटीएम में नहीं होगी नकदी की किल्लत

नई दिल्ली : लॉकडाउन के दौरान एटीएम में नकदी की किल्लत नहीं होगी। सरकार की तरफ से नकदी के रूप में दी जाने वाली मदद को लोगों तक पहुंचाने के लिए भी एटीएम में इन दिनों पहले के मुकाबले अधिक नकदी भरने का काम किया जा रहा है। (पेज-10)

ट्रंप ने मोदी से किया क्लोरोक्विन दवा भेजने का आग्रह

वाशिंगटन : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कोरोना वायरस के इलाज में कारगर मलेरिया की दवा हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन दवा भेजने का आग्रह किया है। ज्ञात हो, अपने देश में कोरोना के बढ़ते प्रकोप के बीच भारत ने इस दवा के निर्यात पर रोक लगा दी है। (पेज-11)

जरूरी सामान वाले ट्रकों पर नहीं लगेगा ब्रेक

नई दिल्ली, प्रेट्र : लॉकडाउन की अवधि में सभी आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार ने सभी राज्य सरकारों को कुछ दिशा-निर्देश दिए हैं। इसके चलते जरूरी सामान वाले ट्रकों की आवाजाही पर कोई ब्रेक नहीं लगेगा। इसके लिए सभी राज्यों के अंदर और राज्यों के बीच जरूरी खाद्यानों के ट्रकों की सुगम आवाजाही के लिए ट्रक ड्राइवरों और इन क्षेत्रों से जुड़े मजदूरों को अपने कार्यस्थल तक पहुंचने की सुविधा देना सुनिश्चित करने को कहा है।

उपभोक्ता मामलों के सचिव पवन कुमार अग्रवाल ने रविवार को राज्यों के मुख्य सचिवों को लिखे पत्र में कहा कि राज्य सरकारें अपना एक नोडल अधिकारी नियुक्त करे जो राज्य की पुलिस से तालमेल रखकर खाद्यान्नों की सुगम आवाजाही सुनिश्चित करे। यह अधिकारी देश भर में आवश्यक सामग्रियों की आपूर्ति करने वाली कंपनियों और संगठनों को अधिकृत करने का पत्र भी जारी करेगा।

सचिव ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि ट्रक ड्राइवरों को लॉकडाउन के दौरान पुलिस की तरफ से कोई परेशानी न उठानी पड़े। स्थानीय प्रशासन एक ड्राइवर और उसके एक सहयोगी को घर से निर्देशित स्थान तक पहुंचने में अतिरिक्त समय और संसाधन व्यय न करना पड़े। उन्होंने कहा कि अगर ट्रक या ऐसा कोई वाहन खाली हो तो ड्राइवरों को अपने साथ अतिरिक्त रूप से अनलोड किए जा चुके सामान और पिकअप किए जाने वाले सामान का बिल और वे-बिल अपने साथ रखना होगा।

कंपनियों की ओर से आ रही थी शिकायतें पेज>>10

- उपभोक्ता मामलों के सचिव ने राज्यों के मुख्य सचिवों को लिखे पत्र में नोडल अधिकारी नियुक्त करने को कहा
- यह अधिकारी देश भर में आवश्यक सामग्रियों की आपूर्ति करने वाली कंपनियों को अधिकृत करने का पत्र भी देगा

प्रतीकात्मक फोटो

विदेश भागने की कोशिश में धरे गए 18 मलेशियाई

जेएनएन, नई दिल्ली

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज में शामिल मलेशियाई नागरिकों के देश से भागने की कोशिश धरी रह गई। रविवार को गोपनीय तरीके से देश से बाहर निकलने की फिराक में इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर पहुंचे आठ मलेशियाई नागरिकों को पकड़ लिया गया। वहीं, चेन्नई में चार्टर्ड विमान से मलेशिया जा रहे 10 लोगों को उतार लिया गया। अन्य 157 यात्रियों को लेकर विमान मलेशिया रवाना हो गया।

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने मरकज से जुड़े सभी विदेशियों की सूची बनाकर पहले ही लुकआउट सर्कुलर नोटिस जारी करा दिया है। बताते हैं कि आठों विदेशी 12:45 बजे एयरपोर्ट पहुंचे तो इमिग्रेशन ने रोक लिया। स्वास्थ्य जांच के बाद इन्हें फिलहाल 14 दिनों के लिए क्वारंटाइन में भेज दिया गया है। इनके खिलाफ फोरेन एक्ट व महामारी अधिनियम आदि धाराओं में मुकदमा दर्ज किया जा सकता है।

पुलिस को आशंका है कि 22 मार्च को जनता कर्फ्यू से पहले अथवा 22 से 28 मार्च के बीच मरकज से निकलकर ये मलेशियाई नागरिक कहीं छिप गए थे। मरकज से कोरोना संक्रमण के मामले ने तूल पकड़ा तो इन लोगों ने अपने देश के दूतावास से संपर्क कर निकाले जाने का अनुरोध किया था। रविवार को मलेशिया के विमान से इन लोगों को वापस जाना था, लेकिन लुकआउट सर्कुलर नोटिस जारी होने के कारण इनकी कोशिश धरी रह गई।

- दिल्ली में इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर पहुंचे आठ लोगों को पकड़ा गया
- चेन्नई में दस मलेशियाई नागरिकों को चार्टर्ड विमान से उतारा

उधर, चेन्नई में चार्टर्ड विमान से जा रहे दस मलेशियाई नागरिकों को उतार लिया गया। इन लोगों ने दिल्ली के तब्लीगी मरकज के कार्यक्रम में हिस्सा लिया था। वहां से तमिलनाडु के टेंकासी जिले में गए थे। वहीं से चेन्नई आए थे। विमान में सवार सभी मलेशियाई तमिल थे जो 24 मार्च को लॉकडाउन के बाद तमिलनाडु की विभिन्न जगहों पर फंसे हुए थे। ज्ञात हो, कोरोना संकट के चलते राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय विमान सेवा बंद कर दी गई है, लेकिन प्रत्येक देश की सरकारें चार्टर्ड विमान भेजकर अपने लोगों को निकाल रही हैं। पुलिस टीम पकड़ गए लोगों से पूछताछ करेगी।

नसीहत

महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष मुजफ्फर हुसैन ने कुरान में कही गई बातों को दोहराया, कहा-इस्लाम के पवित्र ग्रंथ में मुल्क के कायदे-कानून और हुक्मरानों की बात मानने का है आदेश

महामारी में 'लॉकडाउन' की सलाह देता है इस्लाम

ओमप्रकाश तिवारी, मुंबई

कोरोना संकट के दौरान यदि इस्लाम की सलाह पर अमल किया जाता तो आज न तो देश के संक्रमितों में एक तिहाई तब्लीगी जमात वाले होते, न ही जमात के अमीर मौलाना साद को यूं मुंह छिपाकर भागना पड़ता, क्योंकि कुरान शरीफ की सूरा संख्या 5 में स्पष्ट कहा गया है कि जिस मुल्क में रहते हो उसके कायदे-कानून और वहां के हुक्मरानों की बात को मानो। दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में हुई गलतियों पर पर्दा डालने के लिए भले ही कुछ लोग कुतर्क गढ़ रहे हों, लेकिन पढ़े-लिखे मुसलमान तथ्यों के साथ सामने आ रहे हैं। ये लोग कोरोना से बचने के लिए सरकार के निर्देशों एवं इस्लाम की शिक्षा में समानता पाते हैं।

महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष सैय्यद मुजफ्फर हुसैन कहते हैं

मुजफ्फर हुसैन की फाइल फोटो। ट्विटर

कि जिस मजहब की आसमानी किताब और उसके हुजूर पैगंबर मुस्तफा मुहम्मद सल्लेअलाहुअलैहिवसल्लम ने इन पाबंदियों एवं एहतियातों का जिक्र हजारों साल पहले किया था, आज 21वीं शताब्दी में विज्ञान उन्हीं का पालन करने को कह रहा है। ऐसे में इस्लाम को मानने वालों का फर्ज बनता है कि वे मजहब के बताए हुए रास्तों पर चलें। अपनी, समाज व मुल्क के लोगों की हिफाजत करें एवं सरकार के निर्देशों का पालन करें। इसके बावजूद यदि कोई कोरोना की महामारी के दौरान सरकार के निर्देशों का उल्लंघन करे तो ऐसे इंसान को गैरजिम्मेदार माना जाएगा।

दो बार महाराष्ट्र विधान परिषद सदस्य रहे मुजफ्फर हुसैन हुजूर पैगंबर मुस्तफा मुहम्मद सल्लेअलाहुअलैहिवसल्लम की हदीस में दी गई सलाहों का पृष्ठ एवं सूरा संख्या के साथ उदाहरण देते हुए कहते हैं कि हदीस में संक्रामक रोग के दौरान लॉकडाउन जैसे उपाय के निर्देश भी दिए गए हैं। हदीस में कहा गया है कि संक्रामक बीमारी के दौरान उन जगहों पर जाने से परहेज करें, जहां इसका प्रकोप हो। अगर आप उसी शहर में या उसी जगह पर हों तो उस जगह को छोड़कर बाहर न जाएं। (अल बुखारी 5739 एवं अल मुस्लिम 2219)। आज सरकार 'शारीरिक दूरी' एवं 'क्वारंटाइन' की बात कर रही है। हदीस में भी संक्रामक रोग से पीड़ित को सेहतमंद लोगों से दूर रखने की हिदायत दी गई है (अल बुखारी 6771 एवं अल मुस्लिम 2221)। यही नहीं जिस शख्स को (कोरोना जैसा) संक्रामक रोग हो, शेष समाज को उससे दूर रहने की हिदायत भी दी गई है (शाही अल बुखारी वाल्यूम 07- 71- 608)।

हदीस में साफ कहा गया है कि यदि आप संक्रामक रोग से पीड़ित हैं तो आपका फर्ज है कि दूसरों तक इसे ना पहुंचने दें। (सुनान इब्न मजहा 2340। सरकारी निर्देशों का उल्लंघन करते हुए कई इलाकों में आज भी लोग सामूहिक नमाज की जिद ठाने बैठे हैं, जबकि हदीस में कहा गया है कि ऐसी महामारी के वक्त आपका घर ही आपकी मस्जिद है। ऐसे में जो सवाब (पुण्य) मस्जिद में नमाज का है, वही घर में पढ़ी हुई नमाज का है। (अल तिरमजी, अल सलाह 291)। मुजफ्फर हुसैन कहते हैं कि जब हुजूर पैगंबर मुस्तफा मुहम्मद सल्लेअलाहुअलैहिवसल्लम को छींक या खांसी आती थी तो वह खुद के कपड़े से अपना मुंह ढक लिया करते थे। (अल मुस्लिम 223)।

(संबंधित खबर पेज-6 पर भी)

कश्मीर में घुसे पांच पाकिस्तानी आतंकी ढेर, तीन जवान भी शहीद

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- कुपवाड़ा में खराब मौसम के बीच 15 घंटे से ज्यादा चली मुठभेड़, दो जवान घायल

खराब मौसम का फायदा उठाकर सरहद पार कर कश्मीर में लगातार ठिकाने बदल रहे आतंकियों का दल आखिर सुरक्षाबलों के घेरे में आ गया। रविवार तड़के पांच पाकिस्तानी आतंकियों को सुरक्षाबलों ने 15 घंटे से अधिक चली मुठभेड़ में मार गिराया। इस दौरान तीन सैन्यकर्मी भी शहीद हो गए, जबकि दो जवान घायल हुए हैं। मौके से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद हुआ है। सुरक्षाबलों ने क्षेत्र में तलाशी अभियान शुरू किया है।

पहली अप्रैल को की थी घुसपैठ : मारे गए आतंकियों ने पहली अप्रैल बुधवार को कुपवाड़ा में केरन सेक्टर में घुसपैठ की थी, जहां घना जंगल है। इलाके में हिमपात भी खूब हुआ है। बुधवार को भी क्षेत्र में हल्का हिमपात हुआ था। ये आतंकी जिनकी तादाद छह होने की आशंका है, एलओसी से चार किलोमीटर आगे बहक गुगलदार इलाके तक पहुंच गए थे। गश्त कर रहे सेना की 8 जाट रेजिमेंट के जवानों ने इन्हें देखते ही घेर लिया था। शाम पांच बजे तक घुसपैठियों व सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ चली थी, जिसके बाद अंधेरे और खराब मौसम की आड़ में घुसपैठिए भाग निकले। सभी रास्तों को बंद करते हुए सेना की 41 राष्ट्रीय राइफल (आरआर) व 57 आरआर, 160 टेरीटोरियल आर्मी (टीए) और राज्य पुलिस का विशेष अभियान दल (एसओजी) के जवानों ने आवूरा, कुमकाडी, जुरहामा व बटपोरा, हयहामा समेत पूरे इलाके को घेर तलाशी अभियान चला रखा था।

तड़के तक चली गोलाबारी पेज>>13

न्यूज गैलरी

कोरोना से जंग में बच्चे भी आए आगे, दिया 60 हजार दान

सुहा व सुहैल चैक के साथ। सौ. स्वयं

नई दिल्ली : कोरोना से जंग में अब बच्चे भी कूद पड़े हैं और वे इस महामारी से निपटने के लिए खुलकर दान कर रहे हैं। ऐसे ही दसवीं कक्षा के छात्र सुहैल और सुहा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 60 हजार रुपये पीएम केयर्स फंड में दान देकर अनूठी पहल की है। सुहैल व सुहा भाई-बहन हैं। सुहा धौलाकुआं के स्प्रिंगडेल्स और सुहैल डीपीएस आरके पुरम में पढ़ते हैं। दोनों ने पॉकेट खर्च से 60 हजार रुपये बचाकर बैंक में रखे थे। इनके पिता बदरुद्दीन खान मणिपुर के गवर्नर के निजी सचिव हैं, जबकि मां नौशाबा हसन खान शिक्षिका हैं। बदरुद्दीन खान ने बताया कि दान देने का फैसला सुहैल और सुहा का है। उन दोनों ने जब बताया तो मुझे और मेरी पत्नी को बहुत गर्व हुआ। वह भी मार्च की तनख्वाह पीएम केयर्स फंड में दान करेंगे। (जासं)

वायरस का संदिग्ध अस्पताल की तीसरी मंजिल से कूदा

नई दिल्ली : लोकनायक अस्पताल में भर्ती कोरोना के संदिग्ध मरीज ने तीसरी मंजिल से कूदकर आत्महत्या की कोशिश की। उसके सिर में चोट लगी है और दोनों हाथ व एक पैर में फ्रैक्चर आया है। उसके हाथ-पैर पर प्लास्टर किया गया है। यह घटना शनिवार रात 11.30 बजे की है। डॉक्टर ने बताया कि उसकी हालत स्थिर है। उसकी कोरोना की जांच रिपोर्ट अभी नहीं आई है। वह तब्लीगी जमात से जुड़ा नहीं है। वह माता सुंदरी रोड डीडीए फ्लैट का रहने वाला है। उसे कोरोना जैसे लक्षण होने के कारण अस्पताल में 31 मार्च को भर्ती कराया गया था। (राब्यू)

बिना मास्क के घूम रहा था युवक, मुकदमा दर्ज

नई दिल्ली : पुलिस ने एक ऐसे युवक के खिलाफ एफआइआर दर्ज की है जो बिना मास्क के सड़क पर घूम रहा था। माना जा रहा है दिल्ली में इस तरह की पहली एफआइआर पुलिस की ओर से दर्ज की गई है। इससे पहले लॉकडाउन में भीड़ जमा करने वालों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई कर रही थी। पुलिस के अनुसार अनस अली परिवार के साथ रमेश पार्क में रहता है। पुलिस विकास मार्ग पर बैरिकेड लगाकर वाहनों की जांच कर रही थी। उसी दौरान अनस अली बिना मास्क के सड़क पर घूमता दिखाई दिया। एक पुलिसकर्मी ने उसे अपने पास बुलाकर पूछा कि वह सड़क पर क्या रह रहा है। इस पर अनस पुलिस को संतोषजनक जवाब नहीं दे सका। पुलिस ने उससे मास्क न पहनने की वजह पूछी तो वह कुछ नहीं बोला। इसके बाद पुलिस ने उसके खिलाफ सरकारी आदेश का उल्लंघन का मामला दर्ज किया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि कोरोना तेजी से फैल रहा है। ऐसे में लोग मास्क लगाएं या फिर किसी कपड़े से ढकें। यदि कोई ऐसा नहीं करता तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। (जासं)

'विदेश में 24 घंटे भारतीयों की मदद कर रही सरकार'

नई दिल्ली : विदेश में रहने वाले भारतीयों को सुविधाएं मुहैया कराने की मांग को लेकर दायर याचिका पर विदेश मंत्रालय ने दिल्ली हाई कोर्ट को बताया कि भारतीयों की मदद के लिए सभी प्रबंध कर लिए गए हैं। मंत्रालय ने जानकारी दी है कि कोविड-19 के कारण फंसे भारतीयों की मदद के लिए 24 घंटे का हेल्पलाइन नंबर शुरू किया गया है। साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से टेलीफोन नंबर एवं ईमेल एड्रेस भी जारी किया गया है। इसके अलावा भारतीय दूतावास एवं संबंधित देश के काउंसलेट जनरल के माध्यम से सभी सुविधाओं की जानकारी भारतीय नागरिकों तक पहुंचाई जा रही है। इसमें खाने-पीने के सामान के साथ अन्य सुविधाएं उपलब्ध करा दी गई हैं। (जासं)

निजी अस्पतालों में स्थानांतरित होंगे अन्य मरीज

तैयारी ▶ स्वास्थ्य विभाग ने समीक्षा बैठक के बाद लिया फैसला

कोरोना के बढ़ते मामलों के मद्देनजर लिया गया निर्णय

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के बढ़ते मामलों के मद्देनजर स्वास्थ्य विभाग ने तय किया है कि लोकनायक, जीबी पंत व राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल सिर्फ कोरोना के इलाज के लिए अधिकृत होंगे। इन अस्पतालों में भर्ती अन्य रोगों के मरीजों को जीटीबी व निजी अस्पतालों में स्थानांतरित किया जाएगा। निजी अस्पतालों में भर्ती होने वाले मरीजों के इलाज का खर्च दिल्ली सरकार उठाएगी। वहीं, डीडीयू, आंबेडकर व जीटीबी अस्पताल में भर्ती कोरोना के मरीजों को हटाकर लोकनायक अस्पताल में स्थानांतरित किया जाएगा। इन अस्पतालों में फिलहाल विभिन्न रोगों से पीड़ित अन्य मरीजों का इलाज होगा।

स्वास्थ्य विभाग ने दिल्ली सरकार व अस्पतालों में तैयारियों के लिए गठित कमेटी की समीक्षा बैठक के बाद यह फैसला लिया है। इस फैसले के तहत लोकनायक, जीबी पंत व राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में कोरोना के इलाज के लिए 2450 बेड की व्यवस्था की जाएगी। लोकनायक व जीबी पंत ये दोनों अस्पताल एक ही जगह दिल्ली गेट के पास हैं। इन दोनों अस्पतालों को मिलाकर कुल 2000 बेड की व्यवस्था होगी। वहीं, ताहिरपुर स्थित राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में 450 बेड की व्यवस्था की जाएगी। जीबी पंत व राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में भर्ती हार्ट, न्यूरो व गैस्ट्रो के गंभीर मरीजों को बीएलके, गंगाराम व अपोलो अस्पातल में स्थानांतरित करने की तैयारी है। लोकनायक अस्पताल से गायनी व पीडियाट्रिक सेवा भी बंद कर कुछ समय के लिए जीटीबी अस्पताल में स्थानांतरित करने की तैयारी है।

वैसे तो अस्पतालों में ओपीडी सेवा बंद होने के बाद वार्ड में मरीज काफी कम भर्ती हैं। राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में तो अब ज्यादतर कोरोना और इसके संदिग्ध मरीज ही भर्ती हैं। अन्य बीमारियों से पीड़ित कुछ ही मरीज बचे हैं, जिन्हें निजी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। इसी तरह जीबी पंत अस्पताल में सवा सौ मरीज हैं। इस अस्पताल को भी खाली किया जाएगा।

10 दिन में तैयारी पूरी करने का निर्देश : अस्पतालों को करीब 10 दिन में तैयारी पूरी करने और कोरोना के लिए आइसीयू तैयार करने का निर्देश है। असल में कोरोना के संक्रामक बीमारी होने के नाते अस्पताल में सेंट्रलाइज एसी का इस्तेमाल नहीं हो सकता क्योंकि सेंट्रलाइज एसी से संक्रमण बढ़ने का खतरा रहता है। इसलिए आइसीयू में स्प्लिट और विंडो एसी ही लगाए जाएंगे।

होटल, धर्मशाला में 10 हजार बेड की व्यवस्था करने की सिफारिश

यकृत व पित्त विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. एसके सरीन की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने सिफारिश की है कि यदि कोरोना के नए मामले बढ़ जाते हैं और अस्पतालों में प्रतिदिन 100 मरीज भर्ती होने लगें तो हल्के लक्षण वाले करीब 400 लोगों को रखने की व्यवस्था करनी पड़ेगी। इस तरह होटल, धर्मशाला व बैंक्वेट हॉल में 10 हजार बेड की व्यवस्था करने की सिफारिश की गई है।

जीटीबी, अंबेडकर व डीडीयू में 65 मरीज हैं भर्ती

मौजूदा समय में जीटीबी, अंबेडकर व डीडीयू अस्पताल में कोरोना के 65 मरीज भर्ती हैं। इसके अलावा इन तीनों अस्पतालों में 179 संदिग्ध मरीज भर्ती हैं। इनमें ज्यादातर तब्लीगी मरकज से निकाले गए लोग हैं। ये सभी मरीज लोकनायक अस्पताल में स्थानांतरित किए जा सकते हैं।

प्राइवेट हास्पिटल में जल्द शुरू होगा कोरोना मरीजों का इलाज

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

- उपराज्यपाल ने दिए इलाज करने में सक्षम निजी अस्पतालों की पहचान के निर्देश
- स्वास्थ्य विभाग तैयार कर रहा ऐसे अस्पतालों की सूची

राजधानी में कोरोना संक्रमित मरीजों का उपचार जल्द ही निजी अस्पतालों में भी हो सकेगा। सरकार इन अस्पतालों में भर्ती होने वाले मरीजों को उपचार उपलब्ध कराएगी।

दिल्ली में कोरोना वायरस के मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए उपराज्यपाल अनिल बैजल ने स्वास्थ्य विभाग को ऐसे निजी अस्पतालों की पहचान करने का निर्देश दिया है, जिन्हें कोरोना के मरीजों के इलाज के लिए सरकार द्वारा नियंत्रण में लिया जा सकता है। स्वास्थ्य विभाग ने ऐसे अस्पतालों की सूची तैयार करनी शुरू कर दी है।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार सरकार के पास सीमित संसाधन हैं। इसलिए कोरोना के बढ़ते मामलों से निपटने के लिए निजी अस्पतालों के आइसीयू वार्ड, बिस्तरों और अन्य चीजों का इस्तेमाल किया जा सकता है। बताया जाता है कि सरकारी अस्पतालों में अन्य बीमारियों के मरीजों के इलाज को भी रोका नहीं जा सकता।

अनिल बैजल। (फाइल)

सरकार की लापरवाही से दिल्ली में बढ़े कोरोना के मामले : कांग्रेस

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अनिल चौधरी ने आरोप लगाया है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल दिल्ली में कोरोना वायरस के बढ़ते प्रभाव को लेकर गंभीर नजर नहीं आ रहे हैं। सरकार की लापरवाही से दिल्ली में कोरोनो के मामले में इतनी वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि जहां एक से चार अप्रैल के बीच पूरे देश में कोरोना पॉजिटिव के मामलों में 78.48 फीसद वृद्धि हुई है वही दिल्ली में यह वृद्धि 192.76 फीसद रही है। यानी दिल्ली में देश कि तुलना में दोगुनी से भी अधिक वृद्धि हुई है। एक अप्रैल को देश में कोरोना पॉजिटिव के 2059 मामले थे वहीं चार अप्रैल को यह बढ़कर 3675 हो गए। इसी प्रकार दिल्ली में जहां एक अप्रैल को 152 केस थे जो चार अप्रैल को बढ़कर 445 हो गए।

चौधरी ने कहा कि दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री ने अब कहा है कि 2 -3 दिनों के लिए ही पीपीई किट का स्टॉक बचा है, इससे पहले दिल्ली सरकार दावा कर रही थी कि 100, 500 या 1000 पीड़ित भी रोजाना आते हैं तो उनके इलाज की पूरी तैयारी है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार की वेबसाइट पर उपलब्ध आंकड़ों से यह पता चलता है कि दिल्ली सरकार के पास दो करोड़ की आबादी के लिए केवल 243 वेंटिलेटर्स, 3261 पीपीई (पर्सनल प्रोटेक्शन इक्विपमेंट) हैं जबकि पिछले कुछ दिनों में कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी है।

रोजी लॉक पर डाउन न होने दी खाद्यान्न आपूर्ति

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन ने मुख्य रूप से गरीबों को प्रभावित किया है। जिन लोगों के पास रोजगार, पैसा और आश्रय नहीं है, उनके लिए दिल्ली सरकार ने विभिन्न स्थानों पर भोजन केंद्र खोल कर मुफ्त खाना मुहैया कराने की व्यवस्था की है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में शनिवार को करीब 6.5 लाख लोगों को दोपहर और रात का भोजन उपलब्ध कराया गया। दिल्ली सरकार ने करीब 1592 केंद्रों पर 6 लाख 48 हजार 469 लोगों को दोपहर और 6 लाख 50 हजार 667 लोगों को रात में भोजन दिया। इसके अलावा सरकार को दिल्ली के विभिन्न इलाकों से भोजन के लिए फोन कॉल्स और अनुरोध भी आ रहे हैं। दिल्ली के विभिन्न स्थानों से भोजन के लिए 1040 कॉल और अनुरोध आए। उन सभी लोगों को दिल्ली सरकार ने भोजन उपलब्ध कराया। दिल्ली सरकार एक अप्रैल से प्रतिदिन छह लाख से अधिक लोगों को लंच और डिनर उपलब्ध करा रही है। सरकार के पास प्रतिदिन 10 लाख लोगों को लंच और डिनर कराने की क्षमता है।

मुख्यमंत्री ने 31 मार्च को घोषणा की थी कि दिल्ली सरकार एक अप्रैल से प्रतिदिन 10 से 12 लाख लोगों को खाना खिलाने की व्यवस्था कर रही है। इसके लिए सरकार करीब 28 सौ केंद्र बना रही है और प्रत्येक केंद्र पर प्रतिदिन पांच-पांच सौ लोगों के खाने की क्षमता है। प्रतिदिन करीब 25 सौ स्कूलों और ढाई सौ रैन बसेरों में पांच-पांच सौ लोगों को भोजन वितरित करना शुरू कर दिया है।

केजरीवाल का लक्ष्य, दिल्ली में कोई भी भूखा न रहे : मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का लक्ष्य है कि दिल्ली में कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में एक सप्ताह पहले प्रतिदिन 3.5 से 4 लाख लोगों को भोजन दिया जा रहा था। लेकिन खाना खाने वालों की संख्या बढ़ने के कारण सरकार ने कई अन्य जगहों पर भोजन केंद्र खोलने का फैसला किया। लिहाजा अब भोजन केंद्रों पर 10-12 लाख लोगों को प्रतिदिन खाने खिलाने की व्यवस्था कर दी गई है। केजरीवाल का कहना है कि अब व्यवस्था अधिक है, जबकि खाना खाने वाले लोग कम पहुंच रहे हैं।

लोग ढूंढ़ रहे राशन कार्ड आवेदन की पर्चियां

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली के हजारों लोग उन पर्चियों को ढूंढ़ रहे हैं जो उन्हें बीते वर्षों में राशन कार्ड बनवाने के लिए आवेदन के दौरान मिली थीं। अब उन्हें इसी पर्ची के आधार पर मुफ्त में राशन मिल सकेगा। दरअसल, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा बिना राशन कार्ड वालों को राशन दिए जाने की घोषणा करने से साढ़े छह लाख लोगों को भी बड़ी राहत मिलने जा रही है। ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने पिछले पांच साल में राशन कार्ड के लिए आवेदन तो किया था, लेकिन उनके राशन कार्ड नहीं बन पाए थे। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा है लॉकडाउन के चलते बहुत से लोग बेरोजगार हो गए हैं। उनका काम- धंधा ठप हो गया है। ऐसे में उनके सामने परिवार की जीविका का बड़ा संकट खड़ा हो गया है। उन्हें कई तरह की परेशानी हो रही है। तमाम लोग इस तरह की समस्या लेकर शिकायतें कर रहे थे। इसके बाद उन्होंने बारे में फैसला लिया है। गौरतलब दें कि दिल्ली में पिछले पांच साल से राशन कार्ड बनाए जाने का काम बंद है। इस बारे में दिल्ली के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री इमरान हुसैन पिछले कई बार केंद्र सरकार को पत्र लिख चुके हैं।

महामारी पर वार

राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के बीच रविवार को दिल्ली स्थित लालकिला के सामने दवाओं के छिड़काव का दृश्य। कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को देखते हुए सैनिटाइजेशन कार्य में तीव्रता आ गई है। प्रेट्र

तय मूल्य से ज्यादा रकम वसूलने वाले दुकानदारों पर लगा जुर्माना

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

पुरानी दिल्ली क्षेत्र में दुकानदारों द्वारा आवश्यक वस्तुओं की तय मूल्य से अधिक कीमत वसूलने की शिकायतों पर दिल्ली सरकार ने सख्त कदम उठाया है। इसी के मद्देनजर खाद्य व नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामलों के मंत्री इमरान हुसैन के निर्देश पर लीगल मेट्रोलॉजी विभाग की जांच टीमों ने पुरानी दिल्ली क्षेत्र में 10 किराना दुकानों पर औचक निरीक्षण किया है। इस दौरान एस एन मार्केट, लाहौरी गेट के कुछ दुकानदारों द्वारा पैकेज्ड कमोडिटी रूल्स (पीसीआर) के उल्लंघन करने के मामले सामने आए हैं। कई दुकानों में पैक्ड वस्तुओं पर मूल्य अंकित नहीं था। वहीं, कुछ वस्तुओं पर मात्रा, निर्माण और प्री-पैकिंग का महीना और वर्ष, कस्टमर केयर नंबर की छपाई भी नहीं थी। इस दौरान छह मामले दर्ज किए गए और उनसे एक लाख रुपये से अधिक की राशि वसूली गई।

यह है नियम

पैकेज्ड कमोडिटी रूल्स के अंतर्गत पैकेट वाली वस्तुओं पर निर्माता, पैकर व आयातक का नाम और पता, उत्पाद का सामान्य नाम, शुद्ध मात्रा, निर्माण और प्री-पैकिंग का महीना और वर्ष, एमआरपी (सभी करों को मिलाकर) होना चाहिए। उस व्यक्ति का नाम, पता, टेलीफोन नंबर भी होने चाहिए जिसे उपभोक्ता शिकायत के मामले में संपर्क कर सके।

ज्यादा कीमत वसूलें तो दें सूचना

खाद्य मंत्री ने विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को दैनिक आधार पर फील्ड स्टाफ के कामकाज की समीक्षा करने का निर्देश दिया है। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिया कि वे इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी कीमत पर दुकानदार अनुचित लाभ न उठा पाएं। मंत्री ने दिल्ली के नागरिकों से भी अपील की कि वे पैक्ड तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं पर ज्यादा कीमत वसूलने की सूचना लीगल मेट्रोलॉजी विभाग को दें।

सीबीएसई ने स्कूलों को दिया निर्देश, ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से पढ़ाएं

रीतिका मिश्रा, नई दिल्ली

कोरोना के लेकर पूरे देश में लॉकडाउन है। वहीं, देशभर में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की परीक्षाएं भी टाल दी गई हैं। इससे पहले भी उत्तर-पूर्वी दिल्ली में सांप्रदायिक दंगे के कारण बोर्ड की परीक्षाओं को टालना पड़ा था। अब यह सवाल खड़ा हो रहा है कि अकादमिक कैलेंडर पर इसका क्या असर पड़ेगा? इस बाबत सीबीएसई के सचिव अनुराग त्रिपाठी का कहना है कि महामारी विश्वस्तर पर फैली हुई है। इसके चलते सीबीएसई की बोर्ड परीक्षाएं स्थगित हुई ही हैं, जो परीक्षाएं हो गई थीं उनके मूल्यांकन का कार्य भी रोक दिया गया है। लॉकडाउन तक कुछ नहीं हो सकता।

अनुराग त्रिपाठी ने कहा कि छात्रों की पढ़ाई में किसी तरह की परेशानी न आए, इसके लिए सीबीएसई ने दिशानिर्देश जारी किए हैं। बोर्ड से संबद्ध स्कूलों से कहा गया है कि वे ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से पढ़ाएं। प्रोजेक्ट एक्टिविटीज, असाइनमेंट भी दें, ताकि बच्चे घर पर बोरियत महसूस न करें और ऑनलाइन शिक्षा में रुचि लें। जिन स्कूलों में ऑनलाइन कक्षाओं के लिए तकनीक की समस्या है, उन्हें वाट्सएप, ई-मेल का इस्तेमाल करने को कहा गया है। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए सबसे अच्छा प्लेटफॉर्म दीक्षा एप है। इसमें काफी संख्या में सामग्री उपलब्ध है। स्वयं पोर्टल पर भी पाठ्यक्रम से जुड़ी सामग्री उपलब्ध है, जिसमें वीडियो, लेक्चर, प्रोजेक्ट, एक्टिविटीज हैं। इसी तरह से स्वयं प्रभा चैनल है, जिसके जरिये पढ़ाया जाता है और पाठ्यक्रम से संबंधित जानकारी दी जाती है।

उन्होंने कहा कि मौजूदा हालात में परिणाम घोषित करने में थोड़ा समय लगेगा और ये सरकार के आदेश पर ही निर्भर करेगा। लॉकडाउन को लेकर सरकार कोई नया निर्णय लेती है और बोर्ड को परीक्षाओं के संचालन को लेकर हरी झंडी देती है तो दस से पंद्रह दिनों में इसे पूरा कर लिया जाएगा। उसके बाद मूल्यांकन और फिर परिणाम घोषित कर दिया जाएगा।

सीबीएसइ सचिव अनुराग त्रिपाठी। सौजन्य-स्वयं

उन्होंने बताया कि केवल मुख्य विषयों की परीक्षा ही आयोजित की जाएगी और साथ-साथ मूल्यांकन भी शुरू कर दिया जाएगा। दिल्ली के उत्तर-पूर्वी जिले में कक्षा 10वीं की छह विषयों की और कक्षा 12वीं की 11 विषयों की परीक्षाएं स्थगित हुई थीं, वो परीक्षाएं दोबारा होंगी और पूरे देश की कक्षा 12वीं के केवल 12 मुख्य विषयों की परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी। इस प्रकार केवल 29 ऐसे मुख्य विषय हैं, जिनकी परीक्षाएं होनी हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना के कारण बोर्ड परीक्षा टाल दी गई हैं। लॉकडाउन हटने के बाद जब स्कूल खुलेंगे तो सीबीएसई इसका आकलन करेगी। अभी सिलेबस कम होगा या सत्र को घटाया जाएगा, इस बारे में अभी कुछ भी कहना संभव नहीं होगा।

राजधानी में पारा 34 डिग्री सेल्सियस पार

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : पश्चिमी विक्षोभ के कारण बार-बार मौसम में आते रहे उतार-चढ़ाव के बीच अब दिल्ली में गर्मी जोर पकड़ रही है। रविवार को अधिकतम पारा 34 डिग्री सेल्सियस पार कर गया। इस मौसम में पहली बार इतना अधिक पारा रहा। हालांकि सोमवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहने की संभावना है, लेकिन इससे तापमान में गिरावट आने के कोई आसार नहीं हैं।

दिल्ली का अधिकतम पारा रविवार को सामान्य स्तर पर 33.6 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम पारा सामान्य से दो डिग्री कम 16.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हवा में नमी का स्तर 38 से 82 फीसद रहा। आया नगर 34.6 और पालम 34.4 डिग्री सेल्सियस के साथ सबसे गर्म रहा।

मौसम विभाग के मुताबिक सोमवार को आंशिक तौर पर बादल छाए रहेंगे। गर्जन वाले बादल बनने की भी संभावना है लेकिन बारिश के कोई आसार नहीं हैं। गर्मी ऐसे ही बनी रहेगी। अधिकतम पारा 34 और न्यूनतम पारा 18 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं। उधर स्काइमेट वेदर के मुख्य मौसम विज्ञानी महेश पलावत ने बताया कि तापमान और गर्मी में अब लगातार इजाफा होगा और 20 अप्रैल तक यह 40 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाएगा।

रविवार को एक बार फिर बढ़ा दिल्ली-एनसीआर का प्रदूषण स्तर

लॉकडाउन के दौरान भी लोग अलग-अलग कारणों से घर से बाहर निकलने से बाज नहीं रहे हैं, इसीलिए सड़कों पर निजी वाहन दौड़ते नजर आने लगे हैं। शायद इसीलिए रविवार को दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का स्तर एक बार फिर बढ़ गया। अभी तक एयर इंडेक्स 100 से नीचे अच्छी श्रेणी में चल रहा था जबकि रविवार को गुरुग्राम और नोएडा को छोड़कर सभी जगह यह 100 से ऊपर यानी सामान्य श्रेणी में पहुंच गया।

आए आगे

संघ के आनुषांगिक संगठनों के तीन लाख से अधिक स्वयंसेवक सेवा में जुटे, सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल कर रहे हैं समन्वय

यहां सेवा में न हिंदू न मुसलमान, सबसे बड़ा राहत अभियान

नेमिष हेमंत, नई दिल्ली

विश्व के सबसे बड़े सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को धर्म की सरहदों में बांधने की कोशिशें होती हैं। लेकिन वैश्विक महामारी कोरोना से निर्णायक जंग के बीच अब तक का अपना सबसे बड़ा अभियान चलाते संघ के सेवा अभियान में धर्म का कोई स्थान नहीं है। लॉकडाउन से प्रभावित हुए लोगों को सहायता और जागरूकता पहुंचाते इस संगठन के लिए न तो कोई हिंदू है और न कोई मुसलमान। मानव मात्र की सेवा के संकल्प में हर धर्म, जाति, आयु और वर्ग तक संघ और संघ के 40 से अधिक आनुषांगिक संगठन तथा अन्य वैचारिक संगठन तक युद्ध स्तर पर पूरे देश में मदद पहुंचाने में जुटे हैं।

कच्चा-पका भोजन के साथ दूध, रसोई गैस, दिनचर्या के जरूरी सामान, दवाइयां, चिकित्सकीय सहायता पहुंचाने के साथ ही लोगों को रोजगार से जोड़ा जा रहा है। कश्मीर के दुरुह गांव हो या राजस्थान की रेत में बसे गांव, दिल्ली की सघन बस्तियों से लेकर केरल के समुद्री इलाके तक में संघ के स्वयंसेवक बिना किसी स्वार्थ के दिन-रात सेवा दे रहे हैं। जरूरत पड़ने पर अपना रक्त भी दूसरों के जीवन के लिए दान करने में तत्पर हैं। कोरोना से बचाव के लिए मास्क और सैनिटाइजर भी दिया जा रहा है। विद्या भारती ने अपने स्कूल आइसोलेशन सेंटर में तब्दील करने की पेशकश की है।

कांति नगर के शांति मोहल्ला में मुस्लिम को राहत सामग्री देते सेवा भारती के स्वयंसेवक। सौ. सेवा भारती

कॉलोनियों, कच्ची बस्ती, सड़क किनारे, बाजार और फैक्ट्रियों में रहने वाले जरूरतमंद की हर कड़ी को इसमें समाहित किया गया है। राज्य सरकारों से लेकर जिला प्रशासन और पुलिस के साथ हाथ से हाथ मिलाकर स्वयंसेवक बढ़ रहे हैं। कोरोना के खिलाफ जंग के योद्धा डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ के साथ पुलिस, अखबार बांटने वाले और किराना दुकानों पर काम करने वाले लोगों का भी खयाल रखा जा रहा है।

इसमें संघ के आनुषांगिक संगठन सेवा भारती के साथ ही भाजपा, विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्र सेविका समिति, विद्यार्थी परिषद, विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, भारतीय मजदूर संघ व किसान संघ समेत कमोबेश सभी संगठन अलग-अलग या मिलकर अभियान चला रहे हैं। इनके बीच समन्वय का काम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल देख रहे हैं।

देश के सबसे बड़ी आपदा में मदद पहुंचाने में बेसहारा पशु और बेजुबान पक्षियों का भी खयाल रखा जा रहा है। पशुओं को चारा और पक्षियों को दाना दिया जा रहा है। कमोबेश हर राज्य में सेवा भारती, विद्यार्थी परिषद और विहिप का हेल्पलाइन नंबर चल रहा है, जिस पर मदद के लिए रोजाना हजारों फोन आ रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ऋषिपाल डडवाल ने बताया कि वर्तमान में देश में तीन लाख से अधिक स्वयंसेवक सेवा में जुटे हुए हैं। इनमें सेवा भारती से जुड़े 12,500 एनजीओ भी कार्य कर रहे हैं।

चिकित्सकों की टीमें काम कर रही हैं। एंबुलेंस दौड़ रही हैं। संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख अनिल कुमार के मुताबिक लेह लद्दाख से लेकर जम्मू-कश्मीर तक के गांव-शहर में हम पहुंच रहे हैं। इसी तरह केरल के हर इलाके में स्वयंसेवक दिन-रात लगे हुए हैं। मुस्लिम बाहुल दिल्ली के ओखला व जामिया जैसे क्षेत्रों में राशन व जरूरी सामान पहुंचाया जा रहा है। इसी तरह सीएए के खिलाफ हुए दंगा क्षेत्र उत्तर-पूर्वी दिल्ली के खजूरी खास, चांद बाग, करावल नगर शिव विहार, मुस्तफाबाद व जाफराबाद में भी संघ के स्वयंसेवक राहत सामग्री पहुंचा रहे हैं।

20 मार्च और 15 अप्रैल के बीच की अवधि के लिए जारी ई-वे बिल की वैधता को सरकार ने 30 अप्रैल तक के लिए बढ़ा दिया है। केंद्रीय परोक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआइसी) ने यह जानकारी दी है।

मोदी ने सोनिया समेत प्रमुख विपक्षी नेताओं से कोरोना संकट पर की चर्चा

परामर्श ▶ मनमोहन सिंह, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव को भी किया फोन

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी व प्रतिभा पाटिल से भी की बात

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना महामारी से मुकाबले के मुद्दे पर प्रमुख सियासी शख्सियतों के साथ देश के प्रमुख विपक्षी नेताओं से बातचीत की। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और प्रतिभा पाटिल के साथ पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और एचडी देवगौड़ा से संवाद किया। वहीं मोदी ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से भी फोन पर कोरोना महामारी और लॉकडाउन की चुनौतियों पर बातचीत की। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव समेत कई दूसरे विपक्षी नेताओं से भी प्रधानमंत्री की इस मसले पर बात हुई।

प्रधानमंत्री मोदी की ओर से प्रमुख विपक्षी नेताओं को फोन कर कोरोना संकट के मुद्दे पर चर्चा किए जाने की सरकारी

नरेंद्र मोदी फाइल फोटो

सूत्रों ने जानकारी दी। हालांकि, बातचीत का ब्योरा नहीं दिया गया। कोरोना महामारी और लॉकडाउन से पैदा हुए हालात को लेकर विपक्षी पार्टियां पिछले कई दिनों से उनसे सलाह-मशविरा नहीं किए जाने को लेकर सवाल उठा रही थीं।

ऐसे में पीएम का सोनिया गांधी समेत दूसरे विपक्षी नेताओं को सीधे फोन करना इस शिकायत को दूर करने की दिशा में उठाया गया कदम माना जा रहा है। पीएम मोदी की यह पहल कोरोना से जंग में देश की एकजुटता के साथ विपक्षी नेताओं से संवाद की दूरी पाटने के प्रयास के तौर पर देखी जा रही है। वैसे प्रधानमंत्री आठ अप्रैल को भी सभी पार्टियों के संसदीय दल के नेताओं के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये चर्चा करेंगे।

प्रधानमंत्री ने प्रणब मुखर्जी और प्रतिभा पाटिल से फोन पर चर्चा के बाद मनमोहन सिंह और देवगौड़ा से बात की। विपक्षी नेताओं में सोनिया गांधी के अलावा मोदी ने ममता बनर्जी, अखिलेश यादव, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव, द्रमुक प्रमुख एमके स्टालिन को भी फोन कर कोरोना की चुनौती पर चर्चा की। माना जा रहा है कि पीएम ने लॉकडाउन की मौजूदा स्थिति और इसके बाद की परिस्थितियों को लेकर भी इन नेताओं से मशविरा किया। विपक्षी नेताओं के अलावा एनडीए के सहयोगी अकाली दल के प्रमुख प्रकाश सिंह बादल से भी पीएम ने मौजूदा हालत पर चर्चा की।

पीएम की सर्वदलीय बैठक में हिस्सा नहीं लेगी तृणमूल

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : कोरोना संकट को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 8 अप्रैल को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में तृणमूल कांग्रेस के सांसद हिस्सा नहीं लेंगे। तृणमूल का कहना है कि कोरोना को लेकर पार्टी के सभी सांसद इस वक्त अपने-अपने क्षेत्र में व्यस्त हैं, ऐसे में बैठक में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। लोकसभा में तृणमूल के नेता और वरिष्ठ सांसद सुदीप बंदोपाध्याय भी कह चुके हैं कि उनकी पार्टी के सांसद सर्वदलीय बैठक में हिस्सा नहीं लेंगे। इसे लेकर बंगाल में एक बार फिर सियासत गरमा गई है। बंगाल प्रदेश भाजपा के नेताओं ने इसे लेकर तृणमूल की तीखी आलोचना की है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व सांसद दिलीप घोष ने कहा कि कोरोना महामारी को लेकर जब पीएम सभी दलों के साथ चर्चा करना चाहते हैं, ऐसे समय में भी तृणमूल राजनीति से बाज नहीं आ रही है।

कैबिनेट सचिव ने जिला स्तर पर कोरोना तैयारियों का लिया जायजा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन के कारण भले ही सरकार को कोरोना वायरस के फैलने की रफ्तार धीमी करने में सफलता मिल रही हो, लेकिन वह इससे निपटने की तैयारियों में ढील देना नहीं चाहती है। इस सिलसिले में कैबिनेट सचिव ने सीधे जिला स्तर के अधिकारियों के साथ संवाद कायम किया। उन्होंने वायरस फैलने की स्थिति में कंटेनमेंट एरिया और बफर जोन बनाने के साथ-साथ मरीजों की संख्या बढ़ने पर उनके इलाज के लिए विशेष अस्पतालों के निर्माण और आइसोलेशन की तैयारियों की समीक्षा की।

कोरोना के खिलाफ लड़ाई को जमीनी स्तर पर धार देने के लिए कैबिनेट सचिव ने पूरे देश के सभी जिलों के डीएम, एसपी, सीएमओ और सतर्कता अधिकारियों के साथ सीधा संवाद किया। वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये जिला स्तर पर तैयारियों की समीक्षा के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी, राज्य और जिला सतर्कता अधिकारी, राज्यों के स्वास्थ्य सचिव और मुख्य सचिव भी मौजूद थे।

देश के सभी जिलों के डीएम, एसपी, सीएमओ के साथ किया सीधा संवाद

कैबिनेट सचिव ने जिला स्तर के अधिकारियों को अपने-अपने यहां चिकित्सा उपकरण या दवाइयां बनाने वाली फार्मा यूनिट से सुचारू रूप से चलने का पुख्ता बंदोबस्त करने का निर्देश दिया। उन्होंने बताया कि देश में कहीं भी कोरोना का मरीज बढ़ने की स्थिति में उसे जिला स्तर पर रोकने के लिए कंटेनमेंट का प्लान जारी किया है। इस प्लान में कंटेनमेंट एरिया के साथ-साथ बफर जोन बनाने के लिए कहा गया है। जिलाधिकारियों ने विस्तार से बताया कि वे कंटेनमेंट एरिया और बफर जोन बनाने के लिए क्या-क्या कर रहे हैं। किस तरह इन इलाकों में रहने वाले परिवारों की पहचान के लिए सर्वे किया जा रहा है और बुजुर्गों की पहचान कर उन्हें कोरोना से बचाने के लिए किस तरह की रणनीति बनाई जा रही है।

कैबिनेट सचिव ने पूरे देश में कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में एकरूपता लाने और एक-दूसरे जिले के बेहतर अनुभवों को साझा कर उन पर अमल करने का निर्देश दिया। इस सिलसिले में नोएडा, आगरा, भीलवाड़ा, पूर्वी दिल्ली के जिलाधिकारियों ने अपने अनुभवों को साझा किया। इन जिलों में शुरू में कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या तेजी से सामने आई थी, लेकिन उन्हें फैलने से रोकने में सफलता भी मिली।

वीडियो कांफ्रेंसिंग के दौरान सभी इससे सहमत थे कि कोरोना को कठोरता के साथ शुरू में ही कुचलना जरूरी है, वरना जरा सी ढिलाई भारी पड़ सकती है। जिलाधिकारियों ने कोरोना के लिए विशेष अस्पताल बनाने से लेकर संदिग्ध मरीजों को आइसोलेशन में रखने के लिए होटल, लॉज, गेस्ट हाउस को तैयार किए जाने की जानकारी दी। कैबिनेट सचिव ने कहा कि देश में 274 जिलों में कोरोना के मरीज सामने आ चुके हैं। उन्हें बढ़ने से रोकने की जिम्मेदारी पूरी तरह से जिला स्तर के अधिकारियों की है। केंद्र व राज्य सरकार उन्हें हरसंभव मदद करने को तैयार है। उन्होंने सभी जिलों में कोरोना से निपटने के लिए एक इमरजेंसी प्लान बनाने को कहा।

वायरस से निपटने को दो महीने में 30 हजार वेंटीलेटर बनाएगा बीईएल

- रक्षा मंत्रालय के उपक्रमों ने कोरोना से निपटने में झोंकी पूरी ताकत
- ओएफबी बना रहा प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट कवरआल और मास्क

प्रतीकात्मक फोटो

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना महामारी को हराने के लिए बेहद अहम माने जा रहे वेंटीलेटर की देश में कमी दूर करने के लिए रक्षा मंत्रालय से जुड़ी सरकारी कंपनियों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल)ने डीआरडीओ के डिजाइन किए वेंटीलेटर का देश में ही बड़ी संख्या में निर्माण शुरू कर दिया है। वेंटीलेटर बनाने की इस बड़ी पहल के आगाज के साथ ही बीईएल अगले दो महीने में ही 30,000 वेंटीलेटर बनाकर उसे स्वास्थ्य मंत्रालय को सौंप देगा।

कोरोना महामारी से प्रभावित मरीजों की संख्या में इजाफे की आशंका को देखते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय ने रक्षा मंत्रालय से जुड़े सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) से वेंटीलेटर समेत कई दूसरे चिकित्सा व बचाव उपकरणों का निर्माण करने को कहा है। आइसीयू में कोरोना प्रभावित मरीजों की जीवन रक्षा के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय बड़ी संख्या में वेंटीलेटर का प्रबंध कर रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने इसीलिए बीईएल को यह जिम्मा दिया है जिसने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित वेंटीलेटर का निर्माण अपनी इकाईयों में शुरू कर दिया है।

डीआरडीओ के डिजाइन किए इस वेंटीलेटर में मैसूर की मेसर्स एसकैनेरी ने कुछ सुधार किया था जिसका बीईएल के साथ गठबंधन है। बीईएल जहां नए वेंटीलेटर का निर्माण कर रहा है, वहीं आर्डिनेंस फैक्ट्री, मेडक कई अस्पतालों के खराब वेंटीलेटरों की मरम्मत कर उन्हें फिर से संचालन योग्य बना रही है।

कोरोना के खिलाफ लड़ाई में अग्रिम मोर्चे पर तैनात चिकित्साकर्मियों और तमाम आवश्यक सेवाओं के लोगों के लिए प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट कवर आल पोशाक और मास्क की भी भारी जरूरत है। इसी को देखते हुए कानपुर, शाहजहांपुर, फिरोजाबाद और चेन्नई की आर्डिनेंस फैक्ट्रियां कवर आल पोशाक और मास्क का विकास करने में जुटी हुई हैं। इन कंपनियों ने बेहद कम समय में ही इनका निर्माण करने के लिए स्पेशल हिट स्केलिंग मशीनों की भी व्यवस्था की है। ग्वालियर स्थित डीआरडीओ के प्रतिष्ठान ने कवरआल का डिजाइन परीक्षण कर इनके निर्माण का रास्ता साफ कर दिया है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार जल्द ही आर्डिनेंस फैक्ट्री बोर्ड (ओएफबी) की कई इकाइयां पांच से छह हजार पीस कवरआल पोशाक और मास्क का उत्पादन शुरू कर देंगी।

कोरोना संक्रमण का फैलाव रोकने के लिए सैनिटाइजर की भारी जरूरत को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों के अनुरूप ओएफबी की इकाइयों ने बड़ी मात्रा में इनका भी उत्पादन शुरू कर दिया है। केंद्र सरकार ने एचएलएल लाइफकेयर को सैनिटाइजरों की केंद्रीय खरीद के लिए नोडल एजेंसी बनाया है।

ओएफबी की इकाइयों को तत्काल 13,000 लीटर सैनिटाइजर देने को कहा गया है और वे रोजाना तीन हजार लीटर सैनिटाइजर बना रही हैं। कोरोना वायरस के खिलाफ सीधी जंग में ओएफबी ने देश भर के अपने 10 अस्पतालों को भी विशेष रूप से तैयार करते हुए 280 आइसोलेशन बेड की व्यवस्था की है।

स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा के लिए प्रोटोकाल तय करने की मांग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : केरल की संस्था यूनाइटेड नर्सेस एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर कोरोना संक्रमण के इलाज में लगे स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा के लिए केंद्र सरकार को नेशनल कोविड-19 मैनेजमेंट प्रोटोकाल तय करने का निर्देश दिये जाने की मांग की है।

केरल की इस संस्था की ओर से दाखिल की गई याचिका में यह भी कहा गया है कि केंद्र सरकार को निर्देश दिया जाए कि वह सुनिश्चित करे कि कोरोना आइसोलेशन वार्ड में काम करने वाले प्रत्येक स्वास्थ्यकर्मी को प्रोटेक्शन किट मिले। सभी स्वास्थ्यकर्मियों को संक्रमण की रोकथाम और नियंत्रण का उचित प्रशिक्षण दिया जाए। इसके साथ ही यह भी मांग की गई है कि उन्हें पर्सनल प्रोटेक्शन इक्यूपमेंट (पीपीई) के निजी प्रयोग और निस्तारण का प्रशिक्षण दिया जाए। स्वास्थ्यकर्मियों को स्तरीय पोषक अहार मुहैया कराया जाए। इसके साथ ही कोरोना वार्ड में काम कर रहे सभी स्वास्थ्यकर्मियों, डाक्टर और नर्सों को अस्पताल के नजदीक रहने की व्यवस्था की जाए और उन्हें आने जाने का सुविधाजनक साधन मुहैया भी कराया जाए।

इसके साथ ही याचिका में मांग की गई है कि कोरोना संदिग्ध के अस्पताल में प्रवेश से पहले ही जांच की जाए और उसे मेडिकल सुविधा मुहैया कराई जाए। संदिग्ध मामलों में जल्द टेस्टिंग सुनिश्चित की जाए। याचिका में और भी कई मांग की गई हैं।

निशंक बोले, स्कूलों में पढ़ाई को लेकर 14 के बाद लिया जाएगा निर्णय

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने रविवार को कहा कि देश में कोरोना वायरस संकट पर स्थिति की 14 अप्रैल को समीक्षा करने के बाद सरकार स्कूल, कॉलेज फिर से खोलने पर कोई निर्णय लेगी। 'निशंक' ने प्रेट्र से एक साक्षात्कार में कहा कि छात्रों और अध्यापकों की सुरक्षा सरकार के लिए सबसे ऊपर है। उनका मंत्रालय यह सुनिश्चित करने में लगा है कि यदि स्कूल, कॉलेज को 14 अप्रैल के बाद भी बंद रखने की जरूरत पड़ी, तो छात्रों को पढ़ाई-लिखाई का कोई नुकसान नहीं हो। देश में 21 दिनों के लिए लागू लॉकडाउन समाप्त होने पर उनके मंत्रालय की योजना के बारे में पूछे जाने पर 'निशंक' ने कहा कि इस वक्त कोई फैसला लेना मुश्किल है। हम 14 अप्रैल को स्थिति की समीक्षा करेंगे। परिस्थितियों के मुताबिक इस बारे में फैसला लिया जाएगा कि स्कूल, कॉलेज फिर से खोले जा सकते हैं या उन्हें कुछ और समय के लिए बंद रखना होगा। मंत्री ने कहा कि देश में 34 करोड़ छात्र हैं, जो अमेरिका की आबादी से अधिक है। वे हमारी सबसे बड़ी संपत्ति हैं। छात्रों एवं अध्यापकों की सुरक्षा सरकार के लिए सर्वोपरि है।

उल्लेखनीय है कि 21 दिनों का राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन 14 अप्रैल को समाप्त होने वाला है। सरकार से संकेत मिला है कि लॉकडाउन को आगे नहीं बढ़ाया

रमेश पोखरियाल 'निशंक'। फाइल फोटो

जाएगा। हालांकि, स्कूल, कॉलेजों में कक्षाएं लॉकडाउन की घोषणा किए जाने से पहले से ही स्थगित हैं। मंत्री ने कहा कि फिलहाल, विभिन्न सरकारी प्लेटफॉर्मों का उपयोग करते हुए कक्षाएं ऑनलाइन संचालित की जा रही हैं। 'निशंक' ने कहा कि मैं लॉकडाउन के दौरान स्कूल, कॉलेज द्वारा अनुपालन की जा रही कार्य योजना की नियमित रूप से समीक्षा कर रहा हूं। स्थिति में सुधार आने पर और लॉकडाउन खत्म होने पर लंबित परीक्षाएं संचालित करने तथा (उत्तर पुस्तिकाओं का) मूल्यांकन करने के लिए पहले से ही एक योजना तैयार है।

सरकार ने इस सप्ताह की शुरुआत में घोषणा की थी कि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) केवल उन 29 विषयों में कक्षा 10 और 12 के लिए लंबित परीक्षाओं का आयोजन करेगा, जो उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए महत्वपूर्ण हैं। बोर्ड ने यह भी घोषणा की है कि वह कोरोना वायरस के कारण विदेश में लंबित कक्षा 10 और 12 की परीक्षाओं का आयोजन नहीं करेगा। कक्षा आठ तक के सभी छात्रों को पदोन्नत किया गया है। कक्षा 9 और 11 के छात्रों के लिए स्कूलों को आंतरिक मूल्यांकन में उनके प्रदर्शन के अनुसार ग्रेड देने के लिए कहा गया है।

छात्रों के लिए ऑनलाइन कक्षाएं शुरू करेगा केंद्रीय विद्यालय : केंद्रीय विद्यालय संगठन ने देशभर में अपने स्कूलों के लिए एक प्रोटोकॉल तैयार किया है। इसमें लॉकडाउन के कारण घरों में अटके छात्रों के लिए ऑनलाइन कक्षाएं शुरू करने और कार्यक्रम को लागू करने के लिए सभी प्रिंसिपलों के साथ एक्शन प्वाइंट साझा किया गया है। सभी केंद्रीय विद्यालयों को शिक्षकों, छात्रों और उनके माता-पिता के साथ संपर्क करने के लिए कहा गया है, ताकि ई-मेल, वाट्सएप और एसएमएस के माध्यम से छात्रों को अधिकतम लाभ सुनिश्चित किया जा सके।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि हमने सात अप्रैल से शुरू होने वाले स्वयं प्रभा पोर्टल से नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग के रिकॉर्ड किए गए और लाइव कार्यक्रमों के पाठों को भी साझा किया है। केंद्रीय विद्यालय ने लाइव सत्र के दौरान छात्रों के प्रश्नों का जवाब देने के लिए शिक्षकों को भी नामित किया है।

अदालतों में कामकाज कैसे हो आज तय करेगा सुप्रीम कोर्ट

फाइल फोटो

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना के कारण देश भर में किये गये लाकडाउन के दौरान अदालतों में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये किस तरह कामकाज हो इसके लिए सोमवार को सुप्रीम कोर्ट दिशा निर्देश तैयार करेगा। मुख्य न्यायाधीश एस ए बोवडे, जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ व जस्टिस एल. नागेश्वर राव की खंडपीठ स्वतः संज्ञान लिये गये इस मामले की दिन में साढ़े बारह बजे सुनवाई करेगी।

उल्लेखनीय है 25 मार्च से देश भर में लगाये गये लाकडाउन के कारण सुप्रीम कोर्ट बेहद अहम मामलों की सुनवाई वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये कर रहा है। इस दौरान जमानत संबंधी मामलों और पलायन करने वाले कामगारों के मामलों की भी वरीयता के आधार पर सुनवाई की गई। इससे पूर्व रविवार को दिन में सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष ने लाकडाउन के कारण अदालतों के कामकाज में हो रही कठिनाई पर मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखकर समाधान निकालने का आग्रह किया था।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ ऑनलाइन जागरूकता सत्र आयोजित कर रही सरकार

नई दिल्ली, प्रेट्र : महिला और बाल विकास मंत्रालय 21 दिन का लॉकडाउन खत्म होने के बाद गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ ऑनलाइन जागरूकता सत्र आयोजित कर रहा है।

सूत्रों ने बताया कि जागरूकता सत्रों के माध्यम से मंत्रालय दो लाख से अधिक आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं तक पहुंच गया है। महिला और बाल विकास मंत्रालय ने डिजिटल प्लेटफॉर्मों का उपयोग करके आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ जागरूकता सत्रों की एक शृंखला शुरू की है, ताकि लॉकडाउन खत्म होने के बाद भी उन्हें कोविड-19 से खुद को सुरक्षित रखने के उपायों की जानकारी रहे। सरकार इस मामले में स्वास्थ्य विशेषज्ञों के संपर्क में है।

- गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को सुरक्षित रखने की कवायद
- घरेलू हिंसा पीड़ितों की मदद करने के लिए गैर-सरकारी संगठनों का टास्क फोर्स बनाएगा महिला आयोग

प्रतीकात्मक फोटो

सूत्रों ने कहा कि 15 अप्रैल के बाद भी गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके, इस पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। रविवार को जागरूकता सत्र के दौरान महिलाओं और बच्चों से कोरोना वायरस का परिचय और निवारक उपायों के अलावा सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर चर्चा की गई।

टास्क फोर्स बनाने का किया फैसला

घरेलू हिंसा पीड़ितों की मदद करने के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग ने 15 से अधिक गैरसरकारी संगठनों का टास्क फोर्स बनाने का फैसला किया है। महिला आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने हाल ही में कहा था कि लॉकडाउन के बाद से उसे महिलाओं के खिलाफ विभिन्न अपराधों से संबंधित कुल 257 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें घरेलू हिंसा की 69 शिकायतें हैं।

खनन कानून में संशोधन, कई कामों को अब नहीं लेनी होगी हरित मंजूरी

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र सरकार ने खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम में संशोधन करते हुए कई कार्यों के लिए हरित मंजूरी लेने की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है। उदाहरण के तौर पर नदी में बाढ़ आने के बाद खेतों में जमा बालू या सिल्ट को हटाने के लिए अब पर्यावरणीय मंजूरी लेने की जरूरत नहीं होगी।

पर्यावरण मंत्रालय की अधिसूचना के अनुसार, 'कुम्हारों को अब बर्तन बनाने के लिए सामान्य मिट्टी की हाथ से खोदाई को पर्यावरणीय मंजूरी नहीं लेनी होगी। इसी प्रकार ईंट निर्माण के लिए हाथ से मिट्टी की खोदाई भी बिना हरित मंजूरी के की जा सकती है।

खनन कानून में संशोधन करते हुए मंत्रालय ने कहा, 'लोगों ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से सड़क निर्माण कार्य में मिट्टी की खोदाई के लिए पर्यावरणीय मंजूरी की अनिवार्यता को खत्म करने का आग्रह किया था। इसी प्रकार पारंपरिक कार्यों से जुड़े समुदायों ने भी मिट्टी की खोदाई के लिए नियम में छूट देने की मांग की थी।'

मंत्रालय के अनुसार, 'तालाब, डैम, जलाशय, नदी व तालाब से सिल्ट हटाने, ग्रामीण सड़क निर्माण व मनरेगा के तहत तालाब की खोदाई के लिए अब हरित मंजूरी की जरूरत नहीं होगी। इसी प्रकार पेयजल के लिए कुएं की खोदाई अथवा जिलाधिकारी या अन्य सक्षम प्राधिकारी के आदेश पर बाढ़ आदि से निपटने के लिए नहर, नाला, नाली या अन्य जलाशय के निर्माण के लिए पूर्व में हरित मंजूरी की जरूरत नहीं होगी। इसके अलावा राज्य सरकार ने जिन कार्यों को गैर खनन गतिविधि के तौर पर घोषित किया हो, उनके लिए भी पर्यावरणीय अनुमति की जरूरत नहीं है।'

सियासत

प्रदेश में लगातार बढ़ रही है संक्रमितों की संख्या, राजस्व उगाही भी है ठप, दीदी को है डर, महामारी से निपटने का कहीं श्रेय न ले जाए केंद्र सरकार

बंगाल में कोरोना से जंग में ममता की दोहरी परेशानी

जयकृष्ण वाजपेयी, कोलकाता

कोरोना वायरस से जंग में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए दोहरी परेशानी खड़ी हो गई है। पहली हर दिन कोरोना संक्रमित रोगियों की संख्या बढ़ रही है तो दूसरी राजस्व उगाही पूरी तरह से ठप है। ऐसे में लोकलुभावन और आगामी शहरी निकाय व विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखकर की गई बजटीय घोषणाओं का क्या होगा? वैसे भी बंगाल सरकार पर तीन लाख करोड़ से अधिक का कर्ज है। जिसके ब्याज और मूलधन के भुगतान में हर वर्ष सरकार को 50 हजार करोड़ चुकाने होते हैं। ऐसे में कोरोना ने ममता सरकार की निर्भरता केंद्र सरकार पर बढ़ा दी है। वहीं एक और डर शायद ममता को जरूर सता रहा होगा कि जिस तरह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कोरोना से निपटने के लिए एक के बाद एक कदम उठा रहे हैं, उसकी हर तरफ सराहना हो रही है। ऐसे में पूरा श्रेय भाजपा को न मिल जाए। इस महामारी में यदि उनकी पार्टी विरोध करती है तो उन्हें पता है कि स्थिति क्या हो सकती है।

ममता बनर्जी फाइल फोटो

इसीलिए ममता जो 15 मार्च तक यह कह रही थी कि भारत में कोरोना नहीं है, वह भी जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन जैसे निर्देशों को सहज ही स्वीकार कर रही हैं।

ममता भी पीछे नहीं : कोरोना के बीच ममता ने भी कई घोषणा कर डाली जिसमें स्वास्थ्य कर्मियों के लिए पांच लाख का बीमा प्रमुख था। इसके बाद जब केंद्र ने लॉकडाउन में 1.70 लाख करोड़ रुपये के पैकेज से लेकर स्वास्थ्य सेवा से जुड़े सभी लोगों को 50 लाख की बीमा की घोषणा कर दी तो ममता ने भी राज्य के आठ करोड़ लोगों को छह माह तक मुफ्त राशन देने का एलान कर दिया। साथ ही स्वास्थ्य कर्मियों, यानी डॉक्टर से लेकर नर्स व पुलिस वालों तक की बीमा की राशि पांच लाख से बढ़ाकर 10 लाख रुपये कर दिया। लॉकडाउन के बाद ममता ने राज्य के मजदूरों को लेकर 20 राज्यों को पत्र भी लिखा है। अब ममता ने 1 अप्रैल को पीएम को पत्र लिखकर 25 हजार करोड़ रुपये मांगे हैं। साथ ही केंद्र पर बंगाल का बकाया 36 हजार करोड़ रुपये भी मांगा है।

इस समय जो हालात है उसमें केंद्र की बातें मानने के अलावा ममता के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है क्योंकि, लॉकडाउन की वजह से राज्य सरकार को राजस्व नहीं मिल रहा है। ऐसे हालात है कि इस समय बाजार से भी ऋण नहीं ले पा रही हैं। इसीलिए वह बार-बार केंद्र पर दबाव बना कर नगदी लेना चाहती हैं। केंद्र सरकार भी मदद कर रही और शुक्रवार को ही कोरोना से लड़ने के लिए स्टेट डिजास्टर मैनेजमेंट फंड के तहत जो राशि जारी की, उसमें बंगाल को 505 करोड़ रुपये मिलेंगे। इससे पहले केंद्र ने बंगाल को पिछले साल चक्रवात और तूफान की वजह से हुए नुकसान की मदद के लिए मार्च के शुरू में करीब 1100 करोड़ रुपये दिए थे। ममता की परेशानी यह है कि शहरी निकाय चुनाव को लेकर वह कई लोकलुभावन घोषणाएं कर रखी हैं। यदि कोरोना का बवंडर थमता है और चुनाव होगा तो उन्हें यह भी दिखाना है कि केंद्र सरकार ने मदद नहीं की इसीलिए वह पत्र पर पत्र लिख रही हैं और दबे स्वर में विरोध कर रही हैं। हालांकि, जब से कोरोना का संकट आया है ममता का केंद्र सरकार पर हमला बंद है।

लग रहे हैं आंकड़े छुपाने के आरोप : ममता पर बंगाल में कोरोना संक्रमित और इससे बीमारी से मरने वालों की संख्या भी छुपाने का आरोप भी लगने लगा है। ममता ने कोरोना से निपटने के लिए एक विशेष टीम बनाई है। उन्होंने कुछ दिन पहले प्रेस वार्ता में बंगाल में कोरोना रोगियों की संख्या 53 बताई थी और मौत सात। इसके कुछ देर बाद ही ममता के निर्देश पर मुख्य सचिव ने इसे क्रमशः 34 और तीन बता दिया। तब्लीगी मरकज से बंगाल मे आए 225 लोगों को लेकर भी ममता पर तुष्टिकरण के आरोप लग रहे हैं।

कह के रहेंगे माधव जोशी

तब्लीगी जमात पर कोर्ट सख्त, मांगा कार्रवाई का ब्योरा

गुजरात हाई कोर्ट ने कहा ▶ वीजा नियमों का उल्लंघन कर दिल्ली के सम्मेलन में शामिल विदेशियों पर हो सख्ती, उठाएं उचित कदम

कर्नाटक हाई कोर्ट ने दिल्ली से लौटे जमातियों की पहचान के लिए कहा

माला दीक्षित, नई दिल्ली

इस्लामिक संगठन तब्लीगी जमात के सम्मेलन के कारण कोरोना संक्रमण के मामलों में अचानक बढ़ोतरी और कई राज्यों तक इसके प्रसार को देखते हुए दो उच्च न्यायालयों ने कड़ा रुख अपनाया है। गुजरात उच्च न्यायालय ने कहा कि वीजा नियमों का उल्लंघन कर दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के सम्मेलन में शामिल विदेशियों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। इसी तरह कर्नाटक हाई कोर्ट ने भी कहा कि जमात में शामिल होकर लौटे लोगों की पहचान कर जरूरी कदम उठाना राज्य सरकार की जिम्मेदारी है। कोर्ट ने राज्य सरकार से सात अप्रैल तक इस बारे में हुए कार्रवाई और आंकड़े तलब किए हैं।

गुजरात हाई कोर्ट और कर्नाटक हाई कोर्ट में गत शुक्रवार को तब्लीगी जमात के लोगों से कई राज्यों में कोरोना संक्रमण फैलने का मामला उठा। इसमें कोर्ट ने न सिर्फ सरकार के वकीलों से हालात की जानकारी ली, बल्कि नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कार्रवाई की ताकीद के साथ ऐसे लोगों की पहचान कर उचित कदम उठाने की भी नसीहत दी है। गुजरात हाई कोर्ट कोरोना के चलते लॉकडाउन में प्रवासी मजदूरों व अन्य लोगों को हो रही दिक्कतों और सरकार की ओर से दी जा रही सुविधाओं की स्थिति का स्वतः संज्ञान लेकर सुनवाई कर रहा है। इसमें एक पहलू धार्मिक समारोह में भीड़ एकत्र न होने देने का भी था। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से हाई कोर्ट में स्थिति रिपोर्ट पेश की गई, जिसमें टूरिस्ट वीजा पर भारत आए विदेशियों के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के धार्मिक समारोह में शामिल होने पर की गई कार्रवाई का ब्योरा दिया गया। केंद्र ने बताया कि ऐसे 960 विदेशियों का वीजा निरस्त कर उन्हें ब्लैक लिस्ट किया गया है। इन सबको वापस भेजा जाएगा। केंद्र के वकील ने कोर्ट से कहा कि तब्लीगी जमात के जलसे में शामिल होने वाले बाकी विदेशियों और देश के लोगों की पहचान होने की स्टेटस रिपोर्ट आने के बाद उसे राज्य सरकारों से साझा किया जाएगा।

सरकार पूरी ताकत से प्रशंसनीय काम कर रही : गुजरात हाई कोर्ट ने रिपोर्ट देखने के बाद कहा कि वीजा मैनुअल और फॉरेन एक्ट के उल्लंघन के मामले में हालांकि सरकार देर से जागी, लेकिन अब पूरी ताकत से प्रशंसनीय काम कर रही है। कोर्ट ने निर्देश दिया कि केंद्र विदेशी नागरिकों पर वीजा मैनुअल 2019 और फॉरेन एक्ट का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित करे। जो भी इसका उल्लंघन करे, उसके साथ कड़ाई से निपटा जाए। दिल्ली में तब्लीगी जमात के आयोजन में शामिल होकर गुजरात लौटे लोगों की पहचान और उन पर की गई कार्रवाई पर राज्य सरकार ने भी स्टेटस रिपोर्ट दी।

'लौटे जमातियों की पहचान करना राज्य का दायित्व'

कर्नाटक हाईकोर्ट में भी जमात के आयोजन में शामिल होकर कर्नाटक लौटे लोगों से कोरोना संक्रमण फैलने का मुद्दा उठा। कोर्ट ने कहा कि आयोजन में शामिल होने वालों की पहचान करना राज्य सरकार का दायित्व है। कोर्ट ने राज्य सरकार से कहा कि वह केंद्र और दिल्ली सरकार से जरूरी आंकड़े और ब्योरा लेकर तत्काल ऐसे लोगों की पहचान कर उन्हें क्वारंटाइन करें।

जमातियों को चेतावनी, जानकारी छिपाने पर चलेगा हत्या के प्रयास का मुकदमा

जेएनएन, नई दिल्ली

▶ **निजामुद्दीन से लौटे संक्रमित लोगों के कारण किसी की मौत होने पर दर्ज होगा हत्या का केस**

दिल्ली के निजामुद्दीन और विदेश से लौटे तब्लीगी जमातियों पर अब हिमाचल, उत्तराखंड और हरियाणा पुलिस ने सख्ती बरतने की तैयारी शुरू कर दी है। उत्तराखंड और हिमाचल के डीजीपी ने रविवार को चेतावनी जारी करते हुए कहा कि अब इन लोगों ने कोई तथ्य या सूचना छिपाई तो इन पर हत्या के प्रयास का केस दर्ज होगा। वहीं, निजामुद्दीन से लौटे संक्रमित लोगों के कारण कोरोना वायरस से अगर किसी की मौत हुई तो उनपर हत्या का मुकदमा दर्ज किया जाएगा। वहीं, हरियाणा सरकार ने भी तब्लीगी जमातियों के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया है। राज्य के गृह मंत्री अनिल विज ने कहा है कि छिपे हुए तब्लीगी जमाती खुद सरेंडर कर दें, अन्यथा उनके खिलाफ मुकदमे दर्ज किए जाएंगे।

हिमाचल में तब्लीगी जमात से जुड़े जिला प्रभारियों की भी जवाबदेही होगी। इन्होंने भी सूचना छिपाई तो मामला दर्ज होगा। पुलिस ने रविवार को प्रदेश में जमातियों के खिलाफ दो और मामले दर्ज किए हैं। अब ऐसे मामलों की संख्या बढ़कर 17 हो गई है। इनमें 85 लोग आरोपित हैं। अभी तक दिल्ली से लौटे जमातियों में से 277 लोगों को क्वारंटाइन पर रखा गया है।

उत्तराखंड में जमातियों को सोमवार तक दिया मौका : उत्तराखंड के पुलिस महानिदेशक अनिल कुमार रतूड़ी ने अभी तक छिपकर रहने वाले जमातियों को सोमवार शाम तक सामने आकर अपनी पहचान जाहिर करने का मौका दिया है। इसके बाद पुलिस द्वारा पकड़े गए जमातियों पर आपदा प्रबंधन कानून की धाराओं के साथ ही गैर इरादतन हत्या का मुकदमा भी चलाया जाएगा। यदि पुलिस द्वारा पकड़े गए जमाती के गांव में किसी की कोराना के कारण मृत्यु होती है तो फिर उस पर हत्या का मुकदमा भी दर्ज होगा। बता दें कि उत्तराखंड में बीते चार दिन में जितने भी कोरोना पॉजिटिव मामले सामने आए हैं वे सभी जमाती हैं। इसे देखते हुए रविवार को डीजीपी अनिल कुमार रतूड़ी ने सख्त चेतावनी जारी की है। जनता के नाम जारी वीडियो संदेश में डीजीपी ने कहा कि प्रदेश में दिल्ली से आई जमात के लोगों में कोराना संक्रमण के मामले मिले हैं।

मरकज में पुलिस व फॉरेंसिक टीम ने की छह घंटे जांच

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज को सैनिटाइज करने के बाद रविवार को पहली बार फॉरेंसिक टीम के साथ क्राइम ब्रांच अंदर गई। यहां फॉरेंसिक साइंस के एक्सपर्ट के साथ करीब छह घंटे तक चली जांच पड़ताल में मरकज मामले से जुड़े तमाम सुबूतों को एकत्र किया गया। इस बीच कुछ रजिस्टर व अन्य दस्तावेज भी टीम ने यहां से बरामद किए हैं, जिसकी जांच कराई जाएगी।

बिल्डिंग को खाली कराए जाने के बाद स्वास्थ्य विभाग ने दो दिनों तक छत व बेसमेंट से लेकर पूरी बिल्डिंग को बार-बार सैनिटाइज किया। स्वास्थ्य विभाग की अनुमति के बाद क्राइम ब्रांच ने रविवार को अंदर जाकर जांच शुरू की। इससे पहले पुलिस कर्मियों, फॉरेंसिक टीम के सदस्यों व उनके साथ गए मरकज के प्रबंधन से जुड़े तीन मौलानाओं को डॉक्टरों ने पर्सनल प्रोटेक्टिव एक्यूपमेंट पहनाया। अच्छी तरह से जांच के बाद उन्हें अंदर जाने की अनुमति दी गई। इसमें क्राइम ब्रांच व फॉरेंसिक टीम के करीब दस सदस्य थे। यहां टीम ने पूरी बिल्डिंग का मुआयना कर नक्शे बनाए। इसमें बिल्डिंग में कितने तल हैं, कितने कमरे, बाथरूम व बेसमेंट आदि की जानकारी भी जुटाई है। वहां मौजूद कई रजिस्टर व अन्य कई दस्तावेज जब्त किए। जांच के दौरान प्रबंधन से जुड़े तीन मौलानाओं को इसलिए साथ रखा गया। इस बीच जांच प्रक्रिया व बिल्डिंग की वीडियोग्राफी भी कराई गई। मरकज की बिल्डिंग में दो बड़े-बड़े बेसमेंट मिले, जहां हजारों लोगों के ठहरने का इंतजाम है। माना जा रहा है कि बाहर से आए जमातियों को बेसमेंट में ही ठहराया जाता था।

क्राइम ब्रांच के विशेष आयुक्त प्रवीर रंजन के मुताबिक जांच अभी लंबी चलेगी। क्राइम ब्रांच मरकज के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद सहित प्रबंधन से जुड़े अन्य मौलानाओं को नोटिस जारी कर यहां आने वाले देश-विदेश के लोगों के बारे में जानकारी मांगी है। वहीं रविवार को महाराष्ट्र के एक शख्स के जमात में आने की जानकारी भी क्राइम ब्रांच को मिली।

दिल्ली पुलिस को दो दिन पूर्व मोबाइल की लोकेशन के आधार पर जानकारी मिली कि एयरफोर्स का एक सार्जेंट मरकज के पास ठहरा था। पूछताछ की तो मालूम पड़ा कि वह दो अन्य एयरफोर्स कर्मियों के भी संपर्क में रहा है। तीनों को होम क्वारंटाइन किया गया है।

वायरस फैलाने के लिए जमातियों को जिम्मेदार बताने पर युवक की हत्या

जागरण संवाददाता, प्रयागराज

▶ **प्रयागराज में हुई वारदात, आठ हिरासत में, पूर्व प्रधान सहित 10 नामजद**

▶ **आरोपितों पर रासुका की कार्रवाई, पीड़ित परिवार को पांच लाख रुपये का मुआवजा**

'तब्लीगी जमात वालों के कारण कोरोना फैलने' की बात कहने पर प्रयागराज के करेली स्थित बख्शी मोढ़ा गांव में युवक लोटन निषाद की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इस पर भीड़ ने एक आरोपित मोहम्मद सोना को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। लॉकडाउन में हत्या की वारदात को मुख्यमंत्री ने गंभीरता से लिया है। पीड़ित परिवार को पांच लाख रुपये मुआवजा और आरोपितों पर रासुका के तहत कार्रवाई होगी। पुलिस ने आठ लोगों को हिरासत में लिया है।

एसपी सिटी बृजेश श्रीवास्तव ने बताया कि बख्शी मोढ़ा में सुबह करीब नौ बजे किराना दुकान के पास बैठकर कुछ लोग अखबार पढ़ रहे थे। उसी दौरान उनमें बात होने लगी कि जमात वालों की वजह से देशभर में कोरोना वायरस फैल रहा है। इस पर तैश में आकर नशेड़ी मोहम्मद सोना ने पूर्व प्रधान देशराज के मुंह पर मुक्का मार दिया। मारपीट होने पर बिरजू निषाद बीच-बचाव करने लगा। उसे भी सोना और उसके साथी पीटने लगे तो बिरजू के घर से छोटा भाई लोटन सहित अन्य लोग आ गए। तभी पूर्व प्रधान नौशाद, उसके भाई जाकिर अली, नूर अख्तर, फारूख, नौशाद और सादिक सहित एक दर्जन से ज्यादा लोग वहां पहुंचकर फायरिंग करने लगे।

बिरजू का आरोप है कि उसका भाई लोटन बचने के लिए घर की तरफ भागा तो नौशाद ने उसके सिर पर गोली मार दी। आसपास के लोगों के जुटने पर हमलावर भागने लगे तो बिरजू ने भी लाइसेंसी बंदूक से फायर किया। लोगों ने एक आरोपित मोहम्मद सोना को पकड़ लिया और डॉयल 112 पर सूचना दी, जिसे हिरासत में ले लिया गया। आइजी रेंज, एसएसपी व एसपी सिटी भी घटनास्थल पर पहुंच गए। पुलिस ने छापेमारी कर आठ आरोपितों को उनके घर से पकड़ लिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सीएम ने पीड़ित परिवार को पांच लाख रुपये का मुआवजा देने का निर्देश दिया है। हत्या और शांति भंग करने वाले सभी आरोपितों के खिलाफ रासुका के तहत कार्रवाई की जाएगी। बिरजू ने 10 नामजद और छह-सात अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

लोटन निषाद की फाइल फोटो।

प्रयागराज के करेली क्षेत्र में रविवार को युवक की हत्या के बाद पीड़ित पक्ष को समझाते आइजी कवींद्र प्रताप सिंह। जागरण

उत्तर प्रदेश में तब्लीगियों की गतिविधियां खंगालने में जुटीं खुफिया एजेंसियां

मनीष शर्मा, मुजफ्फरनगर

▶ **पश्चिमी उप्र के जिलों से सौ से ज्यादा मोबाइल नंबर सर्विलांस पर**

▶ **बैंक खातों पर नजर, कोरोना संकट से उबरने पर खंगाली जाएंगी कुंडली**

कोराना से ग्रसित तब्लीगी जमातियों की लगातार बढ़ती संख्या चिंता बढ़ाने वाली है। फिलहाल पुलिस बाहरी तौर पर निजामुद्दीन मरकज में गए एक-एक जमाती को तलाश कर क्वारंटाइन कर रही है, लेकिन खुफिया एजेंसियां तब्लीगी जमात की गतिविधियों को खंगालने में भी जुट गई हैं। खुफिया एजेंसियों से जुड़े सूत्रों की मानें तो पश्चिम उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर, शामली, सहारनपुर समेत कई जिलों से तकरीबन सौ से ज्यादा नंबर सर्विलांस की जद में लिए जा चुके हैं। इतना ही नहीं विदेशी व बड़ी धनराशि के हस्तांतरण वाले कई बैंक खातों पर खुफिया विभाग की नजर है, जिनकी कुंडली इस संकट से उबरने के बाद खंगाली जानी तय मानी जा रही है।

निजामुद्दीन मरकज में तब्लीगी जमात में उप्र से 157 जमातियों के शामिल होने की सूचना अपर पुलिस महानिदेशक अभिसूचना ने जारी की थी, जिसमें तकरीबन आधे जमाती पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ, सहारनपुर, बागपत, बिजनौर से थे। इससे एक बात तो साफ है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में तब्लीगी जमात की गहरी पकड़ है। तब्लीगी जमात के अमीर मौलाना साद का शामली के कांधला जिले का मूल निवासी और सहारनपुर में ससुराल होना इसका बड़ा कारण है।

मुजफ्फरनगर समेत इन जिलों से बड़ी संख्या में लोग मौलाना साद से सीधे तौर पर जुड़े हैं। पुलिस व खुफिया एजेंसियों से जुड़े सूत्र बताते हैं कि पश्चिम उत्तर प्रदेश के इन जिलों में बड़े स्तर पर विदेशी मुद्रा का फ्लो है। ऐसे में फॉरेन ट्रांजेक्शन के साथ-साथ कई स्थानीय धनराशि हस्तांतरण को फिल्टर किया जा रहा है। इसके बाद चिह्नित खाता धारकों के तब्लीगी जमात से कनेक्शन की तफ्तीश की जाएगी।

सूत्र बताते हैं कि मुजफ्फरनगर, मेरठ, सहारनपुर, बिजनौर, बागपत, शामली, अमरोहा के तकरीबन सौ से ज्यादा मोबाइल नंबर खुफिया विभाग के रडार पर हैं, जिनका संपर्क किसी न किसी तरह तब्लीगी जमातियों से रहा है। इनमें कई रसूखदार लोग भी शामिल हैं। हालांकि, फिलहाल पुलिस स्वास्थ्य दृष्टिकोण को सर्वोपरि बताते हुए जांच व अन्य बिंदुओं पर अभी कुछ भी खुलकर बोलने से बच रही है। भविष्य में जरूरत पड़ने पर जांच की बात जरूर पुलिस अफसर कह रहे हैं।

> इस वक्त हमारे लिए जमातियों के क्वारंटाइन पीरियड और स्वास्थ्य परीक्षण महत्वपूर्ण है। अभी तक मंडल से सैकड़ों जमातियों को क्वारंटाइन किया जा चुका है। बचे जमातियों को तलाश कर क्वारंटाइन किया जा रहा है। अन्य बिंदुओं पर जांच की बाबत अभी हमें निर्देश नहीं मिले हैं।
> **– उपेंद्र अग्रवाल, डीआइजी सहारनपुर।**

> करीब 400 जमातियों को क्वारंटाइन किया जा चुका है। इनमें नेपाल के जमाती भी हैं। फिलहाल हम जमातियों को क्वारंटाइन कर रहे हैं। जरूरत पड़ने पर भविष्य में अन्य सभी बिंदुओं को परखा जाएगा।
> **– अभिषेक यादव, एसएसपी मुजफ्फरनगर।**

कोविड-19 के हाईरिस्क ग्रुप में शामिल हुए जमात के लोग

जागरण संवाददाता, लखनऊ

▶ **उप्र शासन ने कोरोना की गंभीरता को देखते हुए जारी किया आदेश**

कोरोना के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। वहीं तब्लीगी जमात से संक्रमण में अचानक वृद्धि हो गई। इनके देशभर में पॉजिटिव मिलने का सिलसिला जारी है। ऐसे में उप्र शासन ने कोविड-19 के हाईरिस्क पैरामीटर में तब्लीगी जमात के लोगों को शामिल कर दिया है। लखनऊ सहित देशभर में कोरोना के मामले बढ़ रहे हैं। अभी तक अस्पतालों में 14 दिन तक संदिग्ध मरीजों को भर्ती किया जाता था।

वहीं, कोरोना वायरस की पुष्टि न होने पर उसे डिस्चार्ज कर घर में क्वारंटाइन होने की सलाह दे दी जाती है। लखनऊ सहित कई जगह संक्रमित मरीजों के संपर्क में आए परिवारजनों में 14 दिन के अंदर का टेस्ट निगेटिव आया। वहीं, 18-20 दिन बाद संपर्क में आए व्यक्तियों की तबीयत बिगड़ गई। इनकी जांच में कोरोना की पुष्टि हुई है।

राजधानी के गोमती नगर निवासी पहली मरीज के परिवार के दो सदस्यों में 19वें दिन कोरोना की पुष्टि हुई है। लिहाजा, स्वास्थ्य सचिव वी हेकली ने हाईरिस्क में शामिल लोगों की 28 दिन तक कड़ी निगरानी और जांच करने के निर्देश दिए हैं।

यह है हाईरिस्क का प्रोटोकॉल

- विदेश यात्रा के 28 दिनों के अंदर कोई लक्षण आने पर जांच
- बुखार, खांसी, सांस के गंभीर मरीज, निमोनिया के भर्ती मरीज
- गंभीर लक्षणों वाले अंतरराज्यीय यात्री
- 28 दिनों के अंदर तब्लीगी जमात में शामिल होने वाले
- मरीजों का इलाज कर रहे स्वास्थ्य कर्मी
- संक्रमित मरीज के संपर्क में परिवारजन

एम्स स्टॉफ के लिए सिरदर्द बना जमात का मरीज

नईदुनिया, रायपुर : छत्तीसगढ़ में कोरोना पॉजिटिव पाए गए तब्लीगी जमात के मरीज ने एम्स प्रशासन की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। 16 वर्षीय इस मरीज को एक दिन पहले ही कोरबा के कटघोरा से यहां लगाया गया है। युवक अस्पताल प्रबंधन से तरह-तरह की मांग और ऊल-जलूल हरकत कर रहा है। डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ से बार-बार नमाज पढ़ने के लिए अनुमति मांग रहा है। परिवार के सदस्यों से मिलने की मांग करके रोने लग रहा है। वार्ड से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है।

एम्स के डायरेक्टर डॉ. नितिन नागरकर ने इस बात की पुष्टि की कि युवक अस्पताल के स्टॉफ को परेशान कर रहा था। नागरकर ने कहा कि कोरबा से आया युवक शुरू में थोड़ा सा परेशान कर रहा था। वह बार-बार यह बोल रहा था कि उसे घर की याद आ रही थी। परिजन से बात करने के बाद थोड़ा शांत हुआ। उन्होंने बताया कि युवक महाराष्ट्र का रहने वाला है। वह कठघोरा में मिला था। युवक की हरकत को देखते हुए रायपुर सांसद सुनील सोनी ने तब्लीगी जमात के मरीजों के लिए अलग वार्ड की मांग की है।

वैश्विक संकट के इस दौर में भी जहालत छोड़ने को तैयार नहीं जमाती

जेएनएन, लखनऊ

▶ **फीरोजाबाद में वार्ड से बाहर आकर पढ़ी सामूहिक नमाज, मुकदमा**

▶ **कहीं डाक्टरों से अभद्रता तो कहीं बीफ और बिरयानी की मांग**

या तो यह शासन-प्रशासन के प्रति अवज्ञा का भाव है, या फिर जहालत। उप्र में पकड़े गए तब्लीगी जमात के लोग कोरोना वायरस से उपजे संकट की गंभीरता को समझने के लिए तैयार नहीं हैं। यह जानते हुए भी कि इस वायरस से मौत हो सकती है। वे न सिर्फ उपद्रव कर रहे हैं, बल्कि उन्हें ही बचाने की कोशिशों में जुटे स्वास्थ्य कर्मियों से अभद्रता भी। गाजियाबाद में तो उन्होंने बीफ खाने की मांग तक कर डाली।

दिल्ली में निजामुद्दीन मरकज में शामिल हुए बड़ी संख्या में जमातियों को पकड़कर प्रदेश में अलग-अलग अस्पतालों व अन्य स्थानों पर क्वारंटाइन या आइसोलेशन में रखा गया है। उनको हिदायत दी गई है कि वे 14 दिनों तक कहीं बाहर न जाएंगे। लेकिन, यह जानते हुए कि उन पर मौत का खतरा मंडरा रहा है। वे दिशा-निर्देशों के उल्लंघन पर खुलकर उतारू हैं। मसलन शनिवार को कन्नौज में अर्शी पैरामेडिकल कॉलेज के क्वारंटाइन सेंटर में 39 जमातियों ने खिड़की के शीशे तोड़कर भागने की कोशिश की। सिर्फ यही नहीं, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तिर्वा में रखे गए शामली के 11 जमातियों ने खाने को लेकर हंगामा किया। फीरोजाबाद में जमातियों ने खुलकर निर्देशों की अवहेलना की। यहां मेडिकल कालेज में रखे गए 27 जमाती शनिवार शाम वार्ड से बाहर आ गए और एकजुट होकर नमाज पढ़ी। साथ ही कॉलेज परिसर में जगह-जगह थूकते रहे।

पुलिस ने इन्हें यूनिटी हॉस्पिटल भेजा है और रविवार दोपहर इन सभी के खिलाफ महामारी अधिनियम व अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। इससे पहले शिकोहाबाद के संयुक्त चिकित्सालय में बिहार के सात जमातियों के दीवारों पर थूकने की बातें प्रकाश में आई थी। यहां चार जमातियों में संक्रमण की पुष्टि हुई है। आगरा के मधु रिसोर्ट में क्वारंटाइन किए गए जमातियों के संपर्क वाले 55 लोगों के सामूहिक नमाज का मामला सामने आया है। ये एक साथ खड़े रहते हैं और अधिकारियो से बिरयानी की मांग करते हैं। वाराणसी में भी मेडिकल कालेज में जमातियों ने बिरयानी मांगी और गंदगी मचाई। बदायूं में महाराष्ट्र निवासी छह तब्लीगी कोरोना संधिग्ध हैं। उन्होंने तड़के ही नाश्ता मांगा। शाहजहांपुर में 22 तब्लीगियों को रखा गया है जो अस्पताल के मेन्यू के अनुसार खाने को तैयार नहीं। मुरादाबाद में पकड़े गए 25 जमातियों की मांग हैदराबादी डिश की है। उधर, बिजनौर जिला अस्पताल में भर्ती इंडोनेशिया के छह जमातियों ने स्वास्थ्यकर्मियों से धक्का-मुक्की का प्रयास किया।

झारखंड में बांग्लादेश के मरकज से लौटी महिला मिली संक्रमित

राज्य ब्यूरो, रांची : झारखंड में तब्लीगी जमात से ताल्लुक रखनेवाली एक और महिला कोरोना संक्रमित पाई गई है। यह महिला बोकारो के गांव की है। इसके साथ ही झारखंड में अब कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या तीन हो गई है।

बोकारो में रविवार को कोरोना पॉजिटिव मिली महिला बांग्लादेश के तब्लीगी जमात मरकज में शामिल होकर लौटी थी। उसके साथ उसके पति समेत गांव के ही तीन दंपती बांग्लादेश गए थे। जांच में बाकी की रिपोर्ट निगेटिव आई है, लेकिन अभी उन्हें क्वारंटाइन में रखा गया है। महिला को बोकारो जनरल अस्पताल में बने कोरोना वार्ड में भर्ती किया गया है। इससे पहले रांची के हिंदपीढ़ी और हजारीबाग के विष्णुगढ़ में एक-एक मरीज कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं।

बताया जाता है कि बोकारो के तीन दंपती बांग्लादेश के ढाका में हुए तब्लीगी जमात में शामिल होकर 15 मार्च को लौटे थे। तीनों जोड़ों की स्क्रीनिंग कराने के बाद प्रशासन ने उन्हें चास के जीजीईएस इंजीनियरिंग कॉलेज में बनाए गए क्वारंटाइन सेंटर में रखा और इनके सैंपल को जांच के लिए रांची स्थित रिम्स भेजा था। रविवार को आई रिपोर्ट में उक्त महिला कोरोना पॉजिटिव मिली।

बोकारो के उपायुक्त मुकेश कुमार ने बताया कि महिला समेत उसके साथ बांग्लादेश से लौटे सभी छह लोगों के संपर्क में आए लोगों की भी स्क्रीनिंग कराई जा रही है। महिला जिस घर में रहती थी उसके 3 किलोमीटर का क्षेत्र सील कर वहां के सभी लोगों की जांच की प्रक्रिया शुरू की जा रही है। साथ ही सात किलोमीटर के क्षेत्र में बाहरी लोगों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रशासन बाहर से आए लोगों की पहचान सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहा है।

खुल रहे रहस्य

कैश में होता है लेन-देन, बैंकों में डाली जाती है मामूली रकम, फंडिंग के स्रोतों का पता लगाना क्राइम ब्रांच के लिए बना चुनौती

तब्लीगी मरकज की फंडिंग का कोई हिसाब नहीं

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

देश में कोरोना संकट को बढ़ाने वाले तब्लीगी मरकज की जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, उसके राज भी परत दर परत खुल रहे हैं। क्राइम ब्रांच को अब तक की जांच में पता चला है कि देश-विदेश से हर माह करोड़ों रुपये की फंडिंग हो रही थी। इसमें बड़ा घालमेल किया गया है। देश-विदेश से बेतहाशा मिलने वाले इस धन का कहीं कोई लेखा-जोखा नहीं है। मरकज के कुछ बैंक खातों का पता जरूर चला है, लेकिन उनमें जो लेनदेन की बात सामने आ रही है। वह भी बेहद मामूली है।

ऐसे में क्राइम ब्रांच के लिए फंडिंग के स्रोत और मिले धन को कहां खर्च किया गया। इस बात का पता लगाना भी क्राइम ब्रांच के लिए बड़ी चुनौती साबित होने जा रहा है। हालांकि क्राइम ब्रांच ने मरकज के प्रमुख मौलाना मुहम्मद साद को नोटिस भेजा है, जिसमें संस्था के सभी बैंक खातों व तीन साल में जमा कराए गए आयकर सहित अन्य अहम जानकारियां मांगी गई हैं।

दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी के मुताबिक तब्लीगी मरकज को देश-विदेश से हर माह करोड़ों की फंडिंग होने की जानकारी मिली है। लेकिन, यह पता नहीं चल सका कै कि लेनदेन किन खातों के माध्यम से होता था। हालांकि, पुलिस ने मौलाना साद सहित अन्य को नोटिस देकर 26 सवालों के जवाब मांगे हैं। इनमें बैंक खातों की भी जानकारी मांगी गई है, लेकिन पुलिस का अनुमान है कि उसे उन चंद बैंक खातों के बारे में जानकारी दी जाएगी, जिनमें मामूली रकम जमा कराई जाती है। ऐसे में पुलिस को फंडिंग व उसके उपयोग के बारे में पता नहीं लग सकेगा।

दिल्ली व मेवात के अलावा पश्चिमी उत्तर प्रदेश तब्लीगी मरकज का गढ़ माना जाता है। इन जगहों पर इनके काफी समर्थक रहते हैं। तब्लीगी मरकज से देश व विदेश में करोड़ों लोग जुड़े हैं। रोजाना देश व विदेश से 1000-2000 लोग यहां आते रहते हैं। इसलिए पुलिस बहुत ही फूंक-फूंक कर जांच में कोई भी कदम उठा रही है।

सत्ता पर काबिज होना चाहता था चचेरा भाई जुबैर : मौलाना साद से पहले मरकज के प्रमुख उसके चाचा थे। चाचा की मृत्यु होने के बाद उनका बेटा मौलाना जुबैर सत्ता पर काबिज होना चाहता था, लेकिन साद ने जबरन कुर्सी हासिल कर ली थी। साद जुबैर से ज्यादा तेज होने के अलावा चाचा का करीबी भी था। जुबैर पूरे परिवार के साथ मरकज में ही रहता है, लेकिन देश-विदेश से मिलने वाले फंड में उसे ज्यादा कुछ नहीं मिलता है। देश-विदेश से आए जिन लोगों को पता है कि जुबैर मरकज के पूर्व प्रमुख का बेटा है तो वे उसे कुछ पैसे दे देते हैं, जिससे उसका जीवन यापन होता है।

मरकज में सबसे ऊपर रहते हैं साद के तीन बेटे : मौलाना साद के भी तीन बेटे हैं। तीनों बेटे मरकज में सबसे ऊपर नौवीं मंजिल पर रहते हैं। मरकज में पीछे की तरफ से इनके आने जाने व लग्जरी गाड़ियों की पार्किंग है। इनके पास कई लग्जरी गाड़ियां हैं।

फंडिंग की रकम को लेकर जुबैर चल रहा विवाद : पैसे को लेकर जुबेर व साद के बीच अक्सर झगड़ होता रहता है। कई बार बात निजामुद्दीन थाने तक भी पहुंच चुकी है, लेकिन ऊंचे रसूख व अन्य कारणों से साद के खिलाफ कभी कोई कार्रवाई नहीं हुई। तीन साल पहले जुबैर की शिकायत पर साद व प्रबंधन से जुड़े लोगों के खिलाफ मारपीट व अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था।

दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात में शामिल लौटे एक व्यक्ति के कोरोना वायरस संक्रमित पाए जाने के बाद हरिद्वार के पनियाला गांव में लोगों का थर्मल स्क्रीनिंग करती स्वास्थ्यकर्मी। एएनआइ

कोरोना संक्रमण के लिए

विषबेल बन जाता है समूह

एक साथ बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति और उनके बीच अपेक्षित शारीरिक दूरी का अभाव समूह संक्रमण की बड़ी वजह बनता है। जिस संक्रमण से देश को बचाने के लिए लॉकडाउन किया गया, आज उस प्रयास को पलीता लगता नजर आ रहा है। वजह हम सबके सामने है। निजामुद्दीन की तब्लीगी जमात में शामिल लोगों की जांच रिपोर्ट ने चिंताएं बढ़ा दी हैं। देश के अब तक जितने मामले आए हैं, एक चौथाई मामले अकेले तब्लीगी जमात से जुड़े है। जांचें अब भी चल रही हैं, और पॉजिटिव केस मिलने का सिलसिला जारी है। यह तो पहली परत है, कड़ियां खंगाली जाएंगी तो और भी भयावह आंकड़ों से सामना करना पड़ सकता है। दरअसल, लोगों का समूह में होना, शरीरिक दूरी न मानना कोरोना के लिए विषबेल बन जाता है। दुनिया के कई मामले सामने हैं। हमें इन भयावह उदाहरणों से सीख लेनी चाहिए। आइए, समूह संक्रमण के कुछ चर्चित मामलों को एक बार फिर पलट लेते हैं।

दक्षिण कोरिया की 'पेसेंट-31'

दक्षिण कोरिया से निकला पेसेंट-31 का यह टर्म कोरोना के संबंध में काफी प्रचलित हुआ है। दक्षिण कोरिया में शुरुआती दौर में कोरोना नियंत्रण में था। देश में 30 केस और उसकी हिस्ट्री से साबित हुआ था कि इसकी चेन लंबी नहीं है। लेकिन एक 35 वर्षीय महिला जिसने 5 फरवरी को डियॉक की प्रार्थना सभा में हिस्सा लिया। चोटिल होने पर अस्पताल गई, लंच के लिए मित्र के साथ होटल गई, 12 फरवरी को फिर चर्च सर्विस की। जांच में वह पॉजिटिव निकली। यह दक्षिण कोरिया की 31वीं पॉजिटिव थी। मार्च के मध्य तक यह महिला अकेले दक्षिण कोरिया के 60 फीसद मरीजों के पॉजिटिव होने का कारण बन गई।

चीन के बाजार

वुहान का हुनान सी-फूड मार्केट कोरोना के समूह संक्रमण का पहला मामला था। जांच में सामने आया था कि चीन के शुरुआती 41 मरीजों में से दो-तिहाई लोगों को संक्रमण इसी बाजार में जाने से हुआ था। इसके बाद विश्व के अधिकांश देश जूझ रहे हैं।

इटली का अस्पताल

इटली में कोरोना के समूह संक्रमण का बहुत बड़ा माध्यम अस्पताल माना गया। लोंबार्डी क्षेत्र के एक अस्पताल में 38 वर्षीय एक युवक आया, उसे कोरोना का संक्रमण था, लेकिन जब तक इसके लक्षण गंभीर दिखते वह यहां कई लोगों के संपर्क में आ चुका था। वह युवक चीन से लौटे अपने दोस्त के संपर्क में आया था।

सिंगापुर का होटल

जनवरी में सिंगापुर के एक होटल में 100 से अधिक लोगों की अंतरराष्ट्रीय स्तर की एक व्यापारिक बैठक हुई थी। इनमें से सात लोग पॉजिटिव पाए गए थे। लेकिन जांच रिपोर्ट आने से पहले ही फ्रांस, ब्रिटेन, दक्षिण कोरिया और मलेशिया के 90 नागरिक अपने-अपने देश लौट चुके थे। संक्रमितों में से एक ब्रितानी घर लौटने से पहले घूमने निकल गया था, जिससे कम से कम तीन देशों के 10 लोग सीधे संपर्क में आए।

फ्रांस का चर्च

18 फरवरी को ओपन डोर मेगाचर्च इवेंट कोरोना के समूह संक्रमण का सबसे बड़ा कारण बन गया। यहां दुनियाभर से सैंकड़ों श्रद्धालु पहुंचे थे जिनमें एक कोरोना संक्रमित भी था। यहां उसने कई लोगों को संक्रमित किया और एक अनुमान के मुताबिक यह कार्यक्रम लगभग 2500 लोगों में कोरोना संक्रमण की वजह बना।

आस्ट्रिया का रिसॉर्ट

आस्ट्रिया की पेजनॉन घाटी के इश्चगिल का एक स्काई रिसॉर्ट 600 के करीब आस्ट्रियाई आबादी और लगभग दोगुना अन्य देशों के लोगों में कोरोना संक्रमण का कारण बना। आस्ट्रियाई अधिकारियों ने भी 2 अप्रैल को यह स्वीकारा कि जर्मनी, नार्वे, आइसलैंड के सैंकड़ों पर्यटक इस रिसॉर्ट में संक्रमित हुए।

जापान के वृद्धाश्रम

नागोया के एक वृद्धाश्रम में 50 कोरोना पॉजिटिव केस पाए गए। यह जापान का पहला बड़ा समूह संक्रमण का मामला था। वैसे भी जापान बुजुर्गों का देश माना जाता है और कोरोना जैसी बीमारी बुजुर्गों के लिए सबसे ज्यादा घातक है।

कैलिफोर्निया का मेगाचर्च

अमेरिका के कई चर्चों ने कोरोना वायरस के प्रकोप के दौरान लोगों को एकत्रित होने दिया। कैलिफोर्निया के मेगाचर्च के 71 सदस्यों में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई है। इसके साथ ही उनके बहुत से अन्य लोगों को संक्रमित करने की आशंका जताई जा रही है। वहीं सैक्रोकाउंटी के 350 संक्रमितों में से एक तिहाई को भी चर्च से जोड़ा गया है।

गांवों की ओर बढ़ रहा कोरोना

कोरोना के समूह संक्रमण को रोकने अब अपने देश में बड़ी चुनौती का विषय बनता जा रहा है क्योंकि यह महामारी शहरों से गांवों की ओर बढ़ रही है। गांवों में लोग समूह में ज्यादा रहते हैं और यहां की चिकित्सा व्यवस्थाएं भी लचर हैं। आंकड़ों के लिहाजा से फिलहाल देश के एक तिहाई जिलों में कोविड ने दस्तक दे दी है। ऐसी परिस्थिति में जहां जांच किट सीमित हैं और चिकित्सकीय संसाधन कम, गांवों में कोरोना फैला तो इस महामारी को हराने के हमारे सारे प्रयास धरे रह जाएंगे। (स्रोत: मीडिया रिपोर्ट)

किस प्रदेश में कितने जिले प्रभावित

(फीसद में)

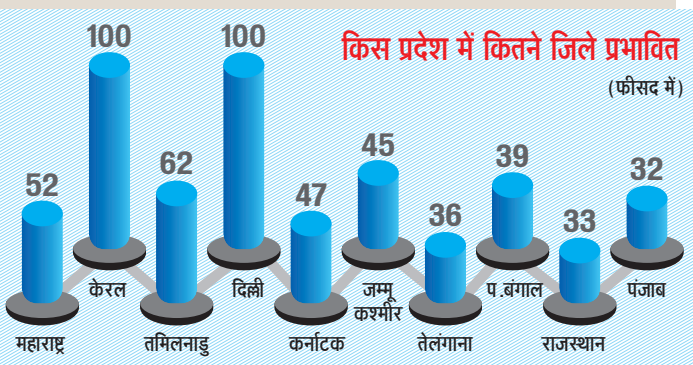

नोट: केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की वेबसाइट से 31 मार्च, 2020 तक के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर।

कोविड-19 से देश में अब तक 126 मौतें, चार हजार से ज्यादा संक्रमित

प्रकोप ▶ महाराष्ट्र में एक दिन में 13 लोगों की मौत, अब तक 45 की गई जान

केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने नई दिल्ली स्थित लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल का दौरा किया। उन्होंने कोरोना वायरस से मुकाबले की तैयारियों का जायजा लिया। प्रेट्र

राज्य	नए मामले	तब्लीगी
दिल्ली	58	19
गुजरात	14	10
राजस्थान	47	3
उत्तराखंड	4	4
झारखंड	1	1

देश में कुल संक्रमित

राज्य	संक्रमित
महाराष्ट्र	690
तमिलनाडु	571
दिल्ली	503
केरल	314
तेलंगाना	272
उत्तर प्रदेश	283
राजस्थान	253
मध्य प्रदेश	197
आंध्र प्रदेश	252
कर्नाटक	151
गुजरात	128
जम्मू-कश्मीर	106
हरियाणा	76
पंजाब	68
बंगाल	49
बिहार	30
असम	29
उत्तराखंड	26
चंडीगढ़	18
लद्दाख	14
हिमाचल प्रदेश	14
अंडमान-निकोबार	10
छत्तीसगढ़	10
ओडिशा	23
गोवा	7
पुडुचेरी	4
मणिपुर	2
झारखंड	3
मिजोरम	1

दिल्ली में 19 और गुजरात में 10 और तब्लीगी संक्रमित मिले

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में कोरोना वायरस (कोविड-19) का प्रसार तेजी से हो रहा है। रविवार को और 21 लोगों की मौत हो गई। देश में अब तक इस महामारी से 126 लोगों की जान जा चुकी है। जबकि, एक दिन में चार सौ से ज्यादा नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों की संख्या चार हजार को पार कर गई गई है। 315 लोग पूरी तरह से ठीक भी हुए हैं। हालांकि, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक पिछले चौबीस घंटे में 505 नए केस के साथ संक्रमितों की संख्या 3,577 है, जबकि, 83 लोगों की मौत हुई है। 274 लोग स्वस्थ हुए हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्यों सरकारों की तरफ से जारी आंकड़ों में इस अंतर के बारे में अधिकारियों का कहना है कि अलग-अलग राज्यों से मामलों को एकत्र करने की प्रक्रिया में देरी इसकी वजह है। इस महामारी ने रविवार को 21 लोगों की जान ले ली। इसमें अकेले महाराष्ट्र में 13 मौतें शामिल हैं। राज्य में अब तक 45 लोगों की जान जा चुकी है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश में तीन, तमिलनाडु में दो और राजस्थान, मध्य प्रदेश व गुजरात में एक-एक व्यक्ति ने दम तोड़ दिया। देशभर में रविवार को कुल 409 नए मामले सामने आए। संक्रमितों की संख्या 4,104 हो गई है। तमिलनाडु में सबसे ज्यादा 86 नए मामले सामने आए हैं और राज्य में संक्रमितों की संख्या 571 हो गई है। महाराष्ट्र में संक्रमण के 55 नए मामले सामने आए हैं। इनमें से अकेले 26 मामले मुंबई में हैं और शेष राज्य में 29 मामले। राज्य में संक्रमितों की संख्या 690 हो गई है, जो देश के किसी एक राज्य में सबसे ज्यादा संख्या है।

आंध्र में आंकड़ा दो सौ के पार : आंध्र प्रदेश में 34 नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों का आंकड़ा 226 पर पहुंच गया है। आठ नए मामलों के साथ केरल में संख्या 314 हो गई है। कर्नाटक में सात नए मामले मिले हैं और कुल संक्रमित 151 हो गए हैं। जम्मू-कश्मीर में 14 नए मामले मिले हैं और कुल संक्रमित 106 हो गए हैं। दो नए मामलों के साथ ओडिशा में संक्रमितों की संख्या 23 पर पहुंच गई है। गुजरात में 20 नए मामले मिले हैं, जिनमें 10 तब्लीगी जमात से जुड़े हैं। राज्य में संक्रमितों की संख्या 128 हो गई है।

राजस्थान में 47 नए मामले मिले : झारखंड में एक जमाती को संक्रमित पाया गया है और राज्य में पीड़ितों की संख्या तीन हो गई है। राजस्थान में 47 नए मामले मिले हैं, जिनमें तीन जमाती हैं और राज्य में संक्रमितों की संख्या 253 हो गई है। उत्तराखंड में भी चार नए केस मिले हैं और चारों जमाती हैं। राज्य में संक्रमितों का आंकड़ा 26 हो गया है। दो नए मामलों के साथ हरियाणा में संख्या 76 हो गई है। पंजाब में तीन नए केस सामने आए हैं और संख्या 68 हो गई है।

दिल्ली में संक्रमित 500 से ज्यादा

दिल्ली में 58 नए केस मिले, जिनमें 19 जमाती हैं। राज्य में संक्रमितों का आंकड़ा पांच सौ को पार करते हुए 503 पर पहुंच गया है। उत्तर प्रदेश में भी 44 नए केस सामने आए हैं और संक्रमितों की संख्या 283 हो गया है।

शारीरिक दूरी और घर पर रहना जरूरी : डॉ. हर्षवर्धन

जागरण संवाददाता, झज्जर

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने राष्ट्रीय कैंसर संस्थान में व्यवस्था का लिया जायजा
- दो मरीजों से की वीडियो कॉलिंग, ड्यूटी पर तैनात स्टाफ का बढ़ाया मनोबल

रविवार को बाढ़सा स्थित राष्ट्रीय कैंसर संस्थान में व्यवस्थाओं का जायजा लेने पहुंचे केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि कोरोना से बचाव के लिए दवा से ज्यादा शारीरिक दूरी और लॉकडाउन का पालन कर घर पर रहना जरूरी है। उन्होंने ड्यूटी पर तैनात स्टाफ का मनोबल बढ़ाया और दो मरीजों से वीडियो कॉलिंग कर कुशलक्षेम पूछा।

एम्स (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान) प्रबंधन की ओर से बाढ़सा स्थित राष्ट्रीय कैंसर संस्थान के रिहायशी सदन में 310 मरीजों के उपचार के लिए व्यवस्था की गई है, 162 मरीजों का उपचार किया जा रहा है।

दौरे के दौरान स्वास्थ्य मंत्री ने विशेषज्ञ चिकित्सकों के साथ विभिन्न पहलुओं को लेकर विस्तार से चर्चा भी की। व्यवस्थाओं का जायजा लेने के बाद उन्होंने कहा कि कोरोना को लेकर केंद्र सरकार पूरी तरह गंभीर है और तमाम जरूरी कदम गंभीरता से उठाए जा रहे हैं। समय-समय पर राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों से फीडबैक लेते हुए तैयारियां की जा रही हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नियमित तौर पर स्वास्थ्य मंत्रालय के कदमों की जानकारी ले रहे हैं। कहा कि वे एम्स की ओर से मुहैया कराई जा रही सुविधाओं से संतुष्ट हैं। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन का पालन करें, बहुत ज्यादा जरूरी होने पर ही अपने घर से बाहर निकलें।

बिहार के क्वारंटाइन सेंटर में बीडीओ पर हमला, कई जख्मी

जागरण टीम, सिवान

- घर जाने का दबाव बना रहे थे चारों कोरोना संदिग्ध, प्राथमिकी दर्ज, वैशाली के सेंटर से सभी 17 लोग भाग निकले

बिहार में सिवान जिले के राजपुर गांव में क्वारंटाइन सेंटर में रखे गए लोगों ने शनिवार शाम प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) और अन्य कर्मचारियों पर हमला बोल दिया। सरकारी गाड़ी और बाइक को भी क्षतिग्रस्त कर दिया गया। पथराव में कई लोग जख्मी हो गए। क्वारंटाइन सेंटर में रखी टेबल-कुर्सी तोड़ दी गई। बीडीओ किसी तरह जान बचाकर भागे। भागने के क्रम में उन्हें चोट भी लगी। कई अन्य कर्मी भी घायल हुए। इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। एक अन्य मामले में वैशाली में क्वारंटाइन सेंटर से सभी 17 लोग भाग गए।

बताया गया कि राजपुर गांव में बने क्वारंटाइन सेंटर में कोरोना संदिग्ध सुमित कुमार, राहुल कुमार, अंकित कुमार और श्रीराम साह को रखा गया था। शनिवार शाम सेंटर पर सरकारी कर्मी डाटा संग्रह करने गए थे। सेंटर का कमरा अंदर से बंद था। कर्मियों ने खोलने को कहा तो चारों ने इन्कार कर दिया। बीडीओ पहुंचे तो हमला कर दिया। स्कूल कैंपस में रखे ईंट-पत्थर फेंकने लगे। एक किशोर के हाथ में गंभीर चोटें आईं। स्थानीय अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर चारों को क्वारंटाइन सेंटर में ही अभिरक्षा में रखा है। बीडीओ संतोष कुमार मिश्रा में बताया कि चारों घर जाने का दबाव बना रहे थे जबकि उन्हें 14 दिनों तक वहां रहना है।

क्वारंटाइन सेंटर से भागे सभी : वैशाली जिले के सहदेई बुजुर्ग प्रखंड की नयागांव पश्चिमी पंचायत के उत्क्रमित मध्य विद्यालय गनियारी में बनाये गए क्वारंटाइन सेंटर में शनिवार को रखे गए सभी 17 लोग भाग निकले। सेंटर पर नयागांव पश्चिमी पंचायत के 17 लोग जो उत्तर प्रदेश के देवरिया से आए थे, को रखा गया था। जिस वक्त ये सेंटर पर पहुंचे थे, वहां मूलभूत व्यवस्था नहीं थी। इंतजाम किया जा रहा था कि सभी चकमा देकर फरार हो गए। मुखिया रीता देवी ने बताया कि प्रशासन द्वारा भोजन आदि की व्यवस्था कर दी गई थी, फिर भी लोग फरार हो गए।

एकांतवास के लिए केंद्र बनाने को लेकर तृणमूल कार्यकर्ताओं और ग्रामीणों में झड़प, एक की मौत

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : कोरोना महामारी के खिलाफ चल रही जंग व देशव्यापी लॉकडॉउन के समय में भी लोगों में आपसी टकराव थमने का नाम नहीं ले रहा है। ताजा मामला बंगाल के बीरभूम जिले के पारुई इलाके का है। जिले के एक गांव में स्थित स्कूल के हॉस्टल में क्वारंटाइन सेंटर (एकांतवास केंद्र) बनाने को लेकर स्थानीय तृणमूल नेता के समर्थकों और ग्रामीणों के बीच हिंसक संघर्ष हुआ।

शनिवार शाम शुरू हुई हिंसा, देर रात तक चली। इस दौरान दोनों पक्षों के बीच जमकर बमबाजी व गोलीबारी हुई। बमबाजी में एक ग्रामीण की मौत हो गई। दोनों पक्षों के कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हिंसा की खबर पर जिले के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। रविवार सुबह से ही पूरे क्षेत्र में भारी संख्या में पुलिसबल की तैनाती की गई है। पुलिस ने 7 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है। आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

ट्रैवल हिस्ट्री छिपाने वालों के लिए आतंकरोधी तंत्र सक्रिय

राज्य ब्यूरो, जम्मू

- कुछ ही दिनों में एक हजार लोगों को खोजकर प्रशासन की निगरानी में रखा गया
- वायरस से निपटने के लिए तंत्र के तहत खुफिया एजेंसियां और पुलिस मिलकर कर रहीं काम

कोरोना वायरस के बढ़ते खतरे के बीच केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में उन लोगों को खोजना एक बड़ी चुनौती है जो महामारी से प्रभावित देशों से लौटे हैं और ट्रैवल हिस्ट्री बताने के बजाय छिप कर बैठे हैं। ऐसे लोगों का पता लगाने के लिए अब आतंकरोधी तंत्र का इस्तेमाल किया जा रहा है। ऐसे में खुफिया एजेंसियां और पुलिस मिलकर यह काम कर रही हैं। इसके अच्छे परिणाम भी मिले हैं। पिछले कुछ दिनों में ही ऐसे एक हजार लोगों को खोज निकाला गया है जो ट्रैवल हिस्ट्री छिपाए बैठे थे। इन लोगों को अब प्रशासन की निगरानी में रखा गया हैं। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को खत्म करने की महारत का इस्तेमाल अब ट्रैवल हिस्ट्री छिपाने वाले कोरोना वायरस के संदिग्धों को ढूंढने में किया जा रहा है। खुफिया एजेंसियां और पुलिस के जो जवान हमेशा ही आतंकवाद से निपटने के लिए तत्पर रहते थे, वे अब लॉकडाउन के बीच कश्मीर में ऐसे लोगों का पता लगा रहे हैं जो कोरोना प्रभावित देशों से आए हैं और ट्रैवल हिस्ट्री छिपाकर घरों में बैठे हैं। सूत्र बताते हैं कि केंद्र को सौंपी गई रिपोर्ट में कहा गया है कि 15 मार्च से 31 मार्च के बीच जांच में पता लगाया गया है कि करीब एक हजार लोगों ने जम्मू-कश्मीर के बाहर या विदेश की यात्रा की है और उनकी पहचान की जा रही है।

पासपोर्ट को इमीग्रेशन कार्यालयों के जरिये किया स्कैन

विदेशों की ट्रैवल हिस्ट्री वाले लोगों को पहचान के लिए तत्काल योजना बनाई गई। पासपोर्ट को इमीग्रेशन कार्यालयों के जरिये स्कैन किया गया। पुलिस टीमें उन लोगों के घरों में पहुंची। पता लगाकर उनको निगरानी सेंटरों में ले जाया गया। निगरानी में रखे गए लोगों में से 139 ऐसे भी थे जो या तो तब्लीगी जमात के मुख्यालय गए थे या ऐसे लोगों के संपर्क में थे।

फील्ड यूनिट को सक्रिय किया : इस समय जम्मू-कश्मीर में 28 हजार के करीब लोगों को निगरानी में रखा गया है। ऐसे प्रयासों से कोरोना वायरस के मरीजों को खोज निकाला गया है। इस तरह की नई चुनौती से निपटने के लिए फील्ड यूनिट को सक्रिय किया गया है। मार्च के शुरू में ही पता चला था कि कुछ लोग धार्मिक यात्राओं पर गए थे और लौटने के बाद ट्रेन, बस से जम्मू में पहुंचने के बाद कश्मीर पहुंचे।

कोरोना के खिलाफ आशा दीप : कश्मीर के बारामुला की इस छात्रा ने दीप जलाकर कोरोना के खिलाफ जंग में एकजुटता दिखाई। बेंगलुरु में पढ़ने वाली छात्रा मार्च माह में घर लौटी थी और दो दिन पहले तक क्वारंटाइन में थी। हालांकि, जिद थी कि रविवार रात नौ बजे हाथ में दीप लेकर ही कमरे से बाहर आएगी। पंपोष रशीद

एकता का प्रकाश

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और प्रथम महिला सविता कोविंद ने दीप जलाकर कोरोना से मुकाबले और एकजुटकता का संकल्प व्यक्त किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील पर पूरे देश ने रविवार को संकल्प, समर्पण और एकजुटता की दीवाली मनाई। ट्विटर

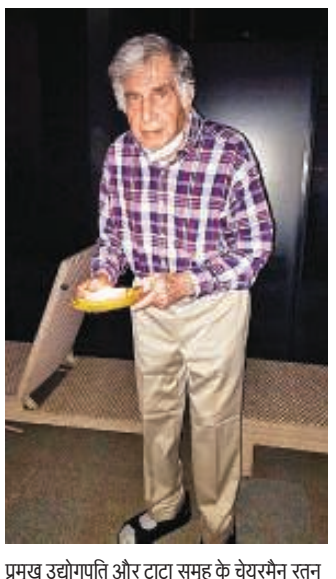

प्रमुख उद्योगपति और टाटा समूह के चेयरमैन रतन टाटा ने भी कोरोना के खिलाफ मुकाबले के लिए देश के साथ खड़े होते हुए दीप जलाया। ट्विटर

उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने पत्नी के साथ दीप जलाकर पीएम मोदी की अपील का समर्थन किया। एएनआइ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां हीराबेन ने भी गांधीनगर में कोरोना को हराने के प्रति एकजुटता की दीवाली मनाई। ट्विटर

पूर्व दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने परिवार के साथ दीप जलाए। उन्होंने तस्वीर ट्विटर पर शेयर करते हुए सफाई कर्मचारियों और सैनिजाइजेशन कार्य कर रहे कर्मचारियों को शुक्रिया कहा। साथ ही बुजुर्गों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का ख्याल रखने का संकल्प व्यक्त किया। ट्विटर

नई दिल्ली में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अपने आवास की बत्तियां बुझाकर परिवार के साथ दीपक जलाए। एएनआइ

रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने कोरोना वायरस के खिलाफ एकजुटता जाहिर करते हुए मुंबई स्थित अपने घर एंटीलिया को मोमबत्तियों से रोशन किया। यह इमारत 27 मंजिला ऊंची है। प्रेट्र

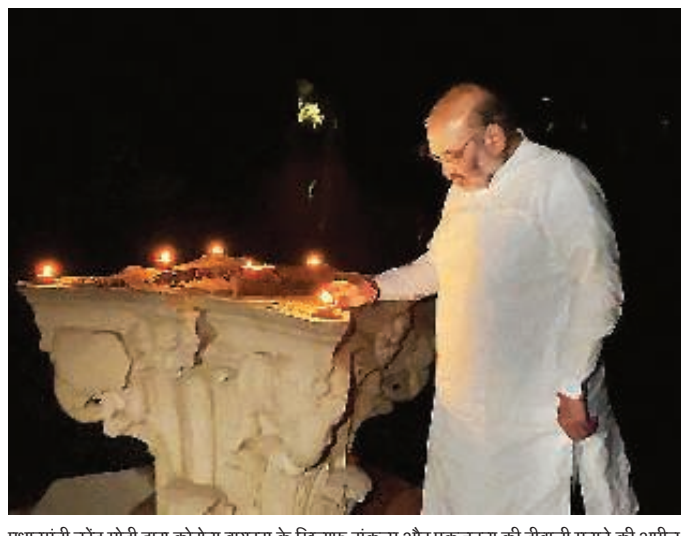

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोरोना वायरस के खिलाफ संकल्प और एकजुटता की दीवाली मनाने की अपील के मद्देनजर गृह मंत्री अमित शाह ने दीप जलाए। उन्होंने कोरोना को हराने का संकल्प लिया। एएनआइ

और एडवांस हुआ पोर्टेबल वेंटीलेटर

मिलेगी मदद ▶ आइआइटी कानपुर के पूर्व छात्रों की कंपनी ने तैयार किए 10 एडवांस्ड वर्जन प्रोटोटाइप

अगले माह तक 30 हजार वेंटीलेटर बनाने का लक्ष्य, 30 टीमें कर रहीं काम, कई कंपनियां साथ आईं

शशांक शेखर भारद्वाज, कानपुर

कोरोना वायरस से लड़ाई के लिए पोर्टेबल वेंटीलेटर तैयार करने वाली आइआइटी कानपुर के पुरातन छात्रों की कंपनी ने अब इसका एडवांस वर्जन तैयार कर लिया है। उन्होंने इसके दस प्रोटोटाइप तैयार किए हैं, जो मशीन लर्निंग और आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस से युक्त हैं। इनका देश के 15 अस्पतालों में इंसान पर परीक्षण होगा। पहला परीक्षण आठ अप्रैल को बेंगलुरु के जयदेव इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोवस्कुलर साइंस एंड रिसर्च में होगा। कंपनी ने मई के अंत तक करीब 30 हजार पोर्टेबल वेंटीलेटर बनाने का लक्ष्य रखा है। कंपनी के निखिल कुरेले के अनुसार, सरकार के साथ देश-विदेश की कई नामचीन कंपनियां, आइआइटी की एलुमिनाई एसोसिएशन और पुरातन छात्र सहयोग के लिए आगे आए हैं।

पुणे के निखिल कुरेले और हर्षित राठौर ने आइआइटी के इनोवेशन एंड इन्क्यूबेशन हब से उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण लिया और नोका रोबोटिक्स कंपनी बनाई थी। देश मे कोरोना वायरस के मामले बढ़ने पर हब के इंचार्ज प्रो. अमिताभ बंद्योपध्याय से बातचीत कर उन्हें पोर्टेबल वेंटीलेटर बनाने का प्रस्ताव दिया था।

प्रो. बंद्योपध्याय ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रो. विशाख भटटाचार्य, प्रो. समीर खांडेकर, प्रो. जे रामकुमार समेत अन्य विभागों की टीम तैयार की और उनके निर्देशन में पोर्टेबल वेंटीलेटर पर काम शुरू हो गया। 31 मार्च को पहला प्रोटोटाइप बनकर तैयार हुआ। इसके बाद नौ और प्रोटोटाइप तैयार किए गए। ये प्रोटोटाइप आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग पर आधारित हैं।

इनमें डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टाफ को भी संक्रमण से बचाने वाली खूबियां डाली गई हैं। आइआइटी विशेषज्ञों के अनुसार, अल्फा (लैब में बना) प्रोटोटाइप बन गया है और डेटा (औद्योगिक उत्पादन के लिए यानी बाजार में पहुंचने वाला मॉडल) प्रोटोटाइप दो दिन में तैयार हो जाएगा। इनका आठ अप्रैल से परीक्षण शुरू हो जाएगा। ये परीक्षण पुणे, बेंगलुरु, मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद, गाजियाबाद, चंडीगढ़, गुजरात सहित 15 स्थानों पर होगा।

विदेश से उपकरण मंगवाने के लिए लिखा पत्र

प्रो. अमिताभ बंद्योपध्याय के मुताबिक पोर्टेबल वेंटीलेटर को पूरी तरह भारत में तैयार किया गया है लेकिन कुछ उपकरण चीन, सिंगापुर, मलेशिया, यूएसए से ही आते हैं। उन्हें मंगवाने के लिए सरकार को पत्र लिखा गया है। इनसे वेंटीलेटर की कार्यप्रणाली और आसान हो जाएगी।

निर्माण के स्पष्ट आदेश का इंतजार

आठ अप्रैल से परीक्षण शुरू होने वाला है लेकिन अभी तक सरकार से इस पोर्टेबल वेंटीलेटर के निर्माण के लिए कोई स्पष्ट निर्देश नहीं मिले हैं। ऐसे उपकरण की निर्माण प्रक्रिया पर सरकार से नोटीफिकेशन जारी होता है, अभी उसका इंतजार है।

पाक ने एयर इंडिया को कहा, हमें आप पर गर्व

राहत सामग्री और भारत में फंसे यूरोपीय लोगों को लेकर निकले थे भारतीय विमान

महामारी के बीच उड़ान के लिए रास्ते के सभी देशों ने की एयर इंडिया की प्रशंसा

नई दिल्ली, एएनआइ : 'अस्सलाम अलैकुम! कराची का कंट्रोल फ्रैंकफर्ट के लिए निकली एयर इंडिया की रिलीफ फ्लाइट का स्वागत करता है।' ये स्वागत के शब्द पाकिस्तान के एयर ट्रैफिक कंट्रोलर (एटीसी) की तरफ से एयर इंडिया के उन पायलटों को बोले गए, जो राहत सामग्री और कोरोना के कारण भारत में फंसे यूरोपीय लोगों को लेकर फ्रैंकफर्ट के लिए फ्लाइट लेकर रवाना हुए थे। इस फ्लाइट का हिस्सा रहे एक पायलट ने बताया, 'यह मेरे लिए और पूरे एयर इंडिया क्रू के लिए गर्व का क्षण था, जब हमने पाकिस्तान एटीसी की ओर से अपनी स्पेशल फ्लाइट के लिए प्रशंसा के शब्द सुने।'

भारत में फंसे हुए यूरोप और कनाडा के लोगों को लेकर एयर इंडिया के दो विशेष विमानों ने मुंबई से उड़ान भरी थी। आने, जाने और फ्रैंकफर्ट में कुछ देर रुकने समेत कुल सफर 20 घंटे का रहा। इस दौरान विमान में सवार सभी क्रू मेंबर को संक्रमण से बचाव के लिए जरूरी सभी सुविधाएं दी गई थीं। पायलट ने बताया कि बात चाहे पाकिस्तान, ईरान की हो या तुर्की और जर्मनी की, मुंबई से फ्रैंकफर्ट तक के सफर के रास्ते में पड़ने वाले सभी देशों के एटीसी ने उड़ान में पूरा सहयोग दिया। साथ ही सभी ने गर्व के साथ इस उड़ान के लिए शुभकामनाएं दीं। फिलहाल वापसी के बाद अब सभी क्रू मेंबर अगले 14 दिन सेल्फ क्वारंटाइन में रहेंगे।

यादगार सफर : विमान के पायलटों और सभी क्रू मेंबर के लिए यह सफर कई मायने में यादगार रहा। खासकर पाकिस्तान एटीसी की तरफ से स्वागत और प्रशंसा के शब्द अप्रत्याशित थे। स्वागत के बाद पाकिस्तानी एटीसी ने औपचारिक प्रश्न किए और भारतीय विमानों को सीधे एक्जिट पॉइंट तक की क्लियरेंस दे दी। इसके बाद पाकिस्तानी एटीसी ने प्रशंसा करते हुए कहा, 'हमें आप पर गर्व है कि इस महामारी की स्थिति में आप विमान का परिचालन कर रहे हैं। गुड लक।'

आगे के सफर में भी की मदद : पाकिस्तानी एटीसी ने आगे के सफर में भी भारतीय विमानों की सहायता की। भारतीय पायलट ने पाकिस्तानी एटीसी को बताया कि ईरान की वायु सीमा के लिए अगला रडार नहीं मिल रहा है। इस पर पाकिस्तानी एटीसी ने तत्काल तेहरान एयरस्पेस को भारतीय विमानों की स्थिति और अन्य जानकारियों से अवगत कराया।

ईरान ने उठाया अनूठा कदम : पाकिस्तान के बाद भारतीय विमानों ने ईरान की हवाई सीमा में प्रवेश किया। भारतीय पायलट ने बताया, 'पायलट के तौर पर मेरे पूरे करियर में पहली बार हुआ जब ईरान ने करीब 1000 मील के डायरेक्ट रूट पर उड़ान की अनुमति दे दी। खासकर हाल के दिनों में ईरान की वायु सीमा में फैले तनाव को देखते हुए यह और भी अहम है।' ईरान किसी दुर्लभ स्थिति में ही किसी एयरलाइन को यह डायरेक्ट रूट देता है, क्योंकि यह रूट ईरान ने अपनी सैन्य गतिविधियों के लिए आरक्षित रखा है। अपनी सीमा से जाते समय ईरान के एटीसी ने भी भारतीय विमानों को शुभकामना दी।

एंटी एजिंग दवाएं कम करेंगी कोरोना वायरस की उम्र

कुमार संजय, लखनऊ

जिन दवाओं को तमाम लोग बढ़ती उम्र को कम दिखाने के लिए प्रयोग करते हैं, वे दवाएं कोरोना पर असरकारक हो सकती हैं। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल में प्रकाशित शोध के मुताबिक, एंटी एजिंग और कोशिकाओं को मरने से बचाने वाली (सेनोलाइटिक्स) दवाएं कोरोना से लड़ाई में बड़ा हथियार साबित हो सकती हैं।

क्लीनिकल इम्यूनोलाजिस्ट डॉ. स्कंध शुक्ला ने इंटरनेशनल मेडिकल जर्नल एजिंग में अपने कोविड-19 एंड क्रोनोलॉजिकल एजिंग (सेनोलाइटिक्स एंड अदर एंटी एजिंग ड्रग फार दी ट्रीटमेंट एंड प्रिवेंशन आफ कोरोना वायरस इंफेक्शन) शोध का हवाला देते कहा है कि बचाव और इलाज के लिए इन दवाओं के इस्तेमाल पर विचार किया जा सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि कोविड-19 सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम और मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम परिवार का एक नया उभरता हुआ वायरस है। देखा गया है कि कोविड-19 अधिक उम्र वाले रोगियों पर ज्यादा हमला करता है। यह इस सवाल का जवाब देता है कि कोरोना संक्रमण और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया के बीच एक कार्यात्मक संबंध है। कोविड-19 के लिए दो रिसेप्टर्स हैं, जो कि महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। एक सीडी 26 है और दूसरा एसीई-2 है। दोनों ही उम्र बढ़ने से संबंधित हैं। इसी तरह कोरोना संक्रमण में दो प्रस्तावित दवाएं एजिथ्रोमाइसिन और क्वेरसेटिन भी महत्वपूर्ण सेनोलाइटिक गतिविधि यानि बुढ़ापे के सेल को मारते हैं। अन्य एंटी-एजिंग ड्रग्स पर भी विचार किया जाना चाहिए, जैसे कि रैपामाइसिन और डॉक्सीसाइक्लिन, क्योंकि वे प्रोटीन संश्लेषण के अवरोधक के रूप में व्यवहार करते हैं और कोशिकाओं से उच्चस्तर की सूजन वाले साइटोकिन्स, इम्यून मॉड्यूलेटर, ग्रोथ फैक्टर और प्रोटीन के स्राव को रोकते हैं।

हवा से नहीं फैलता कोविड 19 वायरस

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने कोरोना के हवा से फैलने के दावों को खारिज कर दिया है। आइसीएमआर के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर ने साफ किया कि ऐसे दावों का कोई पुख्ता वैज्ञानिक आधार नहीं है। नया वायरस होने के कारण लोग कई तरह के दावे कर रहे हैं, लेकिन केवल उन्हीं दावों का भरोसा करना चाहिए, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार हो। कोरोना वायरस के हवा में उड़ने के दावों को गलत बताते हुए डॉक्टर गंगाखेड़कर ने कहा कि यदि ऐसा होता तो एक मरीज के परिवार के सभी सदस्यों में यह फैल जाता। यही नहीं, अस्पतालों में आस-पास भर्ती लोगों में भी यह वायरस पहुंच जाता, लेकिन अभी तक ऐसा कुछ नहीं देखा गया है। अभी तक मुंह और नाक से निकलने वाले तरल के सूक्ष्म कणों के सहारे तीन फीट तक या फिर हाथ व किसी ठोस धरातल के सहारे ही वायरस के फैलने के प्रमाण मिले हैं। उन्होंने कहा कि इसीलिए आइसीएमआर ने लोगों से शारीरिक दूरी बनाकर रखने और बार-बार हाथ धोने का निर्देश दिया है।

लॉकडाउन खुलने की स्थितियों पर सीएम योगी ने सांसदों से मांगे सुझाव

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

सबका साथ सबका विकास का नारा बुलंद करते रहे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सांसदों और प्रदेश से जुड़े केंद्रीय मंत्रियों से लॉकडाउन खुलने की स्थितियों पर सुझाव मांगा है। मुख्यमंत्री ने यह आशंका भी जताई कि लॉकडाउन खोले जाने की स्थिति में यदि भीड़ जुटी तो सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा।

रविवार को मुख्यमंत्री ने प्रदेश से जुड़े केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों के साथ पांच कालिदास मार्ग स्थित अपने सरकारी आवास से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की। मुख्यमंत्री का सबसे अधिक जोर अभी लॉकडाउन का पालन कराने और लॉकडाउन खोले जाने के बाद के हालात पर था। कहा कि लॉकडाउन को पंद्रह अप्रैल से खोले जाने की तैयारी है। आप लोग सुझाव दें कि कैसे इसे अमल में लाया जाए। ऐसा

योगी आदित्यनाथ फाइल

न हो कि अचानक भीड़ निकल पड़े। ऐसा हुआ तो अब तक की सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। उन्होंने कहा कि आप लोग जो सुझाव देंगे, उसी के अनुसार सरकार अपनी रणनीति बना सकती है। योगी ने सांसदों से आग्रह किया कि वे ठेला, खोमचा, पल्लेदार, रिक्शा, ई-रिक्शा आदि चलाने वाले दिहाड़ी मजदूरों के बैंक खातों को प्रशासन को उपलब्ध कराने में मदद करें ताकि उन्हें एक हजार रुपये की धनराशि दी जा सके। दूसरे राज्यों से घर वापसी करने वालों के राशन कार्ड बनवाने में भी मदद मांगी।

उप्र से कांग्रेस की एकमात्र सांसद और पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी के अलावा सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव और राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव भी प्रदेश से ही सांसद हैं। वह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में शामिल नहीं रहे। वहीं, भाजपा के अधिकांश सांसद इसमें थे।

इनसे किया संवाद : केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी, केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय, केंद्रीय आवास एवं शहरी कार्य राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हरदीप सिंह पुरी, केंद्रीय श्रम एवं रोजगार राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संतोष गंगवार, केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्यमंत्री जनरल वीके सिंह, सांसद डॉ. महेश शर्मा, डॉ. रीता बहुगुणा जोशी, सपा के रेवती रमन सिंह, बसपा के रितेश पांडेय और राम शिरोमणि वर्मा।

चीन से 21 टन कोरोनारोधी मेडिकल सामान भारत पहुंचा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ाई में चीन की मदद स्वीकार करते हुए भारत ने एयर इंडिया के मार्फत चार अप्रैल को चीन से 21 टन मेडिकल सामान, वेंटीलेटर और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) सूट मंगाए हैं। दूसरी तरफ देश के भीतर कोरोना से जुड़ी सामग्री तथा अन्य आवश्क सामान पहुंचाने के लिए विमानों में अधिक स्थान की जरूरतों को देखते हुए नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने एयरलाइंस को विमान के पैसेंजर कंपार्टमेंट में सामान ले जाने की अनुमति भी दे दी है।

कोरोना से जंग में देश के विभिन्न भागों को आवश्यक मेडिकल सामान पहुंचाने के लिए मुफ्त लाइफलाइन उड़ानों के तहत चार अप्रैल तक कुल 116 कार्गो उड़ानों के जरिये 161 टन मेडिकल तथा अन्य सामग्री देश के सुदूरवर्ती इलाकों में पहुंचाई जा चुकी है। इनमें एयर इंडिया ने सर्वाधिक 46 उड़ानें, जबकि उसकी सहायक अलायंस एयर ने 40, भारतीय वायुसेना ने 22, इंडिगो ने छह तथा स्पाइसजेट ने दो लाइफलाइन उड़ाने भरी हैं।

लाइफलाइन उड़ानों के जरिये जो सामग्री पहुंचाई जा रही हैं, उनमें कोविड-19 संबंधी एंजाइम, टेस्टिंग किट, पीपीई, मास्क, दस्ताने आदि शामिल हैं। इन वस्तुओं को पहुंचाने के लिए दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद तथा बेंगलुरु में हब बनाए गए हैं, जबकि गुवाहाटी, डिब्रूगढ़, अगरतला, आइजल, दीमापुर, इंफाल, कोयंबटूर, तिरुअनंतपुरम, भुवनेश्वर, रायपुर, रांची, श्रीनगर, लेह, पोर्ट ब्लेयर, कोच्चि, विजयवाड़ा तथा पणजी आदि शहरों को सामान भेजा जा रहा है।

मुफ्त लाइफलाइन उड़ानों के अलावा प्राइवेट एयरलाइन कॉमर्शियल आधार पर अलग से कार्गो उड़ानें भर रही हैं। इनके तहत अब तक स्पाइसजेट ने 166 उड़ानों के जरिये 2,23,241 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए 1327 टन सामान देश-विदेश के विभिन्न शहरों को पहुंचाया है। इनमें 46 इंटरनेशनल उड़ाने शामिल हैं। इस क्रम में ब्लूडार्ट ने 52 उड़ानों से 761 टन सामान जबकि इंडिगो ने आठ उड़ानों से तीन टन सामान पहुंचाया है।

हिंदू का 'ह' और मुसलमान का 'म' मतलब हम : दीपांकर महाराज

कोरोना पर बोले मुस्लिम धर्मगुरु, नमाज के लिए जिंदा रहना जरूरी

जासं, सहारनपुर : कोरोना संकट के बीच रविवार को ध्यान गुरु स्वामी दीपांकर महाराज ने दारुल उलूम देवबंद पहुंचकर मोहतमिम मुफ्ती अबुल कासिम नौमानी से मुलाकात की। दोनों धर्मगुरुओं ने एकजुट होकर इस वैश्विक बीमारी से लड़ने का आह्वान किया। दारुल उलूम के अतिथिगृह में स्वामी दीपांकर ने कहा कि वर्तमान में जरूरत इस बात की है कि हिंदू का 'ह' और मुसलमान का 'म' मिलाकर हम बनाया जाए ताकि पूरी दुनिया देख सके कि यहां रहने वाले 130 करोड़ लोग सबसे पहले भारतीय हैं।

मोहतमिम नौमानी ने बताया कि वह लगातार अपील कर लोगों से शासन-प्रशासन के सहयोग का आह्वान कर रहे हैं। उन्होंने जमात के लोगों से भी स्वयं स्वास्थ्य परीक्षण कराने की अपील की है। कोरोना से इस जंग में दारुल उलूम पूरी तरह सरकार और देशवासियों के साथ है।

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **सभी धर्मगुरुओं ने की योगी की सराहना, साथ देने का किया वादा**
- **पादरी का भी आश्वासन, गिरजाघरों में नहीं मनेगा गुड फाइडे**

धर्म के नाम पर लॉकडाउन तोड़ने वाले तब्लीगी जमाती और जबरन सामूहिक नमाज पढ़ने पर आमादा लोग न जाने किस बहकावे में हैं। उनके धर्मगुरु तो सरकार के साथ मिलकर कोरोना को मात देना चाहते हैं। वे लॉकडाउन का पालन हर हाल में कराने के पैरोकार हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में मुस्लिम धर्मगुरुओं ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जिंदा रहेंगे, तभी तो नमाज पढ़ सकेंगे। यही नहीं, उन्होंने योगी के प्रयासों की भरपूर सराहना करते हुए हरसंभव सहयोग का वादा भी किया। मुख्यमंत्री ने भी सभी धर्मगुरुओं से सुझाव मांगे।

कोरोना और लॉकडाउन की चुनौतियों को मात देने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर सभी धर्मों को इस जीवनरक्षक मुहिम से जोड़ने का प्रयास किया। अपने सरकारी आवास से प्रदेशभर के धर्मगुरुओं से संवाद करते हुए योगी ने कहा कि कोरोना संक्रमण की बीमारी है, जो पंथ, मत, संप्रदाय, धर्म और मजहब नहीं देखती। इसके लिए जरूरी है कि हम सभी बिना किसी भेदभाव के एक साथ इसका मुकाबला करें। योगी ने कहा कि अमेरिका, इटली, स्पेन, ईरान जैसे देशों में इस वायरस ने काफी नुकसान पहुंचाया है। भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लिए गए निर्णय व उपायों से देश में इस पर अब तक नियंत्रण बनाया जा सका है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा समय पर उठाए गए कदमों के कारण ही देश में कोरोना सेकंड स्टेज पर थम गया है। इतना ही नहीं, दुनिया की बड़ी ताकतें अब भारत की ओर सहयोग की दृष्टि से देख रही हैं।

> जैसा आप कर रहे हैं, उससे अच्छा कुछ नहीं हो सकता। हमारा व संप्रदाय के अन्य धर्मगुरुओं की कोरोना रोकथाम व बचाव संबंधी एक ऑडिओ क्लिप बनाकर उसे मस्जिदों व मुस्लिम बाहुल इलाकों में सुनाया जाए। मस्जिदों से हर 4-5 घंटे पर यह ऑडिओ क्लिप चलाई जाए। हर वार्ड में कोरोना वारियर्स कमेटी का गठन किया जाए।
>
> **-मौलाना खालिद रशीद महली, लखनऊ**

> सभी धर्मगुरु अपने-अपने स्तर पर लॉकडाउन के प्रति लोगों को जागरूक करें। मौजूदा वक्त में हमें पुलिस का सहयोग करते हुए इस काम को खुद करना चाहिए।
>
> **-मंहत प्रो. विश्वंभर नाथ मिश्र संकट मोचन मंदिर, वाराणसी**

> जिन लोगों को क्वारंटाइन किया जाए, उन्हें यह न लगे कि उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार किया है। संदिग्ध या संक्रमित लोगों को क्वारंटाइन करने के लिए स्थानीय जनप्रतिनिधियों, धर्मगुरुओं आदि को विश्वास में लेने पर यह काम और आसान होगा। अलगाववाद पैदा करने वाली खबरों पर सख्ती से रोक लगानी चाहिए। **-मौलाना मसूद मदनी, सहारनपुर**

> आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। कुरान में इंसानियत की हिफाजत की बात को प्रमुख रूप से बताया गया है। नमाज के लिए जरूरी जिंदा रहना और जिंदा रहने के लिए डॉक्टरों व हुकूमत के सुझाव को मानने में ही सबकी भलाई है।
>
> **-कल्बे जव्वाद, शिया धर्मगुरु**

> ईसाई धर्म में यह एक मुख्य सप्ताह होता है, जिसमें गुड फ्राइडे भी शामिल है। फिर भी प्रशासन व शासन की पहल पर कोरोना की रोकथाम के लिए ईसाई धर्म के लोग किसी भी प्रकार का आयोजन नहीं करेंगे। सोशल डिस्टेंसिंग पर अमल करेंगे।
>
> **-फादर मून लाजरस, आगरा**

तबलीगी जमात ने बदली परिस्थिति : योगी ने कहा कि प्रदेश स्तर पर भी कई प्रयास किए गए हैं, जिसके सार्थक परिणाम आ रहे थे। हालांकि, तब्लीगी जमात के कारण अचानक कुछ परिस्थितियां बदली हैं। इसके बाद भी हमारा नियंत्रण बना हुआ है। योगी ने कहा कि धर्मगुरुओं का अपने समाज पर गहरा असर होता है। इस कारण सभी को आमंत्रित कर उनका सहयोग मांगा गया है। योगी ने कहा कि सभी अपने सुझाव मौखिक व लिखित रूप में दे सकते हैं।

हर जिले में बनेगी टेस्टिंग लैब : प्रयागराज में संगमतट स्थित हनुमान मंदिर के मंहत नरेंद्र गिरी ने हालात की जानकारी दी। इस मौके पर निर्मोही अंखाड़े से महंत और सिख धर्म गुरु जोगिंदर सिंह ने भी अपनी बात रखी। अयोध्या से धर्मगुरुओं ने सुझाव दिया कि रामनगरी में देश-विदेश से लोगों का आवागमन होता है। इसके लिए जरूरी है कि यहां एक टेस्टिंग लैब की स्थापना की जाए। इस पर योगी ने आश्वासन दिया कि सरकार हर जिले में लैब खोलने की तैयारी कर रही है।

ईएफवी टेक्नोलॉजी से हारेगा कोरोना

पूरी दुनिया में कोरोना वायरस को हराने को लेकर शोध किए जा रहे हैं। बायोकेमिकल मॉडल (आधुनिक चिकित्सा पद्धति) ने जहां कोरोना वायरस के खिलाफ रासायनिक पदार्थों को लड़ाई का आधार बनाया है, वहीं एक वैकल्पिक पद्धति भी सामने आई है। पदार्थों की तरंगों की आवृत्ति के आधार पर ईएफवी (इलेक्ट्रो-फ्रीक्वेंसी-वाइब्रेशन) मॉडल आया है। इसमें दावा किया गया है कि कुछ दिनों तक 61 मिनट का समय खर्च करके कोई भी संक्रमित व्यक्ति कोरोना वायरस से मुक्ति पा सकता है। वो भी बिना किसी दवा के। सिर्फ 21 मिनट तक कुछ अनुनाद आधारित आवाजें सुननी होगी।

क्या है ईवीएफ

साउंड थेरेपिस्ट इक्वांक आनखा ने इस मॉडल को प्रस्तावित किया है। उन्होंने मशहूर वैज्ञानिक निकोला टेस्ला के सिद्धांत को आधार बनाया है। टेस्ला ने कहा था, 'यदि आप यूनिवर्स के रहस्य जानना चाहते हैं तो ऊर्जा, तरंग और आवृत्ति पर फोकस कीजिए।' इसी आधार पर इक्वांक का मानना है कि हर पदार्थ की अपनी आवृत्ति होती है, जिस पर उसकी तरंगें अनुनाद करती हैं। शोध में पाया गया कि कोरोना के जीनोम, पॉलिमर्स और प्रोटीन एक खास आवृत्ति पर अनुनाद करते हैं। मानव शरीर की भी अपनी आवृत्ति होती है और अनुनाद भी।

मिला आधार

अमेरिका में गिलाड साइंसेज की दवा रेमडेसिर को कोरोना के खिलाफ कारगर माना गया है। पहला मानव ट्रायल भी सफल रहा है। अनुनाद मॉडल के शोधकर्ताओं ने माना कि रेमडेसिर के अणु भी कोरोना की तरह ही तीन आवृत्तियों पर अनुनाद करते हैं। इसके अलावा अभी कोरोना के इलाज में इस्तेमाल की जा रहीं क्लोरोक्वीन की आवृत्ति भी कोरोना की आवृत्ति के ही आसपास है।

कैसे करती है काम

हमारा शरीर इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक पल्स पर काम करता है। हमारा दिल जब सही आवृत्ति पर नहीं धड़कता है तो एक इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक डिवाइस पेसमेकर लगाई जाती है, जो सही इलेक्ट्रॉनिक पल्स भेजकर दिल को सही आवृत्ति पर काम करने को कहती है। हमारे शरीर की भी अपनी आवृत्ति और अनुनाद होते हैं। कोई भी वायरस, जो मूलतः एक कोशिका होती है, अपनी आवृत्ति और अनुनाद हमारे शरीर पर थोप देता है।

अपने अनुनाद के जरिये ही वायरस जहर फैलाता है और शरीर को कमजोर करता है। ईएफवी मॉडल मानता है कि कोरोना के तीन मूल हिस्सों जीनोम (जैविक पदार्थ, पॉलिमर्स और प्रोटीन के जोड़ को बाहर से विरोधी आवृत्ति का अनुनाद देकर तोड़ा जा सकता है। यदि वायरस का जोड़ ही टूट जाएगा तो वायरस अपने आप निष्प्रभावी होकर मर जाएगा।

तीन आवृत्तियों से होता है जोरदार वार

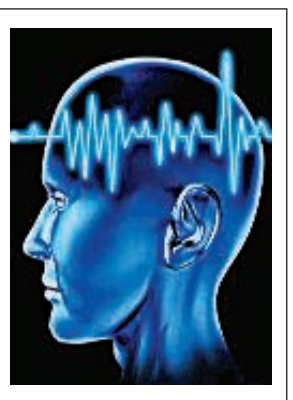

शोधकर्ताओं ने जीनोम, पॉलिमर्स और प्रोटीन के तीन अलग-अलग आवृत्ति व अनुनाद खोज निकाले हैं। इनकी काट के लिए भी तीन आवृत्ति के अनुनाद पहचाने गए हैं। हेडफोन के जरिये साउंड वेव संक्रमित मरीज को भेजी जाती है, जो ब्रेनवेव ट्रांसमिशन के सिद्धांत को पालन करते हुए शरीर में फैल जाती है। यह आवाज साइनसोएडल टोन होती है। यह प्रकृति की मूल आवृत्तियां व अनुनाद हैं। आइसोक्रोनिक आवाजों को संगीत में ढाला जाता है, जिसे हम लोग सुन सकें। इस दौरान इंसान की दिमागी गतिविधियों पर सेंसर के जरिये निगाह रखी जाती है। साथ ही ईसीजी और एलएफटी (लीवर फंक्शन टेस्ट) किया जाता है, ताकि संक्रमित व्यक्ति के स्वास्थ्य की जानकारी मिल सके।

तीन डोज और 61 मिनट

हर दिन महज 61 मिनट का समय संक्रमित मरीज का इस थेरेपी में लगता है। सात-सात मिनट तक हेडफोन के जरिये रोधी आवृत्ति व अनुनाद की इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक तरंगें दिमाग को भेजी जाती है। हर बार इन आवाजों को काम करने का मौका देने के लिए 20-20 मिनट का ब्रेक दिया जाता है, ताकि शरीर बाहर से भेजे गए इस इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक कोड को समझ सके और उस पर प्रतिक्रिया कर सके।

ईएफवी के फायदे

चिकित्सा का यह मॉडल किसी प्रकार का साइड इफेक्ट पैदा नहीं करता है। इससे शरीर में किसी तरह का जहर पैदा नहीं होता है, जैसा आधुनिक चिकित्सा मॉडल में दवाओं के असर के कारण होता है। शोधकर्ताओं का दावा है कि इस मॉडल से किसी तरह का नुकसान संक्रमित व्यक्ति को नहीं होता है।

सीडीआरआइ और आइआइटीआर में जांच के लिए तैयारियां पूरी

हारेगा कोरोना ▶ विपक्ष के आरोपों को संस्थानों के वैज्ञानिकों ने नकारा

केमिकल व अन्य जरूरी सामान मिलते ही शुरू की जाएगी जांच

रूमा सिन्हा, लखनऊ

कोरोना वायरस की जांच को लेकर विपक्ष द्वारा कहा जा रहा है कि देश में इसकी जांच कम की जा रही है। यदि ज्यादा लोगों की जांच की जाए तो संभवतः कोरोना से संक्रमित लोगों का आंकड़ा बढ़ सकता है। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआइ) और भारतीय विश्व विज्ञान अनुसंधान संस्थान (आइआइटीआर) के वैज्ञानिक इससे सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) द्वारा इस संबंध में समय रहते हर जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। भारत में अभी कम्युनिटी स्प्रेड नहीं है। ऐसे में हमारे यहां की जा रही जांचों की संख्या कम नहीं है। बीते एक सप्ताह में ही हजारों जांचें की गई हैं।

साथ ही आइसीएमआर लगातार इस प्रयास में भी है कि ज्यादा से ज्यादा लैब में कोरोना की जांच सुविधा उपलब्ध हो। इस

प्रतीकात्मक

कड़ी में सीएसआइआर के महानिदेशक ने भी अपनी प्रयोगशालाओं को जांच के लिए तैयार होने के निर्देश दिए हैं। इस कड़ी में सीडीआरआइ व आइआइटीआर लैब में जांच के लिए तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। सीडीआरआइ में वायरोलॉजी पर काम पहले से ही होता है।

वहीं, आइआइटीआर ने भी अपने वैज्ञानिकों को किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू) के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा ट्रेनिंग पूरी करवा दी है। दोनों ही लैब में आइसीएमआर के प्रोटोकॉल के तहत लॉजिस्टिक के लिए ऑर्डर दिए जा चुके हैं और जैसे ही किट व अन्य जरूरी सामान की आपूर्ति होती है, यहां कोरोना की जांच का कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

आइआइटीआर के निदेशक डॉ. आलोक धावन ने बताया कि इस कार्य के लिए एक अलग लैब तैयार की जाएगी। इस संबंध में सोमवार को उन्होंने इंजीनियर और साइंटिस्ट की मीटिंग रखी है। उनका कहना है कि पीपीई किट के लिए आर्डर दिए जा चुके हैं। साथ ही आइसीएमआर द्वारा स्वीकृत डायग्नोस्टिक किट की भी व्यवस्था की जा रही है। जैसे ही जरूरी सामान उपलब्ध होता है, कोरोना वायरस की जांच शुरू कर दी जाएगी।

सीडीआरआइ के वैज्ञानिक बताते हैं कि सीएसआइआर दिल्ली में अधिकारी लगातार भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के संपर्क में हैं, क्योंकि कुछ सामान अमेरिका से भी आना है। ऐसे में यह कोशिश की जा रही है कि जल्द से जल्द सामान की आपूर्ति हो सके। जिससे सीएसआइआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में जांच का काम शुरू हो सके। सीएसआइआर की हैदराबाद और नई दिल्ली की लैब पहले से ही जांच का कार्य कर रही हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि कोरोना वायरस नया है, जिसके बारे में अभी बहुत ज्यादा जानकारी नहीं है। ऐसे में बायोसेफ्टी को लेकर भी पूरे एहतियात बरतने की आवश्यकता है।

झारखंड के पहले सीएम बाबूलाल मरांडी लॉकडाउन का सख्ती से कर रहे पालन

...अब घर ही है पूरी दुनिया

ऐसे बिताया दिन

प्रदीप सिंह ● रांची

जीवन में पहली बार इतना खाली वक्त मिला है। सच कहूं तो मैंने कभी एक छत के नीचे दो रातें नहीं गुजारीं। लगातार यात्राएं करना और लोगों से मिलना-जुलना मेरी दिनचर्या का हिस्सा रहा है, लेकिन कोरोना वायरस से बचाव को लेकर बरती जाने वाली सतर्कता के मद्देनजर मैंने खुद को पूरी तरह अपने घर के भीतर बंद कर लिया है। यही समझ रहा हूं कि मेरा घर ही पूरी दुनिया है और यहां से बाहर पांव रखना वर्जित है, प्रतिबंधित है। यही आत्म अनुशासन सभी से अपेक्षित है। तभी हम इस भयंकर महामारी का खात्मा कर पाएंगे। यह कहना है झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी का।

मरांडी बताते हैं कि भीतर-भीतर उनको भी घर में लगातार बंद रहना शुरू में कठिन लगा रहा था, लेकिन समय का सदुपयोग करना शुरू किया तो अब सुखद लग रहा है। जब मौका मिला, अहाते में टहलने निकल पड़ते हैं। अध्ययन की ललक भी पूरी हो रही है। इस महामारी के कारण देश-दुनिया में क्या घटित हो रहा है, इसकी जानकारी जुटाकर बच्चों संग शेयर कर रहे हैं। इसका परिणाम यह

अपने आवास में टहलते बाबूलाल मरांडी।

समय का सदुपयोग

- फोन बना सहारा, टहलने, पढ़ने व टीवी देखने में बिता रहे वक्त
- बच्चे साथ में अखबार पढ़कर खबरों पर करते हैं चर्चा

अखबार खबरों का विश्वसनीय माध्यम

बाबूलाल मरांडी ने कहा कि इस आपात स्थिति में अफवाह से समाज को बचाना अतिआवश्यक है। समाचारों का सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत अखबार है और लोग इसकी सूचना पर विश्वास करें। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी प्रमाणित किया है कि अखबार पूरी तरह सुरक्षित है। ऐसे में लोग फुर्सत का समय अखबार पढ़कर बिताएं।

हुआ कि बच्चे अब समाचार पत्र पढ़ने में पूरी रुचि दिखा रहे हैं और विभिन्न खबरों पर उनके साथ चर्चा भी कर रहे हैं। वह बताते हैं कि अब खुद को फिट रखने के अलावा बच्चों के साथ वक्त बिताने का मौका मिल रहा है। सुबह उठने के बाद कैंपस में ही टहलते हैं। सुरक्षा बलों की सख्त निगरानी आवास पर है, ऐसे में सुरक्षा बल के जवानों के साथ-साथ अन्य कर्मचारियों से भी एक सुरक्षित दूरी बना रखी है। आवास में स्वच्छता बरकरार रहे, उसका पूरा ध्यान खुद रखते हैं। मुलाकात करने वालों की तादाद लगभग नहीं के बराबर है। ज्यादातर लोगों से संपर्क फोन के माध्यम से ही हो रहा है।

लॉकडाउन नहीं मानने की मिल रही जानकारी के मद्देनजर मरांडी कहते हैं कि इसका पालन तो हर हाल में करना होगा। जब समस्या विश्वव्यापी है तो इस वायरस की चेन को तोड़ने का यही एकमात्र तरीका है। उन लोगों के बारे में सोचना चाहिए, जो रोज काम कर पेट पालते थे।

पीएमओ से लगाई गुहार तो राशन लेकर पहुंचे बीडीओ

आप रहें घर पर हम आएंगे दर पर

जासं, पश्चिमी चंपारण : बिहार में पश्चिमी चंपारण जिले के मल्दा गांव निवासी एक युवक ने लॉकडाउन में भुखमरी से निजात दिलाने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) से गुहार लगाई। इसका असर यह हुआ कि पांच दिन बाद रविवार दोपहर सरकारी वाहन से 20 किलो चावल और 20 किलो गेहूं लेकर प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) राघवेंद्र त्रिपाठी पहुंच गए। वेद प्रकाश गौड़ के दरवाजे पर जब बीडीओ की गाड़ी रुकी तो सभी चौंक गए। पीएमओ से वेद प्रकाश की गुहार रंग लाई।

- बिहार के पश्चिमी चंपारण के एक गांव का मामला
- राशन मिलने के बाद परिवार ने पीएम को दिया धन्यवाद

पांच दिन पहले किया था फोन : वेद प्रकाश के पिता अवधेश प्रसाद गौड़ का तीन साल पूर्व निधन हो गया। घर में मां सुशीला देवी, दो भाई और दो बहनें हैं। 26 अप्रैल को एक बहन की शादी तय है। सुशीला देवी भूंजा बेचकर परिवार चलाती हैं। लॉकडाउन में कारोबार बंद हो गया। भुखमरी की स्थिति आ गई। पांच दिन पूर्व वेदप्रकाश ने फोन कर पीएमओ को स्थिति की जानकारी दी। बताया कि घर में एक सप्ताह का राशन शेष है। अगर लॉकडाउन बढ़ा तो भुखमरी की नौबत आजाएगी। पीएमओ से उसका नाम, पता लिया गया। पांच दिन बाद नरकटियागंज बीडीओ अनाज लेकर पहुंच गए।

आदेश मिला और पहुंचा दिया अनाज : बीडीओ ने बताया कि जिला पदाधिकारी से आदेश मिला कि पीएमओ में एक युवक ने राशन के लिए गुहार लगाई थी। इसके मद्देनजर जरूरतमंद के घर 20 किलो चावल और 20 किलो गेहूं पहुंचा दिया गया। बीडीओ ने वेदप्रकाश को अपना मोबाइल नंबर भी दिया और कहा, कोई समस्या हो तो सूचित कीजिए। वेदप्रकाश और उसकी मां ने प्रधानमंत्री और प्रशासन का आभार जताया है।

अमिताभ बच्चन देंगे एक लाख दैनिक कामगारों को मासिक राशन

मुंबई, प्रेट्र : महानायक अमिताभ बच्चन ऑल इंडिया फिल्म इंप्लाइज कंफेडरेशन से जुड़े एक लाख दैनिक कामगारों को मासिक राशन उपलब्ध कराएंगे।

रविवार को जारी बयान के अनुसार, 'महामारी के कारण पैदा हुई वर्तमान स्थितियों को देखते हुए अमिताभ बच्चन ने देशभर के एक लाख दैनिक कामगारों को मासिक राशन उपलब्ध कराने का फैसला किया है। इस काम में सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया और कल्याण ज्वेलर्स

अमिताभ बच्चन। फाइल

मदद करेंगे।' हालांकि, यह नहीं बताया गया है कि इन कामगारों को मासिक राशन कबतक दिया जाएगा। सोनी पिक्चर्स के एमडी व सीईओ एनपी सिंह ने कहा कि सीएसआर के तहत अमिताभ बच्चन के साथ काम करने का फैसला किया गया है। इसके अलावा अमिताभ शॉर्ट फिल्म 'फैमिली' में भी दिखाई देंगे। प्रसून पांडेय द्वारा निर्देशित इस फिल्म में घर में रहने, साफ-सफाई व शारीरिक दूरी के महत्व को दिखाया गया है। इसमें रजनीकांत, रणबीर कपूर, प्रियंका चोपड़ा, आलिया भट्ट, चिरंजीवी, मोहनलाल, मामूट्टी, सोनाली कुलकर्णी, शिव राज कुमार, प्रसेनजीत चटर्जी और दिलजीत दोसांझ भी दिखाई देंगे। इसका प्रसारण सोमवार को सोनी टीवी पर होगा।

अलीगढ़ में दुनिया की पहली कोविड-19 लाइब्रेरी

संतोष शर्मा, अलीगढ़

लॉकडाउन में कुछ नया कर दिखाने वालों का यह अंदाज निराला है। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) में मौलाना आजाद लाइब्रेरी के पूर्व लाइब्रेरियन व लाइब्रेरी इन्फॉर्मेशन साइंस के पूर्व चेयरमैन प्रो. शबाहत हुसैन ने कश्मीर के डॉ. रुम्मन गुल के साथ कोविड-19 होम लाइब्रेरी बनाई है। इसमें कोरोना वायरस संक्रमण से बचाव के टिप्स, पाठ्यसामग्री, उपन्यास, मनोरंजन, पेड़-पौधे, योगा, पालतू जानवरों की जानकारी का खजाना है।

कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 मार्च को जनता कर्फ्यू का एलान किया था। प्रो. शबाहत हुसैन ने उसी दिन होम लाइब्रेरी पर काम शुरू किया। इसमें एएमयू से पीएचडी करने वाले डॉ. रुम्मन गुल को साथ लिया। डॉ. गुल कश्मीर में सरकारी सेवा

इस तरह की पहली लाइब्रेरी है। जिस पर लोग घर बैठे कई तरह की जानकारी ले सकते हैं। लॉकडाउन में लोग बेहतर इस्तेमाल कर सकते हैं।

- डॉ. मोहम्मद यूसुफ, लाइब्रेरियन, मौलाना आजाद लाइब्रेरी, अलीगढ़।

प्रतीकात्मक

में हैं। लॉकडाउन होने के बाद लाइब्रेरी को सामग्री से सजाया गया। लाइब्रेरी में कोरोना-19 समाचार, शिक्षा, उपन्यास, कविता, हॉबीज, साइबर लाइब्रेरी नाम से आइकॉन हैं। हर आइकॉन में महत्वपूर्ण सामग्री है। प्रो. शबाहत के अनुसार लाइब्रेरी को पांच दिन पहले लॉन्च किया गया था। इसके 24 घंटे में ही 1148 लोगों ने देखा। गूगल ने रजिस्टर्ड कर लिया है। लाइब्रेरी से https#://www.homelibrarycovid19.com पर जुड़ सकते हैं।

उपन्यास व कविताओं का संग्रह : लाइब्रेरी में दो बाल्टी पानी, कर्मपथ पर, कुबेर, दो अजनबी और वो आवाज, आघात, ए मौसम की बारिश, निश्छल, आत्मा की प्रेम पिपासा, कभी अलविदा न कहना, फिर से, कशिश, भारत का सुपर हीरो समेत कई प्रमुख उपन्यास हैं। कई प्रमुख कवियों की रचनाएं भी हैं। हिंदी, अंग्रेजी व उर्दू में इन्हें पढ़ा जा सकता है। दैनिक जागरण समेत अन्य अखबार भी मिल जाएंगे।

डिश बनाने से लेकर लोकगीत भी : महिलाएं डिश बनाना सीख सकती हैं। मनोरंजन के लिए लोकगीत के वीडियो भी हैं। भारत में कितने प्रकार के पालतू पशु-पक्षी हैं, ये जानकारी भी है।

योग का असर, कोरोना हुआ बेअसर

कोरोना के विजेता

इच्छाशक्ति हो तो किसी भी परिस्थिति में जीत संभव है। कठिन वक्त में दृढ़शक्ति से जिंदगी संभव है। एक उदाहरण नोएडा के सेक्टर-74 स्थित सुपरटेक केपटाउन निवासी 42 वर्षीय सौरभ गुप्ता का जिन्होंने चिकित्सीय सलाह और योग से एक वायरस को मात दे दी। महज बारह दिनों में कोरोना को हराकार घर वापसी की। सैलून संचालक सौरभ ने 18 फरवरी से 8 मार्च तक पत्नी के साथ इस्तांबुल, लंदन, पेरिस, रोम व स्विट्जरलैंड की यात्रा की और नौ मार्च को स्वदेश आ गए। लौटने के दो-तीन दिन बाद ही उनकी तबीयत बिगड़ गई और फिर वो क्वारंटाइन हो गए। इसके बाद उन्होंने जांच कैसे कराई और कैसे लड़ी ये लड़ाई, पढ़िए कोरोना पर उनकी जीत की कहानी, उन्हीं की जुबानी :

दिनचर्या में था शामिल

- अनुलोम-विलोम।
- कपालभाति।
- सूर्य नमस्कार।

योग ने बढ़ाई मन की शक्ति

क्वारंटाइन होने के बाद भी तबीयत ठीक न होने पर चार मार्च को पत्नी के साथ जिम्स पहुंचकर जांच कराई और भर्ती हो गए। 17 मार्च को रिपोर्ट में पत्नी तो नेगेटिव निकली, लेकिन मेरी रिपोर्ट पॉजिटिव निकली। फिर आइसोलेशन वार्ड में चिकित्सकों की सलाह से नियमित दवा ली और योग-आसन शुरू कर दिया। मुझे ऐसा लगा कि दवा जहां शारीरिक शक्ति दे रहा था तो योग मानसिक शक्ति बढ़ा रहा था। योग ने सांस लेने की क्षमता को बढ़ाया और कोरोना का खौफ भी मन से निकल गया।

वीडियो कॉल से रहता था परिवार के संपर्क में

परिवार से दूर रहने का दर्द क्या होता है, इसका अनुभव मुझे आइसोलेशन वार्ड में ही हुआ। एक तरफ जहां परिवार की सेहत को लेकर खुश था, वहीं दूसरी ओर बच्चों से दूरी दिल पर खंजर की तरह चलती थी। उन्हें देखने के लिए व्हाट्सएप पर वीडियो कॉलिंग ही सहारा था। अकेलेपन को दूर करने के लिए फोन ही रास्ता था।

योग पर जोर

योग से कर्मों में कुशलता आती है। मैंने योग व चिकित्सीय जांच से अपने साथ परिवार की जिंदगी बचा ली है। यदि आप भी योगासन को दिनचर्या में शामिल कर लें तो किसी भी बीमारी को दूर भगा सकते हैं बल्कि उसे आने से भी बचा सकते हैं।

● प्रस्तुति : नोएडा से **आशीष धामा**

कोरोना से कैसे लड़ें मनोवैज्ञानिक

डॉ. रचना खन्ना सिंह
(मनोवैज्ञानिक, आर्टिमिस अस्पताल)

ये वक्त है खुशियां ढूंढने का रिश्तों को दें एक मौका

लॉकडाउन के दौरान इस वक्त में लोग एक-दूसरे को ज्यादा समय दे पा रहे हैं और समय की कमी के चलते लंबे समय से दूर रिश्ते एक-दूसरे को ज्यादा समझ पा रहे हैं। लेकिन सभी के साथ ऐसा हो रहा है, यह कहना ठीक नहीं होगा। मनोवैज्ञानिकों की मानें तो होम आइसोलेशन में घरेलू हिंसा का ग्राफ अप्रत्याशित रूप से बढ़ा है। उनके पास ऐसे मामले भी आ रहे हैं जिनमें पुराने मामलों ने भी तूल पकड़ा है। आर्टिमिस हेल्थ केयर इंस्टीट्यूट में मनोवैज्ञानिक व मेंटल हेल्थ प्रोफेशनल डॉ. रचना खन्ना सिंह बता रही हैं कि इस समय कुछ सावधानियां बरतकर विवाद से बचा सकता है, घरेलू हिंसा जैसी घटनाओं पर काबू पाया जा सकता है:

सकारात्मक लोगों से मिलें

आप मान लें कि आपको कुछ दिन ऐसे ही बिताने हैं। ऐसे में जिन लोगों से आपके विवाद हैं उनके सामने न जाएं। परिवार के उन सदस्यों के पास ज्यादा समय बिताएं जो आपको सकारात्मकता देते हों। ऐसे में टकराहट की संभावना खत्म हो जाएगी।

योग और व्यायाम करें

लोगों में व्यक्तिगत कुंठा होती है जिसके कारण वे औरों से भी भिड़ जाते हैं। इस कुंठा से बचने के लिए व्यायाम व योग करें। साथ ही दिन में दो बार एक-एक घंटे कसरत करने से दिमाग में ऐसे केमिकल रिलीज होंगे जिससे कुंठा व नकारात्मकता दूर होगी।

छोटी-छोटी चीजों में खुशियां तलाशें

रूटीन में छोटे-छोटे बदलाव करते रहें। नया काम करने से खुशी मिलेगी। अपना स्पेस लें और उसमें अपने शौकिया काम करें। इससे विवादों व तनाव से आपका ध्यान हटेगा।

नए सिरे से रिश्ते संवारने का अवसर

इस समय आप रिश्तों को एक नया मौका और नए सिरे से संबंधों को स्थापित करने का अवसर दे सकते हैं। पहल मुश्किल जरूर होगी लेकिन परिणाम सुखद होंगे।

ध्यान लगाएं

प्रार्थना का मतलब किसी धर्म से नहीं है बल्कि आप स्वयं बैठकर ध्यान लगाएं। अच्छी बातों का ध्यान करें। इससे नकारात्मक चीजों से आपका ध्यान हटेगा। ऐसा पंद्रह बीच मिनट करें। इन दिनों ऑनलाइन ग्रुप मेडिटेशन कार्यक्रम चल रहे हैं, उन्हें ज्वाइन करें।

● प्रस्तुति : गुरुग्राम से **प्रियंका दुबे मेहता**

दैनिक जागरण

असंभव लगने वाले कार्य भी आत्म-अनुशासन से सिद्ध हो जाते हैं

सतत चौकसी की जरूरत

तब्लीगी जमात की आपराधिक लापरवाही के कारण देश में कोरोना संक्रमित लोगों की संख्या किस कदर बढ़ी, इसका एक प्रमाण यह आंकड़ा भी है कि करीब आठ दिन में कोरोना मरीजों की संख्या दोगुना होने का सिलसिला चार दिन में होने लगा है। इस तथ्य के सामने आने के बाद तब्लीगी जमात का बचाव करने वालों की आंखें खुल जाएं तो बेहतर, क्योंकि वे अभी भी किंतु-परंतु की आड़ लेकर उनकी तरफदारी करने में लगे हुए हैं। इसी के साथ यह भी सामने आ रहा है कि तब्लीगी जमात से जुड़े संदिग्ध कोरोना मरीज स्वास्थ्यकर्मियों से सहयोग करने में आनाकानी कर रहे हैं। यह आनकानी एक प्रकार से समाज और राष्ट्रद्रोह ही है। यह राहत की बात अवश्य है कि तब्लीगी जमात की गैर जिम्मेदाराना हरकत के बाद भी कोरोना संकट काबू में बताया जा रहा है, लेकिन यह समय सतत चौकसी बरतने और कोरोना के संदिग्ध मरीजों की तलाश करने का अभियान तेज करने का है। दुनिया के तमाम देशों और खासकर इटली, स्पेन, अमेरिका, ब्रिटेन आदि में हालात जिस तरह बेकाबू होते जा रहे हैं उसका सबक यही है कि जिंदगी बचाने की इस जंग में सब कुछ झोंक देने की जरूरत अभी भी बनी हुई है। लोगों के बीच यह संदेश नहीं जाना चाहिए कि कोरोना की जंग आसान हो गई है। आज का सच तो यही है कि कोरोना के खिलाफ वह लड़ाई अभी जारी है जिसे तब्लीगी जमात ने और कठिन बना दिया है। शायद इसी कारण कैबिनेट सचिव ने जिला स्तर पर कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने की रणनीति तैयार करने को कहा है। राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह रणनीति कारगर साबित हो। इसी के साथ यह भी सुनिश्चित करने की जरूरत है कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई में स्वास्थ्य तंत्र संसाधनों के अभाव का सामना न करने पाए।

निःसंदेह पहले से ही कमजोर स्वास्थ्य तंत्र को उसकी जरूरत भर के संसाधन उपलब्ध कराना एक कठिन काम है, लेकिन उसे आसान बनाने के हरसंभव कदम उठाने के अलावा और कोई उपाय नहीं। चूंकि अब इसकी जरूरत जता दी गई है कि सभी को मास्क पहनने की आवश्यकता है तब फिर यह भी देखा जाना चाहिए कि वे आम जनता को सहज उपलब्ध हों। जरूरत इसकी भी है कि लोग परेशानी का सामना करते हुए धैर्य बनाए रखें। संयम और अनुशासन का परिचय देना अब हमारी आदत का एक हिस्सा बनना चाहिए, क्योंकि एक तो लॉकडाउन खत्म होने के बाद भी सार्वजनिक मेल-मिलाप से परहेज करने की जरूरत होगी और दूसरे, यह भी एक यथार्थ है कि हमें अभी अर्से तक कोरोना के साये में ही जीना होगा।

कलह से उठते सवाल

एक तरफ कोरोना ने हमारी मुश्किलें बढ़ा रखी हैं वहीं इससे निपटने की राह में समाज के कुछ दुश्मन इस संकट को और बढ़ाने का काम कर रहे हैं। ये इंसानियत के दुश्मन कभी जान बचाने वाले डॉक्टरों, नर्सों व स्वास्थ्यकर्मियों पर हमले कर रहे हैं तो कुछ ऐसे हैं जो सुरक्षा देने वाले पुलिसकर्मियों को निशाना बना रहे हैं। वहीं एक दूसरे पर भी हमले करने से गुरेज नहीं कर रहे हैं। इसमें जमकर बमबाजी व गोलीबारी की गई, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई है। यह घटना बंगाल के वीरभूम जिले की है। जिले के पारुई क्षेत्र में स्थित एक हाईस्कूल को क्वारंटाइन सेंटर बनाने का स्थानीय प्रशासन ने निर्णय लिया था। इसके बाद पूरा इलाका रणक्षेत्र में तब्दील हो गया। पुलिस के साथ संघर्ष शुरू होने के बाद गांव के दो गुटों के बीच झड़प शुरू हो गई, जिसमें जमकर बम व गोली का इस्तेमाल किया गया। यह झड़प करीब एक घंटे तक चलती रही। इस हिंसा में साइफुद्दीन उर्फ सैमबाबू नामक एक ग्रामीण की मौत हो गई। वहीं एक अन्य गंभीर रूप से घायल है।

इस घटना के बाद से पूरे इलाके में तनाव व्याप्त है। हालात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि शनिवार की शाम को शुरू हुई हिंसक घटना देर रात तक जारी रही। पुलिस ने इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की है। हिंसा करने वालों की तलाश की जा रही है। यहां सवाल यह उठ रहा है कि आखिर उक्त इलाके में क्वारंटाइन किस लिए बनाया जा रहा था? इसका सीधा जवाब है लोगों की भलाई के लिए। बावजूद इसके इंसानियत के दुश्मनों को यह सब क्यों नहीं रास आ रहा? क्यों इस बीमारी में भी धर्म का चश्मा लगाकर देखा जा रहा है? सरकार क्वारंटाइन इसीलिए बनवा रही है कि यदि एक व्यक्ति बीमार हो तो उससे अन्य कोई और बीमार न हो जाए। फिर इस तरह का उत्पात क्यों? क्या लोग इतने जाहिल हो गए हैं कि उन्हें अच्छे व बुरे का फर्क नहीं समझ में आ रहा है। एक तो तब्लीगी जमात वालों ने देश के लिए बड़ी मुसीबत पैदा कर दी है। उसके बाद इस तरह की घटनाएं लगातार बढ़ने के बाद यह स्पष्ट हो चुका है कि हमारे देश में कुछ ऐसे तत्व हैं जो भारत और यहां रहने वाले लोगों की भलाई नहीं देख सकते हैं। ऐसे इंसानियत के दुश्मन व राष्ट्र विरोधियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि फिर से कोई इंसानियत का दुश्मन न बने।

उपासना पद्धतियों का मूल उद्देश्य

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

उपासना की कोई भी प्रणाली जो मानवता की हानि की कीमत पर ईश्वर साधना का रास्ता बताती हो वह धर्म नहीं हो सकती

अवधेश राजपूत

दुनिया बीते कुछ महीनों से कोरोना वायरस से उपजी कोविड-19 नामक एक ऐसी महामारी का सामना कर रही है जिसके बारे में कभी सोचा नहीं गया था। बीमारी हो या महामारी उससे लड़ने और निजात पाने के लिए औषधि और चिकित्सकीय साधनों को खोजना, विकसित करना और उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना चिकित्सा विज्ञान का काम है, लेकिन मनुष्य केवल विज्ञान पर जीने वाला प्राणी नहीं है इसलिए वह मानव जीवन के विविध आयामों को अभिलक्ष्य कर मानवता के सामने आई समस्या के समाधान का रास्ता खोजता है। बहुत दिनों बाद दुनिया में किसी आपदा के कालखंड में विज्ञान और धर्म के बीच युद्ध देखने को मिला है। धर्म हो या विज्ञान, दोनों का उद्देश्य श्रेष्ठ मनुष्य की निर्मिति है, लोक कल्याणकारी और परोपकारी जीवन वृत्ति का निर्माण है। इस रास्ते पर धर्म और विज्ञान में कोई विरोध नहीं है। यहां धर्म का आशय पंथ, मत-मजहब, उपासना पद्धति से है।

भारत सहित दुनिया के तमाम देश जब एक अनजाने, अपरिचित और भयावह वायरस से समग्र मानव जाति को बचाने के रास्ते तलाश रहे हैं तो इस तलाश में मत-मजहब-पंथ को साधक बनना चाहिए, बाधक नहीं। कभी-कभी मत-मजहब-पंथ विज्ञान के माध्यम से मनुष्य के कल्याण के यत्न के सामने बाधक बनकर खड़े हो जाते हैं। उपासना की कोई भी प्रणाली जो मानवता की हानि की कीमत पर ईश्वर साधना का रास्ता बताती है, वह धर्म नहीं हो सकती। धर्म तो सबसे पहले मनुष्य की रक्षा है, लेकिन ऐसा होता हुआ नहीं दिखाई दे रहा है।

कोई सौ वर्षों से मान लिया गया था कि धर्म और विज्ञान में युद्ध समाप्त हो गया है और दोनों के बीच यह सहमति बन गई है कि मनुष्य और उसका हित सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, पर इसके पिछले 20-25 वर्षों में अपवाद भी देखने को मिले हैं। जो अफगानिस्तान में हुआ, जो सीरिया-इराक में हुआ और उसके पहले जो ईरान में हुआ उस सबको सामने रखकर विचार करें तो कभी-कभी यह लगने लगता है कि यह विज्ञान के विरुद्ध जिहाद का कालखंड है, लेकिन क्या यह धर्म का सत्य है? ध्यान रहे कि जब वैज्ञानिक समाज की निर्मिति के रास्ते में उपासना पंथ की जीवन प्रणाली बाधा बनकर खड़ी होती है तो वह प्रतिगामिता की ओर ले जाती है।

यदि भारतीय संदर्भों में विचार किया जाए तो हिंदू और मुसलमान के रूप में दो सभ्यताओं की दृष्टि का प्रतिपादन निहित स्वार्थों के तहत किया गया और अब वह इतनी गहरी पैठ बना चुका है कि राज्य की लोक कल्याणकारी नीति हो, शिक्षा की मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया हो, विज्ञान और तकनीक के द्वारा मनुष्य के जीवन को सरल-सुखद बनाने का यत्न हो, उसे धर्म विरुद्ध देखा जाने लगा है। वस्तुतः यह धर्मोन्माद है। यह धर्म के क्षरण का कालखंड है। भारतीय संस्कृति में यह 'कलिः शयानो संजाति' अर्थात कलि में धर्म सोया हुआ चलता है, के रूप में व्याख्यायित है। बंद आंखों से यथार्थ और सत्य का प्रकाश नहीं दिखता। वहां तो गहन अंधेरा होता है। धर्म के नाम पर विज्ञान का प्रतिरोध और विज्ञान के नाम पर धर्म की अवमानना ये दोनों मनुष्य को एक ही प्रकार के अंधकार में ले जाते हैं-अज्ञानता और जड़ता के अंधकार में। आज कोरोना के भयावह संकट में इसी अंध धार्मिकता की गहरी बैठी हुई सामाजिक दृष्टि ने देश को अकल्पनीय संकट में डाल दिया है।

धर्म संकटों से त्राण दिलाने का रास्ता है। उपासना पद्धति भेद, ईश्वर के निराकार-साकार होने के भेद के होते हुए भी धर्म इस एक दृष्टि से अभेद रखता है कि मनुष्य का कल्याण और परोपकार प्रत्येक मानव का साध्य है। एक धार्मिक मनुष्य ऐसा कुछ नहीं कर सकता कि उसके पड़ोसी को दुख पहुंचे या उसका जीवन संकट में आए। धर्म के किसी प्रारूप, संप्रदाय के द्वारा ऐसा होता दिखाई दे तो वह धर्म नहीं है, धर्माडंबर है। धर्माचरण के नाम पर मनुष्य के जीवन को संकट में डालना, उसकी प्रगति पथ में मृत्यु, रोग और विपत्ति के कांटे बोना वस्तुतः ओल्ड टेस्टामेंट से लेकर कुरान तक और वेदों से लेकर पुराण तक में जिस शैतानी या राक्षसी सभ्यता की चर्चा की गई है, उसको प्रशस्त करना है। धर्म का रास्ता तो तप, त्याग और परोपकार का रास्ता है, वह करुणा पूरित पथ है। धर्म की भूमिका वस्तुतः विज्ञान और तकनीक पर उस सतोगुणी अंकुश की है जिसके दबाव में विज्ञान राक्षसी वृत्ति की ओर यानी मानवता के संहार की ओर न बढ़े। जब धर्म की ओट में ही ऐसा होता दिखाई दे तो जाहिर है कि यह अत्यंत कठिन समय है। जब पाखंड धर्माचरण बन जाए तो वह सांस्कृतिक जीवन को दूषित कर देता है।

धर्म का मूल तत्व आध्यात्मिकता है जो मनुष्य होने के मूल उद्देश्य जैसे सात्विक जीवन, प्रकृति के साथ तादात्म्य, पर्यावरण की सुरक्षा यानी जीवन के लक्ष्य की ओर हमें आगे बढ़ाती है। धर्म तो संस्कृतिकरण है। वह सभ्यता के समुद्र से गाहे-बगाहे निकलने वाले तकनीकजन्य विष का शमन करने का साधन है। धर्म दुनियावी स्तर पर मानव मेधा के द्वारा विज्ञान और तकनीक के सहयोग से उपलब्ध कराए गए संसाधनों का सबके कल्याण में उपयोग किए जाने के पथ का प्रतिपादन है। धर्म वह नहीं है जो विज्ञान के विरोध में, सभ्यता और संस्कृति के विरोध में खड़ा हो। धर्म तो वह है जो विज्ञान और तकनीक को मानवीय और लोक कल्याणकारी बनाता है। यह तभी संभव है जब धर्म परोपकार और लोक कल्याण पर आधारित हो और स्व से ऊपर उठते हुए मनुष्य को सबके हित में सोचने वाले के रूप में रूपांतरित करे। यदि कोई तब्लीग, कोई मत, कोई पंथिक समूह इस रास्ते से अलग जाता है तो वह अधर्म के रास्ते का निर्माण करता है।

मनुष्य ईश्वर की अनुपम और श्रेष्ठतम कृति है। मनुष्य को दुख देने का कोई यत्न वस्तुतः ईश्वर के खिलाफ खड़ा होना है। यह न उपासना है न बंदगी। उपासना का कोई भी रास्ता यदि इस श्रेष्ठतम कृति और श्रेष्ठतम कर्म के लिए संभावनाओं की निर्मिति के प्रयास में बाधा बनता है तो वह अधार्मिक कर्म है। धर्म दया, करुणा और उपकार से परिपूर्ण समाज की सृष्टि के लिए अद्भुत ईश्वरीय विधान है। इन सद्गुणों से अलग हटकर धर्माचरण निंदनीय है।

(लेखक धर्म एवं दर्शन के अध्येता और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति हैं)
response@jagran.com

वक्त की मांग है घर से दफ्तर का काम

अभिषेक कुमार सिंह

वर्क फ्रॉम होम का फायदा सिर्फ लोगों को नहीं होगा, बल्कि इससे हम धरती पर भी कुछ रहम कर पाएंगे

हमारी दुनिया का विकास कुछ इस तरह हुआ है कि उसमें ज्यादातर लोगों को न सिर्फ नौकरी-व्यापार, बल्कि कई दूसरे कार्यों के लिए भी घर से दूर जाना पड़ता है। हालांकि बीते एक-दो दशकों में जब से इंटरनेट और स्मार्टफोन जैसी चीजों का विस्तार हुआ है, ऑनलाइन शॉपिंग, शिक्षण, मनोरंजन और रिजर्वेशन जैसे कई काम घर बैठे कराए जा सकते हैं। इसे देखते हुए दुनिया में इसकी जोरशोर से वकालत भी की जाती रही है कि आखिर इस पर विचार क्यों नहीं किया जाता कि सरकारी-निजी दफ्तरों के ज्यादातर काम घरों से ही कराए जाएं? कोरोना वायरस से हलकान हुई दुनिया के सामने यह मौका है कि वर्क फ्रॉम होम यानी घर पर रहते हुए कम करने की सलाह को हकीकत में आजमाया जा सके।

अभी यह नहीं कहा जा सकता कि कोरोना का जोर कम होने या लॉकडाउन खत्म होने की सूरत में भी कंपनियां दफ्तरों का कामकाज ऑनलाइन संपन्न कराना जारी रखेंगी और इस व्यवस्था को और बेहतर बनाएंगी, लेकिन उन्हें ध्यान रखना होगा कि इसकी जरूरत कोरोना जैसी आपदा के दोबारा पैदा होने की स्थितियों में ही नहीं, बल्कि पर्यावरण और हमारे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को होने वाले उन लाभों के नजरिये से भी है जो आजकल चौतरफा नजर आ रहे हैं। ऐसे कई समाचार आए हैं कि मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया के नजदीकी समुद्र में डॉल्फिनें लहरों के संग अठखेलियां करती नजर आईं तो केरल, कर्नाटक के शहरों, उत्तराखंड के हरिद्वार से लेकर यूपी के नोएडा तक में सड़कों पर वन्यजीव निर्भय होकर चहलकदमी करते दिखे।

वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण के कारण दमघोंटू माहौल से हलकान रहने वाले दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों और तमाम अन्य शहरों में भी साफ हवा और नीले आसमान के दर्शन होने लगे हैं। वर्क फ्रॉम होम के तरीके को अपनाने का फायदा सिर्फ कर्मचारियों, कंपनियों को नहीं होगा, बल्कि हम अपनी पृथ्वी पर भी कुछ रहम कर पाएंगे, जो ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्या से जूझ रही है।

इंजीनियरिंग, निर्माण क्षेत्र, चिकित्सा, पर्यटन आदि कई सेक्टरों के कामकाज ऑनलाइन संपन्न नहीं कराए जा सकते, लेकिन आइटी, बीपीओ और सॉफ्टवेयर कंपनियों के दायरे में यह सुविधा पहले से मौजूद है। कोरोना संकट से पैदा हुए हालात में अब इसे कई सरकारी विभागों और कई निजी कंपनियों द्वारा भी अपनाया जा रहा है। आइटी सेक्टर ही नहीं, कई तरह के वित्तीय, पेटेंट, कानूनी सलाह, लेखन-पत्रकारिता आदि के कामकाज के लिए दफ्तर जाने की जरूरत नहीं है। आधुनिक तकनीक इसमें काफी मददगार साबित हो रही है। जैसे तेज ब्रॉडबैंड और वेबकैम के इस्तेमाल के जरिये लोग दफ्तर का काम घरों से आसानी से कर रहे हैं और दफ्तर या दफ्तर से बाहर होने वाली किसी बैठक में घर में बैठे ही हिस्सा लेते हैं। हाल के वर्षों में टेलीवर्किंग यानी घर से काम करने का चलन पूरी दुनिया में बढ़ा है।

कामकाज का पैटर्न बदलने के अलावा दफ्तरी इलाकों के लगातार महंगे होते जाने, आकार में फैलते शहरों में घर-दफ्तर के बीच बढ़ती दूरियों, ट्रैफिक जाम और परिवहन के बढ़ते खर्चों आदि के मद्देनजर घर से कामकाज को प्राथमिकता देना एक आधुनिक, उपयोगी और व्यावहारिक विचार है। वैसे भी निकट भविष्य में ज्यादातर कामकाज ऐसी प्रवृत्ति के होंगे, जिनके लिए लोगों को दफ्तर नहीं जाना पड़ेगा। दुनिया के कई देशों में घर से काम करने वालों की संख्या लगातार बढ़ी है। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास और रोसेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन के जरिये यह बताया था कि 2003 के मुकाबले में 2012 में अमेरिकी नागरिक औसतन 7.8 दिन अधिक घर पर काम करते हुए बिताते हैं। इसके चलते अमेरिका में बिजली की मांग में कमी आई। अगर ज्यादा लोग काम करने के लिए दफ्तर जाएंगे तो कार, बस या मेट्रो आदि के जरिये बिजली और जीवाश्म ईंधन की खपत बढ़ेगी, जिसका असर ग्लोबल वार्मिंग के रूप में पृथ्वी की सेहत पर पड़ेगा। साफ है कि कोरोना संकट के समय वर्क फ्रॉम होम वाली कार्यसंस्कृति को लेकर कुछ सबक लेने और नई धारणा स्थापित करने की जरूरत है।

ध्यान दें कि लॉकडाउन के बावजूद कामकाज के पैमाने पर दुनिया रुक नहीं गई है। अखबार छप रहे हैं, बैंकिंग सतत जारी है, शेयर बाजारों में उठापटक भले हो रही हो, लेकिन वे ठप नहीं हुए हैं। इसका सबक यही है कि सरकारें अपने स्तर पर जितने काम ऑनलाइन कर सकती हैं उन्हें तत्काल ऐसा कर देना चाहिए। जिन कार्यों के लिए दफ्तर पहुंचने की जरूरत पड़ती है उनके संबंध में भी कॉलोनियों में कियोस्क बनाकर संबंधित इंतजाम किए जा सकते हैं।

इस बीच कुछ भ्रांतियों को तोड़ने की भी जरूरत पड़ेगी, क्योंकि माना जाता है कि कार्यसंस्कृति के परंपरागत तरीके के मुकाबले वर्क फ्रॉम होम की व्यवस्था में लोग कम काम करते हैं। यह एक बड़ी भ्रांति है। वर्क फ्रॉम होम वाली कार्यसंस्कृति से हिचक इसलिए है, क्योंकि अधिकांश प्रबंधक पुरानी और परंपरागत कार्यसंस्कृति को तरजीह देते हैं। अब वक्त आ गया है कि प्रबंधन के स्तर पर भी इस सोच में तब्दीली लाई जाए। ऐसी जरूरत कोरोना सरीखी किसी आपदा के संदर्भ में नहीं है, बल्कि ट्रैफिक जाम, वाहनों के धुएं से होने वाले भयानक प्रदूषण, दफ्तरों में बिजली की बेइंतहा खपत, दफ्तर आने-जाने में चार से पांच घंटे के वक्त की बर्बादी से लेकर ग्लोबल वार्मिंग जैसी तमाम समस्याओं के हल के लिए भी है। जिन पेशों में ग्राहक और कर्मचारी का आमना-सामना जरूरी नहीं है, कम से कम वहां तो वर्क फ्रॉम होम की सुविधा अब अनिवार्य की जा सकती है। कुल मिलाकर इस धारणा को तोड़ने का वक्त आ चुका है कि कामकाज के लिए दफ्तर जाना जरूरी है।

(लेखक एफआईएस ग्लोबल से जुड़े हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

मानवता का मर्म

दुनिया के सभी धर्मों का मूल मानवता है। मानवता ही मानवीय गुणों का सार है। यह मानवीय गुण अहिंसा, मर्यादा, परोपकार, नैतिकता, संयम, सदाचार, सहानुभूति, संवेदनशीलता, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा आदि हैं। मानवता संकीर्णता, स्वार्थ, सांप्रदायिकता, वैमनस्यता और धर्मांधता से परे है। त्याग, समर्पण और सेवा मानवता के आधार हैं। अतः दुनिया में मानवता सबसे बढ़कर है। यह सुनिश्चित करती है कि हम मानव होने के पैमाने पर कितने खरे उतर पाए हैं। वास्तव में मानवता का मर्म केवल मानव के साथ शिष्टता और विनम्रता से पेश आना भर नहीं है, बल्कि पशुओं और पक्षियों, सूक्ष्म से लेकर विराट जीवों एवं पादपों में भी आत्मा के अस्तित्व को स्वीकाराते हुए उनके साथ भी समान दृष्टि से व्यवहार करना है।

मानवता का सबसे बड़ा शत्रु हिंसा है। यह हिंसा ही दुखों, कष्टों और आपदाओं की जननी है। हिंसा भय उत्पन्न करती है। भय का भाव शांति एवं संयम को नष्ट कर मानव मन को व्याकुलता और अधीरता से ग्रस्त करता है। मानवता प्रेम एवं मैत्री से पूर्ण है। मनोभूमि में प्रेम का बीजांकुर ही सृष्टि के समस्त तत्वों के प्रति मानवीय दृष्टि से देख सकता है।

आज के समय में जहां छल, दंभ, द्वेष की कलुषित भावनाएं चरमोत्कर्ष पर हैं। इनके अतिरिक्त मानव आलस्य एवं असाध्य रोगों से पीड़ित होकर प्रतिक्षण अपने वर्चस्व को स्थापित करने के भ्रम में जी रहा है। यह भयावह रूप से प्रामाणिक हो चुका है कि हमारी तकनीक मानवता की लक्ष्मण रेखा लांघ चुकी है। वास्तव में मानव का सबसे बड़ा आभूषण मानवता ही है। यही हमें मानव होने के सौभाग्य से विभूषित कर सकता है। संक्षेप में कहें तो मानवता मतलब भलाई है। मानवता एक संकल्प है जिसे पूर्ण करने के लिए मानव जीवन भर प्रयासरत रहता है। निर्मम तथा निर्दय भावों का मानव जीवन में न होना ही मानवता के लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है।

देवेंद्रराज सुथार

लॉकडाउन से बदल गई आबोहवा

रवि शंकर

इस वायरस से बचाव जितना जरूरी है उतना ही वायु प्रदूषण को मिटाना भी, क्योंकि यह भी लोगों की जिंदगी लीलता है

कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने के लिए किए गए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की वजह से देश के तमाम प्रदूषित शहरों की फिजा भी बदली हुई नजर आ रही है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार देश के 90 से अधिक शहरों में पिछले कुछ दिनों में न्यूनतम वायु प्रदूषण दर्ज किया गया है जिससे लोग साफ हवा में सांस ले रहे हैं। मालूम हो कि देशव्यापी लॉकडाउन के चलते कारखाने और कार्बन उत्सर्जन से जुड़े तमाम स्रोत बंद हैं। पूरे देश में निर्माण कार्यों जैसी तमाम गतिविधियों पर भी पूरी तरह से रोक लगी हुई है। नाममात्र के ट्रैफिक और लोगों के घरों में रहने के कारण भी प्रदूषण की मात्रा में एकदम से कमी आई है। पश्चिमी विक्षोभ के चलते बूंदाबांदी का क्रम भी जारी है। इन वजहों से प्रदूषण में कमी आ गई है। उम्मीद की जा रही है कि आने वाले दिनों में वायु प्रदूषण में और भी कमी देखने को मिलेगी।

साल-दर-साल कई ऐसी रिपोर्ट आती रहती हैं जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि वायु प्रदूषण की वजह से विश्व भर में हर साल लाखों लोगों की मौत हो रही है। द स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर, 2019 की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में ही साल 2017 में करीब 12 लाख लोगों की मौत वायु प्रदूषण की वजह से हुई थी। वायु प्रदूषण दुनिया भर में मृत्यु दर का पांचवां प्रमुख कारक है। कुपोषण, शराब और शारीरिक निष्क्रियता की तुलना में वायु प्रदूषण की वजह से ज्यादा मौतें होती हैं। हर साल सड़क दुर्घटना या मलेरिया की तुलना में वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों से अधिक लोग मरते हैं। यह ठीक है कि बीते साल वायु प्रदूषण से निपटने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों ने कई कदम उठाए थे। फिर भी वायु प्रदूषण से निपटने में हम फिसड्डी साबित हुए। अगर हमारी सरकारें प्रदूषण से लड़ना चाहती हैं तो उन्हें इस समस्या के प्रति परिपक्व और ईमानदार नजरिया अपनाना होगा। समस्या की जड़ को समझकर उस पर प्रहार करना होगा। लोगों के सामने हल रखने होंगे। उन्हें विकल्प देने होंगे, न कि एकतरफा फरमान।

वायु प्रदूषण को निश्चित रूप से नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए सभी नागरिकों और संगठनों से लेकर निजी कंपनियों और सरकारों तक को एक साथ मिलकर प्रयास करने होंगे। ऐसे में इस समय जब देशभर की सारी गतिविधियां ठप हैं और वायु प्रदूषण में लगातार कमी आ रही है, तब कम से कम भारत सरकार और दिल्ली सरकार के जितने प्रदूषण से संबंधित संस्थान हैं, उन्हें इस विषय में विस्तृत अध्ययन करने की जरूरत है ताकि दिल्ली सहित पूरे देश में लॉकडाउन के बाद फिर से वायु प्रदूषण में कमी लाई जा सके। कोरोना वायरस से बचना जितना जरूरी है उतना ही वायु प्रदूषण को मिटाना भी, क्योंकि यह भी लोगों के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर करता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धरती के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

जीवन रक्षा सर्वोपरि

कोरोना के खिलाफ कठिन लड़ाई शीर्षक से लिखे अपने लेख में संजय गुप्त ने कहा है कि यदि उन इलाकों में लॉकडाउन बढ़ाना पड़े जहां कोरोना के अधिक मरीज हैं तो सरकार को हिचकिचाना नहीं चाहिए। देखा जाए तो यह समय की मांग भी है। कोविड-19 नामक रोग अमेरिका, इटली, स्पेन, चीन जैसे देशों में जिस प्रकार से कहर बरपा रहा है उससे स्पष्ट हो रहा है कि यह कोई सामान्य बीमारी नहीं है। इन देशों की चिकित्सा व्यवस्था काफी सशक्त है। फिर भी वहां संक्रमण थमने का नाम नहीं ले रहा है। उनकी तुलना में भारत में चिकित्सा सुविधाएं न तो बहुत अच्छी हैं, न ही पर्याप्त। ऊपर से हमारी आबादी उनसे कई गुना ज्यादा है। ऐसे में यदि यह वायरस भारत में सामुदायिक स्तर पर फैला तो भयावहता की हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं। शायद इसी कारण से देशवासियों की जीवन रक्षा के लिए मोदी सरकार ने सही वक्त पर 21 दिनों के देशव्यापी लॉकडाउन का फैसला किया है। यदि लोगों की जान बची रहेगी तो अर्थव्यवस्था फिर से खड़ी हो जाएगी। अगर इसे बढ़ाने की जरूरत महसूस हो तो कुछ दिनों के लिए और बढ़ाया जाना चाहिए। इसी में सबकी भलाई है।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

वास्तविकता से अनभिज्ञ पश्चिमी मीडिया

ए. सूर्यप्रकाश का लेख, दुराग्रह से बाज न आता पश्चिमी मीडिया, में पश्चिमी मीडिया में भारत में फैले कोरोना संक्रमण को लेकर जो अफवाहें और गलत जानकारियां दुनियाभर के लोगों के बीच फैलाई जा रही हैं उसे उनका गैरजिम्मेदराना रवैया माना है, जो कि तर्कपूर्ण है। देखा जाए तो पश्चिमी मीडिया खासतौर पर अमेरिका मीडिया को भारत की तरफ नजर उठाने से पहले अपने खुद के गिरेबान में झांकने की जरूरत है, यहां यदि उनसे पूछा जाए कि आपके यहां दुनिया का बेहतर स्वास्थ्य तंत्र होते हुए भी बदइंतजामी की वजह से इतनी मौतें क्यों हो रही हैं? साधनसंपन्न होते हुए भी क्यों वहां कोरोना संक्रमित मरीज एक दूसरे के साथ बेड शेयर करने को मजबूर हैं? हम सभी जानते हैं कि यह पश्चिमी मीडिया हमेशा से ही भारत की नीतियों के खिलाफ जहर उगलता आया है। उसे देखना चाहिए कि भारत कम संसाधन में उस बीमारी से कितनी कुशलता से निपट रहा है जिसने दुनिया को हिलाकर रख दिया है, भारत में काफी हद तक नियंत्रण में है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी भारत के प्रयासों की सराहना की है।

पवन कुमार मुरली, कादीपुर, गुरुग्राम

प्रकृति का संदेश

हमारा देश आज कोराना वायरस नाम की महामारी से जूझ रहा है। इससे बचने के लिए लॉकडाउन का आह्वान किया हुआ है। सभी प्रकार के कारखाने, उद्योग-धंधे, सभी कार्यालय, स्कूल-कॉलेज और वाहन बंद हैं। देश की अर्थव्यवस्था का पहिया आज रुक चुका है। इस अव्यवस्था का शुभ संकेत यह है कि लोगों को आज शुद्ध और साफ हवा मिल रही है। जहां लोगों को वाहनों के ध्वनि प्रदूषण का सामना करना पड़ता था, वहीं आज पक्षियों के कलरव सुनाई पड़ रहे हैं। वाहनों की दुर्घटनाओं का आंकड़ा शून्य पर आ गया है। आज कोरोना से बचने-बचाने के लिए लोगों में एक-दूसरे में सहयोग की भावना देखी जा रही है। आज सभी को यह संदेश भी है कि मनुष्य को अपने भौतिक स्वार्थ के लिए प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए।

रघुनाथ शास्त्री, जुन्हैडा, फरीदाबाद

धर्म की सीख

एक तरफ सरकार कोरोना महामारी से निबटने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है, वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग नासमझी में इस संक्रमण को पूरे देश में फैलाने में लगे हैं। बताया जा रहा है कि ये धर्म का प्रचार करते हैं। धार्मिक लोगों के द्वारा ऐसा कृत्य किया जाना बहुत ही शर्म की बात है। इन्हें तो खुद धर्म की सीख लेने की जरूरत है, ये दूसरों को क्या इसकी सीख देते होंगे? पूरी मानवता इस समय एक गंभीर संकट से गुजर रही है हम सबका कर्तव्य है कि हम इस समस्या से निबटने में अपना सहयोग दें।

सुधीर पांचाल, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

डॉ. अश्विनी महाजन
एसोसिएट प्रोफेसर,
दिल्ली विश्वविद्यालय

आजकल

कोरोना से जंग में मिलेगी कामयाबी

कोरोना वायरस ने दुनिया के तमाम विकसित देशों को भी बेबस बना दिया है। चीन ने तो किसी तरह इस पर काबू पा लिया, लेकिन अमेरिका और यूरोप में हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। वहीं भारत में बड़ी आबादी के बावजूद इसका सीमित दायरा कुछ राहत देने वाला है। फिर भी इसे लेकर निश्चिंत नहीं हुआ जा सकता। इसीलिए पीएम मोदी ने कोरोना की रोकथाम के मकसद से ही लॉकडाउन का फैसला किया ताकि इसका फैलाव रोका जा सके। इसमें हम सभी को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी

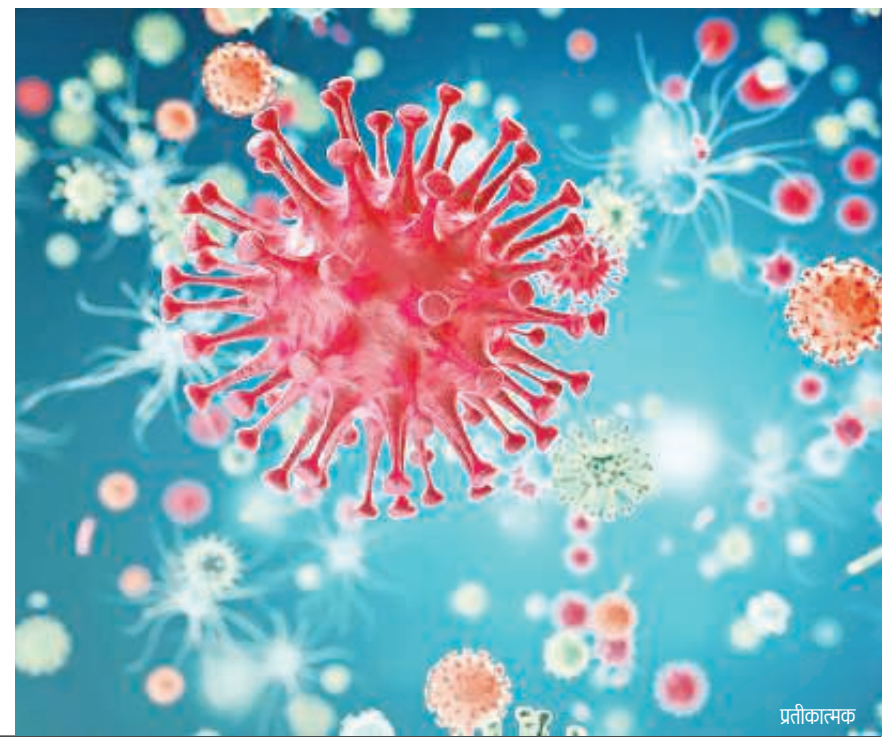
प्रतीकात्मक

आज पूरी दुनिया एक महामारी के दौर से गुजर रही है। वर्ष 1918 के स्पेनिश फ्लू के एक सदी बाद दुनिया एक ऐसे मोड़ पर आकर खड़ी हुई है, जहां अमेरिका, इटली, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी और कनाडा जैसे विकसित देशों के लोग भी लगभग असहाय स्थिति में पहुंच चुके हैं। दुनिया भर में दस लाख लोगों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने के साथ ही साठ हजार से भी ज्यादा लोग अपनी जान से हाथ धो चुके हैं। चीन के वुहान शहर में सबसे पहले दिखा। हालांकि चीन ने पूरे प्रांत में तालाबंदी करते हुए इस वायरस पर लगभग विजय पा ली है, लेकिन उसके बाद बड़े-बड़े देश इस वायरस की चपेट में बुरी तरह फंस चुके हैं। चीन में हालांकि इस वायरस से 81,500 लोग संक्रमित हुए और 3,300 लोग जान गंवा चुके हैं, जबकि इटली में इस रोग से संक्रमित होने वालों की संख्या एक लाख तक पहुंच चुकी है और मरने वालों की संख्या बारह हजार तक पहुंच चुकी है। अमेरिका के हालात तो और भी खराब हैं।

इस बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन से यह अपेक्षा थी कि वह विश्व को इस महामारी से बचाने के लिए अग्रणी भूमिका निभाएगा, मात्र एक 'टॉकिंग शॉप' बनकर रह गया है। इससे बेहतर तो हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं जिन्होंने पहले दक्षिण एशियाई क्षेत्र के शासनाध्यक्षों के साथ मिलकर और बाद में जी-20 देशों के शासन अध्यक्षों के साथ बात करते हुए साझा लड़ाई की रणनीति बनाने का प्रयास तो किया। जहां डब्ल्यूएचओ चीन के पाप को छिपाते हुए दुनिया को गुमराह करने का काम करता रहा, वहीं भारतीय नेतृत्व ने अपने बलबूते देश में प्रभावी लॉकडाउन करते हुए इस चीनी वायरस के प्रकोप को कम करने का काम शुरू कर दिया है।

सही नहीं हैं डरावने आंकड़े: जहां दुनिया भर की सरकारें इस महामारी से जूझने का प्रयास कर रही हैं, कुछ सांख्यिकी विशेषज्ञ, जो मेडिकल विशेषज्ञ नहीं हैं वे कुछ ऐसे आंकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे दुनिया में खौफ का माहौल बन रहा है। एक 14 सदस्यों वाले अध्ययन दल के अनुसार मई माह के मध्य तक भारत में एक लाख से तेरह लाख तक संक्रमित मामले सामने सकते हैं। ये आंकड़े संक्रमण की दर के वैश्विक अनुमानों के आधार पर परिकलित किए गए हैं। हालांकि वैश्विक अनुभवों के आधार पर ये आंकड़े सैद्धांतिक रूप से सही हो सकते हैं, लेकिन व्यावहारिक स्तर पर भारत के संदर्भ में ये सही नहीं हैं। जब ये आंकड़े प्रकाशित हुए थे तब तक भारत में लॉकडाउन का निर्णय नहीं लिया गया था। चीन समेत अधिकांश देशों में संक्रमण तीसरी स्टेज तक फैलने के बाद ही लॉकडाउन का निर्णय लिया गया, लेकिन भारत में अच्छी बात यही रही कि यह निर्णय दूसरी स्टेज पर ही ले लिया गया। जब यह निर्णय लिया गया तब तक भारत में संक्रमित लोगों की संख्या लगभग 500 थी। आइसीएमआर के आकलन के अनुसार समाज में एक दूसरे से शारीरिक दूरी बनाकर इस संक्रमण को दो-तिहाई तक कम किया जा सकता है, और अंतोतगत्वा इस पर विजय पाई जा सकती है। यही कारण है कि पूर्व में संक्रमित लोगों के परिवार और निकट के लोगों को छोड़कर सामुदायिक स्तर पर यह संक्रमण नहीं फैला। स्वाभाविक ही है कि सांख्यिकी विशेषज्ञों के इस मॉडल को भारत पर लागू नहीं किया जा सकता।

स्वस्थ होने के संकेत: आज दुनिया में कुल संक्रमितों की संख्या दस लाख का आंकड़ा पार कर गई है। हालांकि बड़ी संख्या में मौत होने के बावजूद तमाम लोग इसके चंगुल से बच निकलने में सफल भी हो रहे हैं। सर्वविदित है कि मानव शरीर की विशेषता है कि उसमें रोग के विरुद्ध लड़ने की क्षमता होती है या रोग होने पर यह प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है। कोरोना संक्रमण के बाद सांख्यिकी विशेषज्ञों के मॉडल को चुनौती देते हुए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत मॉडल में कहा गया है कि वास्तव में महामारी अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी है। इस मॉडल के अनुसार यह संक्रमण ब्रिटेन की आधी जनसंख्या तक पहुंच चुका है, लेकिन अधिकांश लोगों में इसका कोई लक्षण नहीं है अथवा कम ही लक्षण हैं। इसलिए इस बीमारी से डरने की जरूरत नहीं है। अध्ययन हालांकि लॉकडाउन का समर्थन भी करता है ताकि जो भी थोड़ा बहुत संक्रमण बचा हो, वह भी पूरी तरह से खत्म हो जाए।

चीन, अमेरिका, इटली, फ्रांस, जर्मनी समेत कई देशों में इस बीमारी के भीषण प्रकोप के चलते वहां की अति विकसित स्वास्थ्य व्यवस्थाएं भी चरमराई सी दिखाई देती हैं। भारी संख्या में मौतों की भयावहता को देखने से ही विश्व घबराया हुआ है। ऐसे में भारत जैसे कम संसाधन संपन्न देश जहां विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या रहती है, यह महामारी कितनी तबाही मचा सकती है इसकी कल्पना भी भयभीत करने वाली है। पूरे देश को लॉक करने का एक कठिन निर्णय देश ने लिया है। हालांकि अधिकांश तौर पर लॉकडाउन सफल है, लेकिन प्रवासी मजदूरों का अपने गांवों में पलायन इस लॉकडाउन की सबसे कमजोर कड़ी बन चुकी है। केंद्र और राज्यों की सरकारें, पुलिस एवं नागरिक प्रशासन, स्वयंसेवी संगठन एवं संस्थाएं इस समस्या के समाधान और कुल मिलाकर लॉकडाउन को सफल बनाने में जुट चुकी हैं। इन सब प्रयासों के चलते भारत दुनिया में इस महामारी के प्रकोप को रोकने की मुहिम में अभी तक सफल दिखाई देता है। भारत में संक्रमितों की संख्या अभी तीन हजार से कुछ ज्यादा है और उसकी वृद्धि दर में तब्लीगी जमात से इसके फैलने वाले कारण को छोड़ दें तो कुल मिलाकर हालात नियंत्रण में हैं। ऐसे में अगले एकाध सप्ताह तक जिम्मेदारी से और सावधानी बरतते हुए हमें भौतिक रूप से लोगों के बीच दूरी बनाए रखते हुए लॉकडाउन का पालन करना होगा। भारत का यह प्रयास दुनिया के लिए पथ प्रदर्शक सिद्ध हो सकता है।

कोरोना, चीन और विश्वास का संकट

अभिषेक प्रताप सिंह

कोरोना संकट ने चीन के शासन मॉडल में व्याप्त अविश्वास को उजागर किया है। ऐसे समय में जब विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोना संकट और उसके चीन के संबंधों के बारे में पूरी दुनिया में चर्चा की जा रही है, यह जानना बहुत जरूरी है कि यह स्वास्थ्य समस्या क्या चीन की व्यवस्था में व्याप्त अनेक खामियों को प्रदर्शित करती है। अगर हम पिछले तीन-चार माह में कोरोना संक्रमण के विस्तार को देखें तो चीन में कोरोना प्रकोप से निपटने के लिए शीघ्रता और प्रभावशीलता का बेहद अभाव था।

30 दिसंबर 2019 को डॉ. ली वनलियांग ने वुहान में निजी संदेश में एक नए किस्म के कोरोना संक्रमण के फैलने का खतरा जाहिर किया था। इसका संज्ञान लेने के बजाय, वहां के पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो ने उनसे 'अफवाह ना फैलाएं' को लेकर एक निजी माफीनामे पर हस्ताक्षर ले लिए। दस जनवरी को कोरोना से संक्रमित होने के बाद सात फरवरी को उनका निधन हो गया। डॉक्टर ली की मौत और चीनी प्रशासन द्वारा ली की ओर से बताए गए नए प्रकार के संक्रमण से संबंधित जानकारियों को दबाने-छिपाने के प्रयास को चीनी सोशल मीडिया पर वहां के लोगों ने असंतोष प्रकट किया। इस संकट के दौरान ही चीनी सोशल मीडिया साइट वीवो पर 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' ट्रेंड हुआ जिसे बाद में सेंसर कर दिया गया। यह घटनाक्रम वुहान प्रशासन की घोर लापरवाही को दर्शाता है। यह समस्या तब और विकट हो गई जब चीन सरकार का ध्यान अपनी स्वास्थ्य आपातकाल सेवा में तेजी लाने के बजाय इस पूरे घटनाक्रम की लीपापोती में लग गया। अंत में चीन के राष्ट्रपति ने आदेश दिया कि इस वायरस को पूरी तरह से नियंत्रित किया जाना चाहिए, लेकिन यह सब 23 जनवरी 2020 के बाद हुआ जब वुहान को पूरी तरह से बंद कर दिया गया। चीन में इस निर्णायक देरी के कारण संक्रमित लोगों को व्यापक रूप आवागमन की छूट रही जिससे यह वायरस आज वैश्विक महामारी का रूप ले चुका है।

चीन की राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त विरोधाभास, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं और सख्त राजनीतिक नियंत्रण के बीच कोरोना संकट से निपटने में चीनी प्रशासन की असमर्थता दिखी। पिछले कुछ वर्षों में चीनी राष्ट्रपति ने अत्यधिक राजनीतिक नियंत्रण पर जोर दिया है जिसकी समय-समय पर चीन के निवासियों ने आलोचना भी की है। इसी का नतीजा है कि चीन में बढ़ते कानूनी सुधारों व आर्थिक उदारीकरण का मसला राज्य और समाज के बीच एक नई बहस का विषय बन गया है। चीन की शीर्ष अदालत ने भी यह माना कि वुहान वायरस के बारे में आरंभिक जानकारी को अफवाहों से जोड़ना बड़ी भूल थी।

संकट के समय तानाशाही राजनीतिक व्यवस्था और उसके नेतृत्व को किसी भी प्रकार की आलोचना से दूर रखना, गैर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का चरित्र है। इस संकट के समय में सरकार और लोगों के बीच घटते सार्वजनिक विश्वास के कारण ही चीन ने बुजुर्ग मेडिकल एक्सपर्ट और एक समय में सार्स संकट के हीरो रहे डॉ. चुंग ननशान को आगे किया, ताकि लोगों का भरोसा हासिल किया जा सके। उनके द्वारा चीन के प्रशासन की प्रशंसा कर देना और वहां इस तथ्य को प्रमुखता से प्रकाशित करना सत्तावादी सरकारों में व्याप्त विश्वास के संकट को प्रदर्शित करता है। इसके साथ ही ईरान और इटली में इसका तेजी से फैलने को कई खबरों में चीन के 'वन बेल्ट वन रोड' द्वारा इन देशों में चीनी आवागमन से भी जोड़ा जा रहा है। ज्ञात हो कि इटली स्थित, लोंबार्डी और टस्कनी सबसे अधिक चीनी निवेश वाले दो क्षेत्र हैं। ऐसे समय में जब चीन अपने विकास मॉडल को दुनिया के सामने एक विकल्प के रूप में पेश कर रहा है, तब कोरोना संकट ने उनके शासन मॉडल की प्रभावशीलता और आपदा से निबटने में उनकी कमियों को भी उजागर किया है।

(लेखक जेएनयू से चीनी अध्ययन में पीएचडी कर चुके हैं और दिल्ली विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं)

कोरोना प्रभाव

प्रकृति की ओर लौटता समाज

मनोज कुमार झा

आज लॉकडाउन के माहौल में चारों तरफ की शांति हमें यह सोचने को मजबूर कर रही है कि आखिरकार जिंदगी की अब तक की आपाधापी में हमने कितना कुछ खो दिया है। इस महामारी ने हम सब में सहनशक्ति और संयम का संचार किया है। मानव सभ्यता के विकास की होड़ पर इसने एक प्रकार से ब्रेक लगा दिया है। हम सब अपने-अपने घरों में शांति से 'कैद' हैं। हमारे जीवन में शायद यह पहली घटना है कि डर से ही सही हम अपने-अपने परिवारों के साथ हैं।

आज ज्यादातर अस्पतालों में ओपीडी की सेवाएं स्थगित हैं। ऐसे में कल तक जिस प्रकार की सामान्य अस्वस्थता को लेकर लोगों में हायतौबा मच जाती थी, यानी छोटी स्वास्थ्य समस्या आने पर भी जिस प्रकार लोग अस्पतालों की ओर भागते दिखते थे, आज वे सबके सब धैर्य और संयम से परंपरागत घरेलू उपचार से ही ठीक होने की कोशिश कर रहे हैं और ठीक हो भी रहे हैं। हालांकि यहां कहने का आशय यह नहीं है कि लोगों का बीमार होना बंद हो गया है, लेकिन एक अंतर यह आया है कि सामान्य बीमारी में भी बेचैन होकर अस्पतालों की ओर भागने की प्रवृत्ति में कमी आई है। दरअसल हम यह भूल गए थे कि सामान्य बीमारी के लिए इलाज की चीजें हमारे घर में ही मौजूद हैं और यदि हम संयम से रहें तो छोटी-मोटी बीमारियों से स्वयं ही आसानी से निपट सकते हैं। हमारे पास ऐसी कई घरेलू दवाएं हैं जिनके सेवन से हम छोटे-मोटे संक्रमण से अपना बचाव कर सकते हैं।

आज अधिकांश लोग घर का खाना खा रहे हैं। वाहन बहुत कम चल रहे हैं। कारखाने बंद हैं। इससे पर्यावरण में बहुत सुधार हुआ है। इसका फर्क हम सब महसूस कर रहे हैं। आसमान साफ दिखने लगा है। ये हम शहरों की बात कर रहे हैं। यदि कुछ दिन लोग शहरों से गांव न जाएं तो गांवों को इस महामारी से बचाकर रखा जा सकता है। चूंकि हमारे लिए खाने-पीने की चीजें गांवों से ही आती हैं और उन चीजों की उपलब्धता बनी रहे, इसके लिए सरकार को तत्काल इस बारे में सोचना चाहिए कि गांव के लोगों को काम करने दे।

(लेखक गांधी शांति प्रतिष्ठान से संबद्ध हैं)

ट्वीट-ट्वीट

गंगा साफ हो रही है। यमुना भी पहले से साफ हुई है। आकाश भी नीला है। प्रकृति बता रही है कि हमने कितना खिलवाड़ किया है। साफ हवा में सांस लेने और साफ पानी पीने के लिए हमें बड़ी कीमत चुकाना पड़ी है। आगे का रास्ता चुनना हमें है।

मिलिंद खांडेकर@milindkhandekar

समझदारी और सावधानी ही कोरोना बीमारी का इलाज है। जो समझ गया समझो बच गया, जो न समझा फिर तो उससे खुदा ही समझेगा।

समीर अब्बास@TheSamirAbbas

जम्मू-कश्मीर के केरन सेक्टर में पांच आंतकी ढेर किए गए। इसे देखते हुए तो यही लगता है कि भारत को एक वक्त में दो महामारियों के खिलाफ जंग लड़नी पड़ रही है जिसमें से एक पाकिस्तान ने पैदा की है तो दूसरी चीन ने।

समीर सरन@samirsaran

अमेरिका ने रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों के बावजूद अपने नागरिकों के लिए उसके बने वेंटिलेटर ले लिए। यानी कोविड-19 महामारी के बीच अमेरिका ने खुद के लिए अपने ही नियम तोड़ दिए जबकि इसी दौरान वह ईरान, सीरिया और वेनेजुएला पर प्रतिबंधों का शिकंजा और कड़ा करता गया। त्रासद विडंबना।

सारा अब्दुल्ला@sahouraxo

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या प्रधानमंत्री मोदी का उजाले को लेकर किया गया आह्वान कोरोना के खिलाफ लोगों का मनोबल बढ़ाएगा?

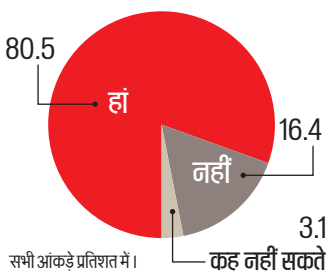

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या कोरोना हॉटस्पॉट केंद्रों में लॉकडाउन की अवधि बढ़ाई जानी चाहिए ?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

मजहब कोई भी नहीं देता गलत सलाह,
बंदे उसका नाम ले करते देश तबाह।
करते देश तबाह कर रहे ज्यों तबलीगी,
जिनका मुल्ला साद छुपा बन बिल्ली भीगी।
चेले पाल हजार स्वयं को समझे वो रब,
होता है बदनाम इन्हीं से पूरा मजहब।

– ओमप्रकाश तिवारी

आशुतोष शुक्ल
संपादक, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश डायरी

योगी की सख्ती ने काबू किया उपद्रव

घर-घर मनी दीवाली ने चौतरफा बढ़ाया उत्साह

मरीज पर रासुका!

आश्चर्य हुआ ना! कोई भी जल्दी नहीं मानेगा यह बात। मानने वाली बात है भी नहीं लेकिन, फिर भी लोगों ने न केवल माना बल्कि इसे सराहा भी। सभी वर्गों का एक ही सवाल था कि कुछ लोगों की गलती का दंड पूरा समाज क्यों भुगते।

विवरण थोड़ा आगे क्योंकि अभी तो बात करते हैं रविवार रात नौ बजे नौ मिनट तक घर-घर मनी दीवाली की। हफ्ते का आरंभ यदि मुख्यमंत्री की डांट के बाद नोएडा के डीएम बीएन सिंह द्वारा छुट्टी मांगे जाने की लज्जाजनक घटना से हुआ था तो समापन उतना ही प्रेरक रहा। अगर 22 मार्च की शाम ताली-थाली बजाने की घटना अभूतपूर्व थी तो पांच अप्रैल का प्रकाशपर्व भी दिलों में दर्ज हो गया। दीवाली से पहले कुम्हारों की दीवाली हो चुकी थी। उनके मिट्टी के दीये बिक चुके थे और उन्हें ओवरटाइम करना पड़ा था। दो दिन से लोग दीयों की तलाश कर रहे थे। यूं तो मोबाइल फोन की टार्च भी जली लेकिन, उद्देश्य की पवित्रता और संघर्ष का बोध तो दीयों से ही आया। अद्भुत था यह दृश्य। लोग नौ बजने से पहले ही दीये जला चुके थे। प्रधानमंत्री का आह्वान साकार था। हिंदू मुसलमान का भेद मिट चुका था। सभी धर्म, वर्ग कोरोना को हराने के लिए प्रकाश के रथ पर आरूढ़ थे। शत्रु को ध्वस्त करने निकल पड़े थे सब। पटाखों और शंखध्वनि से वातावरण गुंजित था। खूनी वायरस जब मन में अंधेरा भर रहा था तो ऐसे कठिन समय लाखों दीपकों ने इतना उजाला कर दिया कि चीनी विषाणु का असर कम दिखने लगा। बीमारी से लड़ने का हौसला और अदम्य उत्साह दे गया यह प्रकाश। शहर शहर, गांव गांव जले दीपक एकता का संदेश दे गए। स्निग्ध प्रकाश की पावन किरणों ने संकल्पसूत्र से बांध दिया सबको।

अब रासुका के कारणों की चर्चा-

प्रधानमंत्री के आह्वान पर प्रयागराज के नैनी में अनूठे अंदाज में दीये जलाते लोग। –सत्यम जायसवाल

कोरोना से दुनिया भर में चल रहे युद्ध के बीच उत्तर प्रदेश में कुछ कड़े फैसले हुए। ऐसा ही एक निर्णय तीन अप्रैल को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तब्लीगी जमात को लेकर किया। उन्होंने डॉक्टरों और उनके सहयोगियों से अभद्र व्यवहार करने वाले जमात के लोगों पर रासुका लगाने की घोषणा की। हर मरीज हमदर्दी का पात्र होता है। लोग मन, वचन और कर्म से उनकी सहायता करते हैं। धर्म के आधार पर डॉक्टर कभी भेद नहीं करते। यही भाव तब्लीगी जमात के कोरोना रोगियों को लेकर भी सबका था लेकिन, जैसे ही यह खबर आई कि जमातियों ने गाजियाबाद के एक अस्पताल में महिला स्वास्थ्य कर्मियों के साथ अभद्रता की और डॉक्टरों पर थूका, यह भाव तिरोहित हो गया और चारों तरफ नाराजगी दिखने लगी। इससे पहले कभी ऐसी घटना देखी सुनी नहीं गई थी। इस समय जब अनेक शहरों में डॉक्टरों और अन्य मेडिकल स्टाफ पर फूल बरसाये जा रहे हैं, सोशल मीडिया और अखबार उनकी प्रशंसा से पटे पड़े हैं, तब चंद जमातियों द्वारा उन पर थूकने की घटना ने रोष और दुख की लहर पैदा कर दी। हालांकि बाद में भी आगरा, लखनऊ और कानपुर में जमातियों द्वारा की गई ऐसी ही शिकायतें आम होती रहीं। लखनऊ कैंट में जमातियों ने इतना हंगामा किया कि शनिवार को वहां दो दिन का कर्फ्यू लगाना पड़ा। बनारस के भी चार थाना क्षेत्रों में जमातियों के कारण ही कर्फ्यू लगा। उपद्रवियों पर रासुका लगाने की घोषणा और मुख्यमंत्री द्वारा सख्ती दिखाने के बाद इन हरकतों पर अंकुश लगा। सख्ती न की गई होती तो उत्तर प्रदेश में कोरोना संक्रमितों की संख्या अब तक बहुत बढ़ चुकी होती।

एक अच्छी बात यह रही कि बसपा प्रमुख मायावती ने अपने विधायकों को कोरोना के खिलाफ लड़ाई में एक-एक करोड़ रुपये देने का निर्देश दिया तो मुख्यमंत्री योगी ने भी तत्काल फोन मिलाकर उन्हें धन्यवाद दिया। राजनीतिक सदाशयता के ऐसे उदाहरण विरल हैं लेकिन, यह जब भी घटते हैं तो आशा और भरोसे की सुंदर लकीर छोड़ जाते हैं। योगी वैसे भी इस समय भी टॉप गियर में हैं। उन्होंने दो बार भाजपा विधायकों और संगठन पदाधिकारियों के साथ बैठक की। रविवार को विभिन्न धर्मगुरुओं के साथ हुई उनकी बैठक काफी परिणामदायी रही। बैठक में मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली ने जोर देकर कहा कि प्रशासन को मुस्लिम धर्मगुरुओं की अपील का वीडियो बनाकर चलाना चाहिए। मौलाना कल्बे जवाद का कहना था कि मस्जिदों में सामूहिक नमाज रोकने का निर्णय उचित है क्योंकि पहले जिंदगी जरूरी है। बीते हफ्ते योगी सरकार ने श्रमिकों के खाते में 611 करोड़ रुपये एकमुश्त भेजे थे तो रविवार को प्रदेश भर के मोची, दर्जी, नाई, सुनार और बढ़ई आदि के खातों में एक हजार रुपये भेजने की घोषणा की। इतनी दूर तक सोचने के लिए सरकार बधाई की पात्र है।

मंथन

द्विपक्षीय संबंधों के सात दशक

गौरव कुमार
स्वतंत्र टिप्पणीकार

बीते सात दशकों में भारत-चीन संबंध तमाम उतार-चढ़ाव के दौर से गुजरे हैं। कोरोना संकट के इस दौर में शायद चीन को भारत की जरूरत और ज्यादा महसूस होगी

चीन से उपजी कोविड-19 यानी कोरोना वायरस से पूरी दुनिया जूझ रही है और यह एक संयोग ही है कि एक अप्रैल को भारत-चीन के राजनयिक संबंधों के भी 70 वर्ष पूरे हुए हैं। हालांकि कोरोना के कारण यह वर्षगांठ फीकी रही, लेकिन ऐसे दौर में जब विश्व के कई देश इस संकट के लिए चीन को उत्तरदायी ठहरा रहे हैं, भारत और चीन के बीच संबंधों का आकलन अहम हो जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में यह भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि कोरोना संकट के बीच भारत और चीन अपने संबंधों को कैसे संतुलित रख पाते हैं और कोरोना के बाद की दुनिया में विश्व का ध्रुवीकरण कैसे होगा? इसमें भारत की रणनीति कैसी होगी? भारत और चीन ने अपने संबंधों की 70वीं वर्षगांठ इन परिस्थितियों में मनाई, जहां संबंधों के बीच संदेह और अनिश्चितता भी बनी हुई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग की कुछ महीने पहले मामल्लपुरम में जो बैठक हुई थी उसमें दोनों देशों के बीच ऐसी सहमति बनी थी कि भारत-चीन के राजनयिक संबंधों के 70 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 70 प्रकार के कार्यक्रम दोनों देशों के समन्वय के साथ आयोजित होंगे, किंतु कोरोना महामारी के कारण यह आयोजन संभव नहीं हो सका। हालांकि इस अवसर पर दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने आपस में शुभकामना संदेश का आदान-प्रदान जरूर किया और अपने संबंधों की विरासत को याद किया। ऐसे में आशा की जानी चाहिए कि इस संकट के बावजूद दोनों देशों के संबंध गर्मजोशी से भरे रहेंगे और वैश्विक प्रतिक्रियाओं का प्रभाव दोनों देशों के आपसी संबंधों पर नहीं पड़ेगा।

यह सर्वविदित तथ्य है कि कोरोना वायरस सबसे पहले चीन में फैला और यहां हजारों लोग मारे गए, किंतु कई जगह और कई माध्यमों से इन आंकड़ों को गलत साबित करते हुए इस संख्या को कम बताया जा रहा है। कहा यह भी जा रहा है कि चीन की यह पुरानी आदत रही है कि वह जानकारी छिपाता है या विश्व समुदाय तक अपनी बहुत सी जानकारी पहुंचने ही नहीं देता। ऐसे सवाल मीडिया और विश्व समुदाय के विभिन्न मंचों से उठ रहे हैं कि यह वायरस चीन द्वारा जानबूझकर फैलाया गया है। इसके पीछे तर्क यह दिया जा रहा है कि विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनने की चीन की पुरानी मंशा रही है और वह इस तरह की मानसिकता को पूरा करने के लिए जैविक हथियार का प्रयोग कर सकता है।

कोरोना की समस्या निश्चित रूप से चीन के साथ विश्व के अन्य देशों के संबंधों को बुरी तरह से प्रभावित करने वाला है। ऐसे में अंदेशा है कि विश्वयुद्ध और शीतयुद्ध के बाद वैश्विक समीकरण जिस प्रकार का बना था ठीक उसी प्रकार इस महामारी के बाद विश्व दो ध्रुवों में बंट सकता है जिसमें एक तरफ चीन होगा और दूसरी तरफ अमेरिका। भारत की स्थिति दोनों में से किसी एक के साथ रहने की बन सकती है और यहां संभव है कि भारत एक बार फिर गुटनिरपेक्षता की अपनी नीति को अमल में लाए। कोरोना के विश्वव्यापी प्रकोप को देखते हुए चीन पर कई तरह के सवाल तो उठ ही रहे हैं, साथ ही एक नवीन वैश्विक व्यवस्था की भी परिकल्पना सामने आने लगी है। ऐसे में भारत का रुख क्या होगा या क्या होना चाहिए यह एक बड़ा प्रश्न है। हालांकि वर्तमान परिदृश्य के हिसाब से देखा जाए तो दुनिया के ज्यादातर देश आने वाले समय में चीन के खिलाफ लामबंद होंगे, तो ऐसे में चीन को भारत की ज्यादा जरूरत महसूस होगी।

भारत और चीन एक पुरानी सभ्यता होने के साथ ही दोनों देश वैश्विक पटल पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विकासशील देश होने के बावजूद वैश्विक जिम्मेदारियों का निर्वहन भी दोनों देशों ने साथ मिल कर किया है। दूसरी तरफ देखें तो अमेरिका के साथ भी भारत के संबंध अब तक के इतिहास में सबसे उत्कृष्ट स्तर पर है। एक तथ्य यह भी है कि अमेरिका और भारत दोनों का चीन के साथ बेहतर आर्थिक संबंध रहा है। ऐसे में बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था में यदि अमेरिका का चीन के साथ आर्थिक संबंध खराब होता है तो भारत का संबंध भी अछूता नहीं रहेगा। वैसे कोरोना के कारण जिस प्रकार से वैश्विक हालात में बदलाव आ रहे हैं, उसमें भारत की अहमियत दुनिया भर में बढ़ सकती है और चीन की ओर उन्मुख देश भी भारत के साथ आ सकते हैं।

भारत की सबसे बड़ी कूटनीतिक जीत तभी संभव है यदि भारत गुटनिरपेक्षता की नीति अपना ले। भारत को अपनी कूटनीति का लाभ लेकर अपने हितों पर ध्यान देना चाहिए। चीन और अन्य प्रभावित देशों को इस संकट से निपटने के लिए एकजुट होना होगा और अपने अनुभवों को लगातार साझा करते हुए वैश्विक सहयोग को बल देने की आवश्यकता है। यह संकट नकारात्मक वैश्विक संघर्ष को जन्म दे सकता है। अतः सभी संबंधित देशों को इस विवाद से बचने के लिए बहुपक्षीय वार्ता से समाधान तलाशना चाहिए। चीन को इस दिशा में अधिक प्रयास करने की जरूरत है, क्योंकि अमेरिका और अन्य प्रभावित देश लगातार चीन के लिए एक नकारात्मक माहौल बना रहे हैं। भविष्य में इसका खामियाजा केवल चीन को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को भुगतना होगा। बहरहाल हम यही आशा करेंगे की इस वैश्विक मानवीय संकट से हम शीघ्र उबर जाएंगे और साझा विश्व विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए समन्वित प्रयास करेंगे।

प्रतीकात्मक

जीवन बीमा प्रीमियम के लिए मिली 30 दिनों की मोहलत

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण यानी इरडा ने जीवन बीमा के ग्राहकों को प्रीमियम भुगतान के लिए अतिरिक्त 30 दिनों की मोहलत दी है। इसके साथ ही नियामक ने बीमा कंपनियों को भी नियामकीय जानकारियां दाखिल करने की अवधि में महीनेभर तक की छूट दी है। इसके तहत इरडा ने मासिक फाइलिंग के मामलों में कंपनियों को 15 दिनों की मोहलत दी है। तिमाही, छमाही और वार्षिक रिटर्न फाइल करने के लिए बीमा कंपनियों को 30 दिनों का अतिरिक्त वक्त दिया गया है।

आइबीसी के माध्यम से अब तक हुई वसूली के अनुपात में आइएलएफएस ग्रुप की रिकवरी का आंकड़ा बेहद उत्साहवर्धक है। सरकार ने सही समय पर हस्तक्षेप कर ग्रुप को बचा लिया।

— इंजेती श्रीनिवास, सचिव, कॉरपोरेट मामले

एटीएम में नहीं होगी नकदी की किल्लत

राहत की बात ▶ एक वैन से एक दिन में 40 एटीएम में भरी जा रही है नकदी

छोटे शहरों व ग्रामीण इलाकों में नकदी की अधिक निकासी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना महामारी की वजह से जारी लॉकडाउन के दौरान एटीएम में नकदी की किल्लत नहीं होगी। महामारी के दौरान सरकार की तरफ से नकदी के रूप में दी जाने वाली मदद को लोगों तक पहुंचाने के लिए भी एटीएम में इन दिनों पहले के मुकाबले अधिक नकदी भरने का काम किया जा रहा है। नकदी की किसी भी प्रकार की किल्लत नहीं होने देने के लिए वित्त मंत्रालय, नेशनल हेल्थ अथॉरिटी, आरबीआइ और कैश लॉजिस्टिक्स कंपनियां लगातार आपसी संपर्क में हैं।

उद्योग जगत के संगठन फिक्की के प्राइवेट सेक्योरिटी कमेटी के चेयरमैन और कैश लॉजिस्टिक्स कंपनी एसआइएस के ग्रुप एमडी ऋतुराज सिन्हा ने बताया कि लॉकडाउन से पहले एक वैन रोजाना 17-18 एटीएम में नकदी भरने का काम कर पाती थी। अभी एक वैन से 40 एटीएम में नकदी भरने का काम किया जा रहा है। सामान्य दिनों के मुकाबले इन दिनों एटीएम से नकदी निकासी भी अधिक हो रही है, लेकिन लॉकडाउन के दौरान एटीएम में नकदी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए 65,000 एटीएम कर्मी दिन-रात योद्धा की तरह काम कर रहे हैं।

प्रतीकात्मक

कैश लॉजिस्टिक्स कंपनियों के मुताबिक लॉकडाउन के दौरान मुंबई के नरीमन प्वाइंट या दिल्ली के कनॉट प्लेस इलाके के एटीएम से नकदी की निकासी नहीं हो रही है। नकदी की निकासी मुख्य रूप से छोटे शहर व ग्रामीण इलाकों से हो रही है। इसलिए ग्रामीण व छोटे शहरों के एटीएम में नकदी का खास ख्याल रखा जा रहा है। कोरोना महामारी के दौरान आर्थिक मदद के लिए सरकार की तरफ से किसान और गरीबों के खाते में डाली गई नकदी एटीएम के माध्यम से उन तक पहुंच सकती है। गांवों में रहने वाले किसान व गरीबों के लिए लॉकडाउन में बैंक तक पहुंचना संभव नहीं है। सिन्हा कहते हैं, यह समय हमारे लिए चुनौतीपूर्ण है। कंपनियों की ओर से एटीएम कर्मियों को कई प्रकार की अतिरिक्त सुविधाएं भी दी रही हैं। इस बात की पूरी कोशिश की जा रही है कि लॉकडाउन के अगले नौ दिनों तक एटीएम में नकदी की कोई कमी नहीं हो। अभी देश में 2.2 लाख एटीएम मशीन है। वित्तीय संस्थाओं के आंकड़ों के मुताबिक इनसें रोजाना लगभग 25,000 करोड़ रुपये की लोडिंग और निकासी हो रही है।

कोविड-19 से लड़ने को आइटीसी के उम्मीद और खुशियों के डब्बे

नई दिल्ली, (वि) : देश की शीर्ष एफएमसीजी कंपनियों में एक आइटीसी ने कोविड-19 से मुकाबले को बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए उम्मीदों और खुशियों के डब्बे भेंट किए हैं। कंपनी ने 150 करोड़ रुपये के अपने कोविड-19 राहत फंड से फूड डिवीजन के तत्वावधान में मशहूर ब्रांड आशीर्वाद के तहत आशीर्वाद बॉक्स ऑफ होप्स और सनफीस्ट ब्रांड के तहत सनफीस्ट बॉक्स ऑफ हैप्पीनेस की आपूर्ति की है। इसके लिए कंपनी ने तीन एनजीओ से करार किया है, जो बच्चों और बुजुर्गों को ये डब्बे पहुंचाएंगे। इनमें चाइल्ड राइट्स एंड यू यानी क्राई, एसओएस चिल्ड्रंस विलेज और एक अन्य नामी एनजीओ शामिल हैं। एक महीने के इस कार्यक्रम की शुरुआत पहली अप्रैल से हो चुकी है।

कंपनियों को राजस्व एवं मुनाफा 10 फीसद तक गिरने की आशंका

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ कंपनियों को होने लगी श्रमिकों की भी किल्लत

कोरोना संकट की वजह से देश की अधिकतर कंपनियों को पिछले वित्त वर्ष 2019-20 की अंतिम तिमाही (जनवरी-मार्च,2020) और चालू वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून,2020) के दौरान राजस्व एवं मुनाफे दोनों में कमी की आशंका है। उद्योग जगत के संगठन सीआइआइ की तरफ से जारी सर्वे रिपोर्ट में कहा गया है कि 74.2 फीसद कंपनियां मानती हैं कि इस साल अप्रैल-जून के दौरान कंपनी के राजस्व में 10 फीसद से अधिक की कमी आएगी। हालांकि इस साल जनवरी-मार्च के लिए 52.4 फीसद कंपनियों ने राजस्व में 10 फीसद से अधिक की गिरावट की आशंका जाहिर की।

सीआइआइ की रिपोर्ट के मुताबिक 66.3 फीसद कंपनियों ने कहा कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में उनके मुनाफे में पांच फीसद से अधिक की गिरावट होगी। इस साल जनवरी-मार्च के लिए 50.5 फीसद कंपनियों ने इस प्रकार की आशंका जाहिर की। रिपोर्ट में कहा गया है कि कंपनियों के राजस्व व मुनाफे में कमी का असर देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) पर भी देखने को मिलेगा। सीआइआइ के सर्वे में हिस्सा लेने वाली 47 फीसद कंपनियों का मानना है कि कोविड-19 की वजह से नौकरियों में 15 फीसद तक तक की कटौती हो सकती है। वहीं, 32 फीसद का मानना है कि लॉकडाउन की समाप्ति के बाद नौकरियों में 15-30 फीसद की कटौती की जा सकती है। सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक लॉकडाउन के दौरान अधिकतर कंपनियां आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन और सप्लाई चेन के काम से जुड़ गई हैं। लेकिन इन कंपनियों को श्रमिकों की उपलब्धता से लेकर सप्लाई करने तक में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन में जुटी 37 फीसद कंपनियों को श्रमिकों की कमी हो रही है। 30 फीसद कंपनियों को कच्चे माल की उपलब्धता की कमी हो रही है।

14 अप्रैल के बाद की सेवाओं की तैयारी में जुटा रेलवे

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में जारी 21 दिनों का लॉकडाउन खुलने के बाद यात्राओं के दौरान कोरोना संक्रमण से बचाव और सामाजिक दूरी कायम रखने के मापदंडों के लिए रेलवे ने अभी से सारे जतन शुरू कर दिए हैं। यात्रा संबंधी प्रतिबंध हटने के बाद वह रेल यात्रियों के लिए एडवाइजरी जारी करने संबंधी सुझावों पर विचार कर रहा है। इसमें यात्रा से पहले अनिवार्य रूप से सामाजिक दूरी का पालन करने की शर्त के साथ ही अपने स्वास्थ्य पर नजर रखने के लिए सभी को 'आरोग्य सेतु' ऐप का भी इस्तेमाल करने की हिदायत दे सकता है। सिर्फ स्वस्थ यात्रियों को ही रेल से सफर करने का भी निर्देश दिया जा सकता है।

अधिकारियों का कहना है कि कोरोना वैश्विक महामारी के चलते विगत 25 मार्च से जारी देशव्यापी लॉकडाउन के तहत सभी यात्री रेलों का सफर भी स्थगित है। रेल यात्रा फिर शुरू करने की सरकार से हरी झंडी मिलने के बाद रेलवे यात्राएं चरणबद्ध तरीके से शुरू करेगा। अधिकारियों ने बताया कि आने वाले हफ्ते में यह फैसला लिया जाएगा कि रेल सेवाएं फिर से किस तरह बहाल की जाएं। रेलवे अपने 19 मार्च के उस फैसले पर भी विचार करेगा, जिसके चलते रेल यात्रियों को टिकटों पर मिलने वाली सभी छूटों को बंद कर दिया गया था। यात्रियों की थर्मल स्क्रीनिंग और अन्य जांच की प्रक्रियाओं को भी

आदेश का इंतजार

- सरकार की मंजूरी के बाद चरणबद्ध तरीके से होंगी रेल सेवाएं बहाल
- आरोग्य सेतु ऐप और सामाजिक दूरी के पालन का दिया जा सकता है सुझाव

निर्धारित किए जाने की जरूरत है। रेल यात्राएं शुरू होने के बाद सभी यात्रियों से मुंह पर मास्क पहनने की भी अपील की जाएगी। साथ ही आरोग्य सेतु ऐप भी इस्तेमाल करने को कहा जाएगा। साथ ही केवल सेहतमंद यात्रियों को ही सफर करने को कहा जाएगा।

रेलवे ने अपनी सेवाएं बहाल करने के विकल्पों पर चर्चा की है। रेलवे बोर्ड की ओर से हरेक ट्रेन पर मंजूरी के बाद ही आगे की कार्रवाई होगी। रेलवे बोर्ड के प्रत्येक जोन को चरणबद्ध तरीके से बहाल किए जाने का सुझाव दिया गया है। रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह बेहद संवेदनशील समय है और हमारा ध्यान राजस्व जुटाने की ओर फिलहाल नहीं है। हमारा पूरा ध्यान यात्रियों की सुरक्षा पर है और यह सुनिश्चित करना है कि कोरोना वायरस का संक्रमण और न फैले। जैसे ही सरकार हरी झंडी देगी ट्रेने उसी के अनुरूप संचालित होंगी। फिलहाल इस संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया गया है। बोर्ड की ओर से जोन की कौन सी ट्रेनों को पहले शुरू किया जाए, इस पर भी कोई फैसला नहीं हुआ है।

आवश्यक वस्तुओं को तेजी से पहुंचा रहा रेलवे

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना महामारी के विरुद्ध लड़ाई के तहत लॉकडाउन के दौरान आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई बरकरार रखने के लिए रेलवे ने 13 दिनों में कुल मिलाकर चीनी के 1342, नमक के 958 तथा खाने वाले तेल के 378 वैगन देश के विभिन्न भागों में पहुंचाए हैं। एक वैगन में अमूमन 58-60 टन सामग्री आती है। रेल मंत्रालय की ओर से जारी बयान के अनुसार, 23 मार्च से लेकर 4 अप्रैल तक 13 दिनों में रेलवे ने कुल मिलाकर चीनी के 1342, नमक के 578 तथा खाने वाले तेलों के 378 वैगन देश के विभिन्न शहरों तक पहुंचाए हैं। लॉकडाउन के दौरान देश के विभिन्न भागों में लोगों को खाने-पीने की दिक्कत न हो इसके लिए रेलवे ने प्राथमिकता के आधार पर चीनी, नमक और खाने वाले तेलों की ढुलाई की है। सबसे पहले 23 मार्च को 42 टन चीनी व 168 टन नमक भेजा गया था। इसके बाद 24 मार्च को 168 टन नमक और 50 टन खाने वाला तेल पहुंचाया गया। इसी प्रकार 25 मार्च को 42 टन चीनी व 42 टन नमक के वैगन भेजे गए। फिर 26 और 27 मार्च को भी इतनी ही सामग्री की आपूर्ति की गई, जबकि 28 मार्च को 126 टन चीनी के साथ 42 टन नमक और 50 टन खाने वाला तेल भेजा गया। इस सिलसिले को जारी रखते हुए 29 मार्च को चीनी की मात्रा 210 टन कर दी गई, जबकि नमक तथा खाने वाले तेल की मात्रा 42-42 टन रही। इसी तरह 30 मार्च को 252 टन चीनी और 8 टन नमक भेजा गया, जबकि 31 मार्च को 210 टन चीनी भेजी गई। एक अप्रैल तारीख को 210 टन चीनी की ढुलाई हुई।

लॉकडाउन के बाद विमान सेवा को हालात के आधार पर अनुमति संभव

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार लॉकडाउन के बाद के हालात के आधार पर घरेलू और अंतरराष्ट्रीय विमान सेवा के संचालन को अनुमति दे सकती है। 21 दिन का लॉकडाउन 14 अप्रैल को खत्म हो रहा है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। कोरोना वायरस की महामारी से उड्डयन क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ है। रविवार को एयर डेक्कन भी इस महामारी का शिकार हो गई। एयरलाइन ने अपने सभी कर्मचारियों को अनिश्चितकाल के लिए बिना वेतन के ही छुट्टी पर जाने को कहा दिया है।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'भारत में वायरस का तेजी से प्रसार हो रहा है, हम 14 अप्रैल के बाद घरेलू और अंतरराष्ट्रीय विमान सेवा को हालात के आधार पर अनुमति देने पर विचार कर रहे हैं। एयरलाइंस 14 अप्रैल के बाद किसी भी दिन के लिए बुकिंग करने के लिए स्वतंत्र हैं।'

हालांकि, अधिकारी ने यह भी कहा, 'परंतु, यदि लॉकडाउन को 14 अप्रैल से आगे बढ़ाया जाता है तो एयरलाइंस को उस अवधि के दौरान के लिए बुक किए गए टिकटों को रद करना पड़ेगा।'

बता दें कि एयर इंडिया को छोड़कर बाकी की सभी प्रमुख एयरलाइंस ने 14 अप्रैल के बाद टिकटों की बुकिंग शुरू कर दी है। एयर इंडिया 30 अप्रैल के बाद के लिए टिकटों की बुकिंग कर रही है। डेक्कन एयर ने अपने सभी कर्मचारियों को छुट्टी पर भेज दिया है, इसलिए वह कोई बुकिंग नहीं कर रही है और यह भी स्पष्ट नहीं है कि वह अपना ऑपरेशन कब शुरू करेगी।

एयर इंडिया ने मार्च के महीने में अपनी चार उड़ानों के यात्रियों से क्वारंटाइन के लिए कहा है। इन उड़ानों में यात्रा करने वाले तीन लोगों के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद यह अपील की गई है। इनमें गोवा-मुंबई के बीच दो उड़ानें और मुंबई-दिल्ली और दिल्ली-पटना उड़ान शामिल है। एयरलाइन ने ट्वीट कर कहा कि 22 मार्च को मुंबई-दिल्ली की उड़ान संख्या एआइ-101 और 23 मार्च को दिल्ली-पटना की उड़ान एआइ-514 के एक यात्री को संक्रमित पाया गया है। मुंबई-गोवा के बीच 22 मार्च की उड़ान संख्या एआइ 883 और 19 मार्च की उड़ान एआइ 661 के यात्रियों से भी क्वारंटाइन की अपील की गई है। इनके दो यात्रियों को संक्रमित पाया गया है।

- 14 अप्रैल को खत्म हो रहा है 21 दिनों का देशव्यापी लॉकडाउन
- कई एयरलाइंस ने 14 अप्रैल के बाद के लिए शुरू कर दी है बुकिंग
- एयर इंडिया 30 अप्रैल के बाद के लिए कर रही है टिकटों की बुकिंग

चिकित्सा उपकरणों के लिए साथ आएंगे स्टार्टअप व उद्योग जगत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ नीति आयोग के सीईओ की अगुआई में अधिकार प्राप्त समूह की बैठक में अहम चर्चा

कोरोना संकट के दौरान चिकित्सा उपकरण और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) के उत्पादन को बढ़ाने के लिए नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत की अध्यक्षता में गठित अधिकार प्राप्त समूह ने आपसी संवाद का काम शुरू कर दिया है। समूह की तरफ से इस दिशा में निजी क्षेत्र और स्टार्टअप के बीच आपसी संवाद की प्रक्रिया शुरू की गई है।

स्वास्थ्य संबंधी समाधान के क्षेत्र में काम करने वाले स्टार्टअप के साथ वेंटीलेटर से लेकर मास्क व अन्य उपकरणों की मांग के मुताबिक आपूर्ति को लेकर भी समूह ने आठ स्टार्टअप, औद्योगिक संगठन सीआइआइ की 12 हस्तियों, फिक्की के छह सीईओ सदस्य और नैसकॉम से जुड़े 14 सीईओ के साथ विचार-विमर्श किया। समूह की तरफ से नए प्रकार के वेंटीलेटर डिजाइन, जांच के उपकरण और निगरानी समाधान क्षेत्रों में काम कर रहे अगमा, बायोडिजाइन इनोवेशन लैब, काईएनात, क्योर एआइड्रोन मैप, एमफाइन माइक्रोगो जैसे स्टार्टअप से संपर्क किया गया है ताकि उनके पैमाने और संभावित योगदान का आकलन किया जा सके। कोरोना से लड़ाई में निजी क्षेत्रों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए अमिताभ कांत की अध्यक्षता में अधिकार प्राप्त समूह का गठन किया गया है। महामारी के खिलाफ रणनीति बनाने के लिए यह समूह संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियां, विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) से समन्वय स्थापित करने का काम कर रहा है। निजी क्षेत्रों के लिए औद्योगिक संगठन सीआइआइ, फिक्की, एसोचैम व नैसकॉम से समन्वय स्थापित करेगा।

कोरोना वायरस से प्रभावित होगी शेयर बाजारों की चाल

नई दिल्ली, प्रेट्र : पिछले कई हफ्तों से कोरोना संकट के साए में गंभीर उतार-चढ़ाव झेल रहे शेयर बाजारों के पास इस हफ्ते भी राहत के कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं। जानकारों का मानना है कि इस सप्ताह भी घरेलू शेयर बाजार कोरोना से होने वाले नुकसान, इससे उबरने में लगने वाला अनुमानित समय, कोई महत्वपूर्ण घटनाक्रम और दुनियाभर में इससे निपटने के उपायों के इर्द-गिर्द ही प्रतिक्रिया देते दिखेंगे। इस सप्ताह सोमवार को सर्विस सेक्टर का पीएमआइ आंकड़ा भी आना है, जिसका असर मंगलवार के कारोबार पर दिख सकता है।

पिछले सप्ताह रामनवमी के उपलक्ष्य में गुरुवार को बाजार बंद रहे थे और घरेलू शेयर बाजारों में सिर्फ चार दिन कारोबार हुआ था। इस सप्ताह भी सोमवार को महावीर जयंती और शुक्रवार को गुड फ्राइडे के उपलक्ष्य में शेयर बाजार बंद रहेंगे। लिहाजा, इस सप्ताह सिर्फ तीन दिन कारोबार होंगे।

इस सप्ताह शेयर बाजारों की संभावित दिशा और दशा के बारे में मोतीलाल ओसवाल पफाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के रिटेल रिसर्च प्रमुख सिद्धार्थ खेमका का कहना था कि बाजारों की चाल अनिश्चित ही दिखाई दे रही है। कोरोना वायरस से लड़ने के लिए दुनियाभर में हो रहे प्रयासों और इस महामारी से ग्रस्त मामलों की संख्या और उसके ट्रेंड पर भी काफी कुछ निर्भर करेगा। हालांकि यह सच है कि पिछले कुछ दिनों के दौरान कोरोना का ट्रेंड सकारात्मक रूप से बदलता दिख रहा है।

कोरोना वायरस ने दुनियाभर में 10 लाख से अधिक लोगों को अपनी चपेट में लिया है और उनमें से 50,000 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। भारत में इससे प्रभावित लोगों का आंकड़ा लगभग 3,000 पर पहुंच गया है और देश में इससे करीब 70 मौतें हो चुकी हैं। कोरोना के चलते दुनियाभर में कारोबार लगभग ठप हैं। इसे देखते हुए ही अग्रणी रेटिंग एजेंसी फिच ने चालू वित्त वर्ष में देश की जीडीपी विकास दर गिरकर दो प्रतिशत रह जाने की आशंका जताई है। अगर ऐसा होता है तो देश में आर्थिक उदारीकरण के बाद की यह सबसे कम जीडीपी विकास दर होगी। फिच का यह भी कहना था कि इस वर्ष वैश्विक विकास दर में लगभग 1.9 प्रतिशत गिरावट की आशंका है, जिसमें सबसे बड़ी हिस्सेदारी अमेरिका और यूरोप की होगी। एजेंसी ने इस वर्ष दुनिया की अर्थव्यवस्था के 2008 से ज्यादा बड़ी मंदी में जाने की भी आशंका जताई है।

पिछले सप्ताह चार दिनों के कारोबार में बीएसई के 30 शेयरों वाले सेंसेक्स में 2,224.64 अंकों यानी 7.46 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। इस सप्ताह के संभावित कारोबार के बारे में जियोजित पफाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च प्रमुख विनोद नायर का कहना था कि जिन देशों में कोरोना अपने सबसे बुरे रूप में है, वहां होने वाले सकारात्मक सुधारों का शेयर बाजारों पर सीध असर दिखेगा। भारत ने कोरोना को नियंत्रित रखने में काफी हद तक कामयाबी पाई है। ऐसे में लॉकडाउन की अवधि अगर नहीं बढ़ती है, तो निश्चित रूप से इसका शेयर बाजारों पर सकारात्मक असर दिखेगा। वहीं, रेलिगेयर ब्रोकिंग के वाइस प्रेसिडेंट - रिसर्च अजीत मिश्रा ने कहा कि जब तक कोरोना के ताजा मामले घटने शुरू नहीं होते, तब तक शेयर बाजारों पर दबाव दिखेगा। कई सेक्टरों में नुकसान की मात्रा ज्यादा रही है और शेयर बाजारों पर उनका असर दिखेगा।

- सोमवार को रामनवमी और शुक्रवार को गुड फ्राइडे के उपलक्ष्य में बाजार रहेंगे बंद
- संकट कितनी जल्दी दूर होता है, इस पर रहेगी बाजारों की नजर

सात कंपनियों ने गंवाए 2.82 लाख करोड़ रुपये

नई दिल्ली, प्रेट्र : पिछले सप्ताह शेयर बाजार में गिरावट के चलते शीर्ष 10 में से सात कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 2.82 लाख करोड़ रुपये घट गया। सबसे ज्यादा नुकसान टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, एचडीएफसी बैंक व कोटक महिंद्रा बैंक के पूंजीकरण को हुआ। समीक्षाधीन अवधि में टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 61,614.15 करोड़ रुपये गिरकर 6,20,794.53 करोड़ रुपये रह गया। एचडीएफसी बैंक के बाजार पूंजीकरण में 50,199.49 करोड़ रुपये की गिरावट आई और अब यह 4,46,065.35 करोड़ रुपये पूंजीकरण के साथ इस सप्ताह मंगलवार को शेयर बाजार में कारोबार के लिए उतरेगा। महावीर जयंती के उपलक्ष्य में इस सप्ताह सोमवार को शेयर बाजार बंद रहेंगे। कोटक महिंद्रा बैंक का बाजार पूंजीकरण पिछले सप्ताह 49,332.07 करोड़ रुपये घटकर 2,18,021.18 करोड़ रुपये रह गया। एचडीएफसी के बाजार पूंजीकरण में पिछले सप्ताह 44,102.26 करोड़ रुपये की कमी आई।

एफपीआइ ने की रिकॉर्ड 1.18 लाख करोड़ की निकासी

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना संकट के चलते दुनियाभर की अर्थव्यवस्था को घोर मंदी की ओर जाते देख विदेशी निवेशक भारतीय पूंजी बाजारों से कन्नी काटने लगे हैं। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआइ) ने मार्च में भारतीय पूंजी बाजारों से 1.18 लाख करोड़ रुपये निकाल लिए हैं, जो अब तक का सर्वोच्च है। इससे पहले लगातार छह महीनों तक एफपीआइ भारतीय पूंजी बाजारों में शुद्ध खरीदार बने हुए थे। जानकारों का कहना है कि कोरोना के प्रकोप से बचने के लिए लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध या लॉकडाउन सिर्फ भारत नहीं, बल्कि दुनियाभर में कारगर रहा है। इसने विदेशी निवेशकों को सतर्क रुख अपनाने पर मजबूर किया है। डिपोजिटरी आंकड़ों के मुताबिक मार्च में एफपीआइ ने इक्विटी से 61,973 करोड़ रुपये व डेट सेग्मेंट से 56,211 करोड़ रुपये की राशि निकाल ली। इस दौरान कुल शुद्ध आउटफ्लो 1,18,184 करोड़ रुपये रहा। नेशनल सिक्युरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड ने जब से एफपीआइ आउटफ्लो आंकड़े मुहैया कराने शुरू किए हैं, तब से किसी एक माह में एफपीआइ द्वारा यह रिकॉर्ड निकासी है।

राष्ट्रीय

पीएम केयर्स फंड में बढ़-चढ़कर योगदान कर रहीं संस्थाएं

जेएनएन, नई दिल्ली

कोरोना से जंग करने के लिए पीएम केयर्स फंड में दानवीरों का बढ़चढ़कर योगदान करने का सिलसिला जारी है। कई संस्थाओं ने रविवार इस कोष में दिल खोलकर दान दिया।

मानव संसाधन मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि मंत्रालय से संबद्ध 28 संस्थानों ने पीएम केयर्स फंड में कुल 38.91 करोड़ रुपये की रकम जमा कराई है। केंद्रीय विद्यालयों के शैक्षिक व गैरशैक्षिक कर्मचारियों ने दस करोड़ व नवोदय विद्यालयों से सात करोड़ रुपये का योगदान किया है। इससे पूर्व मानव संधान मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक इस कोष में अपने एक माह का वेतन और अपनी सांसद निधि से एक करोड़ रुपये का भी योगदान कर चुके हैं।

▶ मानव संसाधन मंत्रालय से संबद्ध संस्थाओं ने दिए 38 करोड़

यूपीएल ने दिये 75 करोड़ : फसल सुरक्षा उत्पाद निर्माता कंपनी यूपीएल लिमिटेड ने पीएम केयर्स फंड में 75 करोड़ के योगदान की घोषणा की है। कंपनी देश के सार्वजनिक स्थानों को सैनिटाइज करने में भी सरकार को सहायता दे रही है। कंपनी ने अपने शैक्षणिक संस्थागत परिसर को क्वारंटाइन सेंटर बनाने के लिए भी तैयार है। यूपीएल के सीईओ जय श्राफ के मुताबिक कंपनी कोरोना वायरस को रोकने के लिए 200 आधुनिक यांत्रिक छिड़काव मशीनों और 225 कर्मचारियों को काम में संलग्न कर केंद्र और राज्य सरकार के प्रयासों में पूरक की भूमिका निभा रही है।

स्टील पीसीयू ने दिये 267 करोड़ : इस्पात उद्योग से जुड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों ने भी पीएम केयर्स फंड में दिल खोलकर दान किया है। सभी कंपनियों में कुल मिलाकर 267.55 करोड़ की मदद दी है। इस रकम में सर्वाधिक 155 करोड़ नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन (एनएमडीसी) ने दिये हैं। इस्पात मंत्रालय के अधीन मैंगनीज ओर इंडिया लिमिटेड ने 48 करोड़, स्टील एथारिटी आफ इंडिया (सेल) ने 30 करोड़ और राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआइएनएल) ने 6.16 करोड़ की मदद की है। छर्रे बनाने वाली कंपनी केआइओसीएल ने 10.10 करोड़, मेकोन ने 7.75, एमएसटीसी ने 5.54 और एफएसएनएल ने पांच करोड़ दिये हैं।

इंडियन बैंक के 43,000 कर्मियों ने दिये पीएम केयर्स फंड में अपने एक दिन के वेतन का योगदान दिया है। यह राशि 8.10 करोड़ रुपये के बराबर है।

कुछ कंपनियों की ओर से आ रही थी शिकायतें

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

उपभोक्ता मामलों के सचिव पवन कुमार अग्रवाल ने बताया कि कुछ कंपनियों की ओर से शिकायतें आ रही थीं कि उन्हें अपने संबंधित मजदूरों को लाने या ले जाने में दिक्कतें आ रही हैं, इसलिए स्थानीय प्रशासन को सलाह दी गई है कि वह फैक्ट्रियों और गोदामों में मजदूरों की उपलब्धता सुनिश्चित कराएं। इसके लिए मकान मालिकों, सोसाइटियों और गांवों से अपील करें कि वह जरूरी खाद्यान्न और राशन को ट्रांसपोर्ट और वितरण से जुड़े मजदूरों को अपने घरों से काम पर जाने दें। उन्होंने यह भी बताया कि उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने ई-गाव फाउंडेशन की मदद से ई-पास जारी करने की भी व्यवस्था की है। इस प्रणाली से सरकार उन कंपनियों पर नजर रखेगी जिसे उसने अपनी ओर से पास जारी किए होंगे। राज्य सरकारें भी इस ई-पास की सुविधा का लाभ ले सकती हैं।

एक झटके में 32 हजार मेगावाट कम हो गई बिजली की मांग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ लाइटें बंद होने से ग्रिड प्रबंधन पर नहीं पड़ा कोई दुष्प्रभाव

पीएम नरेंद्र मोदी की ओर से रविवार रात नौ बजे नौ मिनट के लिए घर की सभी लाइट बंद करने की अपील के तुरंत बाद से ही इस बात के कयास लगाए जा रहे थे कि इसका देश के ग्रिड सिस्टम पर क्या असर होगा। हालांकि सरकार की चाकचौबंद व्यवस्था के दम पर पांच अप्रैल की रात नौ बजे जब पूरे देश में लोगों ने अपने घर की लाइटें बंद कीं तो इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होने पाया। कहीं भी बिजली आपूर्ति पर कोई असर नहीं हुआ। इन नौ मिनटों के बाद बिजली आपूर्ति को निर्बाध बनाए रखने के लिए सरकार की तरफ से काफी इंतजाम किया गया था। स्वयं बिजली मंत्री आरके सिंह आला अधिकारियों के साथ अपने कार्यालय से समूची स्थिति पर नजर रखे हुए थे।

इस दौरान कुछ ऐसे भी तथ्य सामने आए जो बिजली मंत्रालय के लिए भी नए थे। मसलन, अभी तक बिजली मंत्रालय की तरफ से यह बताया जा रहा था कि देश में जितनी बिजली का इस्तेमाल रोशनी के लिए किया जाता है वह कुल बिजली उत्पादन का महज पांच से छह फीसद होता है। लेकिन रविवार को रात नौ बजे बिजली की मांग अचानक ही 1.17 लाख मेगावाट से घटकर 85 हजार मेगावाट रह गई। यानी लाइट बंद करने से ही बिजली की मांग लगभग 32 हजार मेगावाट कम हो गई जो कुल आपूर्ति के 27 फीसद से ज्यादा है। बहरहाल बिजली मंत्रालय ने राहत की सांस ली है कि बिजली की मांग में उनकी उम्मीद से ज्यादा कमी आने के बावजूद ग्रिड प्रबंधन में कोई गड़बड़ी नहीं हुई। रात नौ बजकर नौ मिनट के बाद फिर से बिजली की मांग 1.10 लाख मेगावाट पर पहुंच गई।

भाजपा विधायक ने कहा, देवभूमि में नई मस्जिदों के निर्माण पर लगे रोक

जागरण संवाददाता, चमोली : उत्तराखंड स्थित बदरीनाथ विधानसभा सीट से भाजपा विधायक महेंद्र भट्ट सोशल मीडिया पर अपनी पोस्ट को लेकर चर्चा में हैं। इस पोस्ट में उन्होंने कहा है कि उत्तराखंड को देवभूमि कहा जाता है और अब सरकार को देवभूमि में नई मस्जिदों के निर्माण पर रोक लगानी चाहिए। सोशल मीडिया पर की गई अपनी टिप्पणी पर अडिग भट्ट ने कहा कि जब मक्का-मदीना में मंदिर का निर्माण नहीं हो सकता तो वैसी ही देवभूमि में भी इस पर रोक लगनी चाहिए।

दरअसल, देश के साथ ही उत्तराखंड में जमातियों के कारण कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या में हुई वृद्धि से नाराज महेंद्र भट्ट ने कुछ दिन पहले सोशल मीडिया पर लोगों से अपील की थी कि नजीबाबाद (बिजनौर, उप्र.) से पहाड़ों पर आ रही सब्जी न खरीदें। उन्होंने यह भी आह्वान किया था कि बाहरी लोगों के सैलून में भी न जाएं।

8.3 करोड़ की आबादी वाले तुर्की में कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या 24 हजार के करीब पहुंच चुकी है। यहां संक्रमण से अब तक 500 लोगों की मौत हो चुकी है।

न्यूज गैलरी

इक्वाडोर की गलियों में लाशों पर उपराष्ट्रपति ने मांगी माफी

क्विटो : लैटिन अमेरिकी देश इक्वाडोर के कोरोना प्रभावित शहर गुयाक्विल की गलियों में पड़े शवों को लेकर उपराष्ट्रपति ओटो सोनेनहोल्जनर ने जनता से माफी मांगी है। स्थानीय लोगों ने इन शवों की तस्वीर सोशल मीडिया पर पोस्ट की थी। तटीय शहर गुयाक्विल की गलियों में ऐसे लावारिश शवों की संख्या करीब 150 है। कोरोना संक्रमण को लेकर खौफ ऐसा है कि लोग शवों के पास नहीं जा रहे हैं। देश में कोरोना के खिलाफ लड़ाई की अगुआई कर रहे उपराष्ट्रपति ने कहा कि उन्होंने इससे पहले कभी ऐसा नहीं देखा था। माफी मांगते हुए उन्होंने शवों को हटाने का आदेश दिया है। (एएफपी)

संक्रमण रोकने को तुर्की ने अनिवार्य किया फेस मास्क

इस्तांबुल : मुल्क में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए तुर्की की सरकार ने शनिवार से कई नए नियम लागू किए हैं। राष्ट्रपति रेसेप तैय्यप एर्दोगन ने एलान किया है कि अब कोई भी व्यक्ति बिना मास्क लगाए घर से बाहर न निकले। देश के व्यावसायिक राजधानी इस्तांबुल समेत 31 शहरों में वाहनों की आवाजाही पर अगले 15 दिनों के लिए रोक लगा दी गई है। सरकार 20 वर्ष से कम और 65 वर्ष से ज्यादा उम्र वालों के बाहर निकलने पर पहले ही रोक लगा चुकी है। देश का व्यस्त ट्राम परिवहन भी सोमवार से बंद रहेगा। लेकिन इस्तांबुल में फेरी के जरिये लोगों की आवाजाही बनी हुई है। नए कदमों को नाकाफी बताते हुए लोगों ने तुर्की में संपूर्ण लॉकडाउन की मांग की है। (एएफपी)

ठीक हो रही हैं ब्रिटेन के पीएम की गर्भवती मंगेतर

लंदन : ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन की गर्भवती मंगेतर कैरी साइमंड्स ने कहा कि वह अब कोरोना के संक्रमण से ठीक हो रही हैं। उन्होंने बताया कि कोरोना के लक्षणों के साथ वह पिछले एक हफ्ते से बिस्तर पर हैं। मेट्रो अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक कैरी साइमंड्स पीएम जॉनसन के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद से उनसे अलग सेल्फ-आइसोलेशन में रह रही हैं। साइमंड्स ने शनिवार को ट्वीट करके कहा कि उन्हें कोरोना का परीक्षण कराने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि पिछले एक हफ्ते से उनमें उसके लक्षण नजर आ रहे थे। इसलिए वह सात दिनों से आराम के बाद अच्छा महसूस कर रही हैं। अब मैं शक्तिवान महसूस कर रही हूं और सुधार की ओर बढ़ रही हूं। उन्होंने कहा कि गर्भवती होने के दौरान संक्रमण वाकई चिंता की बात है। अन्य गर्भवती महिलाओं को भी पूरी सावधानी बरतने की जरूरत है। साइमंड्स के बीमार होने की खबर 28 मार्च के बाद आई थी। (आइएएनएस)

ट्रंप बोले, अगले कुछ दिन अमेरिका के लिए बेहद कठिन

हालात बेकाबू ▶ इस दौरान कोरोना वायरस से सर्वाधिक मौतें होने की आशंका

न्यूयॉर्क और न्यूजर्सी में दिख सकता है सबसे ज्यादा प्रकोप

वाशिंगटन, एजेंसियां : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने देशवासियों को आगाह किया है कि आने वाले दो हफ्ते बेहद कठिन होने वाले हैं और इस दौरान बड़ी संख्या में मौतें होंगी। ट्रंप ने महामारी से निपटने के लिए फिर मलेरियारोधी दवा हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन का समर्थन किया है। उन्होंने कहा, अगर मेरे डॉक्टर इसकी मंजूरी देते हैं तो मैं इस दवा को लूंगा और अन्य लोगों को इसे लेने के लिए प्रोत्साहित करूंगा। इस दवा की प्रामाणिकता को लेकर कुछ दिनों पहले एक लाइव ब्रीफिंग के दौरान देश के सबसे बड़े संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉ एंथनी फॉसी और राष्ट्रपति ट्रंप आपस में भिड़ गए थे।

शनिवार को व्हाइट हाउस में नियमित प्रेस ब्रीफिंग के दौरान ट्रंप ने कहा कि दुर्भाग्य से ज्यादा मौतें होंगी। बाजारों को फिर से खोलने के संदर्भ में उन्होंने कहा, देश को बंद करने के लिए नहीं बनाया गया है। इलाज समस्या से बुरा नहीं हो सकता। यह बात ट्रंप ने तब कही जब डॉ.फॉसी अमेरिकियों को शारीरिक दूरी का पालन करते रहने की नसीहत दे रहे हैं।

व्हाइट हाउस के कोरोना वायरस कोऑर्डिनेटर डॉ देबोरा बर्क्स ने कहा, यही वह क्षण है जब हमें सभी दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए क्योंकि देश में इस महामारी से मरने वालों की संख्या तीन लाख से ज्यादा हो सकती है। यही वह समय है जब आप ग्रॉसरी और फॉर्मेसी स्टोर ना जाकर केवल अपने परिवार को सुरक्षित रखें। सभी लोग, दूसरे से छह फुट की दूरी से रहें और अपने हाथ धोते रहें। टास्क फोर्स से जुड़े अमेरिका के कुछ बड़े डॉक्टरों का मानना है कि महामारी से निपटने का एकमात्र उपाय उचित शारीरिक दूरी है।

विशेष रूप से प्रभावित होंगे न्यूयॉर्क और न्यूजर्सी : डॉ. बर्क्स ने चेतावनी दी है कि आने वाले सात से दस दिनों में महामारी का व्यापक प्रकोप देखने को मिलेगा। न्यूयॉर्क और न्यूजर्सी इससे विशेष रूप से प्रभावित होंगे। अमेरिकी सरकार के पूर्वानुमान मॉडल के आधार पर 10 अप्रैल को न्यूयॉर्क में 855 मौतें होंगी।

न्यूयॉर्क में साठ हजार बेड की कमी : कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित न्यूयॉर्क प्रांत में साठ हजार सामान्य बेड और 11 हजार आइसीयू बेड की कमी है। न्यूयॉर्क और न्यूजर्सी में महामारी के प्रकोप का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि जिन लोगों का टेस्ट किया जा रहा है, उनमें से 35 फीसद का टेस्ट पॉजिटिव आ रहा है। लुसियाना में 26 फीसद लोगों का टेस्ट पॉजिटिव आ रहा है। मिशिगन, कनेक्टिकट, इंडियाना, जार्जिया, और इलिनॉयस में यह आंकड़ा 15 फीसद है। डॉ फॉसी का कहना है कि इस महामारी से निपटने का एकमात्र समाधान वैक्सीन है, लेकिन उसे विकसित करने में अभी 12-18 महीने लगेंगे।

वेंटीलेटर मांगने वाले राज्यों को झिड़का : ट्रंप ने उन प्रांतों की आलोचना की है, जिन्होंने संघीय सरकार से वेंटीलेटर देने का अनुरोध किया था। उन्होंने कहा, संघीय सरकार के पास दस हजार वेंटीलेटर थे। कुछ राज्यों के पास जरूरत से अधिक वेंटीलेटर हैं, लेकिन इसके बावजूद वह लौटाने को तैयार नहीं है।

न्यूयॉर्क में चौबीस घंटे में 630 की मौत : न्यूयॉर्क प्रांत में पिछले चौबीस घंटों में 630 लोगों की मौत हुई है। प्रांत में एक दिन में होने वाली सर्वाधिक मौतें हैं। इस तरह प्रांत में मरने वालों की कुल संख्या 3,565 हो गई है। न्यूयॉर्क में संक्रमित लोगों की संख्या एक लाख 13 हजार से ज्यादा है। अकेले न्यूयॉर्क शहर में संक्रमित लोगों की संख्या 63 हजार से ज्यादा है। मरने वालों की संख्या 2,624 हो गई है। न्यूयॉर्क के गवर्नर ने कहा, आने वाले चार से आठ दिनों में मृतकों और संक्रमितों की संख्या अपने उच्चतम बिंदु पर होगी।

व्हाइट हाउस में कोरोना को लेकर नियमित ब्रीफिंग के दौरान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। रायटर

जर्मनी-फ्रांस ने अमेरिका पर लगाया मास्क जब्त करने का आरोप

वाशिंगटन, आइएएनएस : जर्मनी और फ्रांस ने अमेरिका पर उनके लिए बनाए गए लाखों फेस मास्क और सुरक्षात्मक गीयर जब्त करने का आरोप लगाया है। दोनों देशों ने इसे 'आधुनिक चोरी' की संज्ञा दी है। इससे पहले फ्रांस ने अमेरिका पर चीन में उसके लिए बनाए जा रहे मास्क खरीदने का आरोप भी लगाया था।

ब्रिटेन के गार्डियन अखबार में जर्मन प्रशासन की ओर से छपी खबर के अनुसार, थाइलैंड में एक विमान से दूसरे विमान में स्थानांतरित करने के दौरान दो लाख एन95 मास्क को अमेरिका भेज दिया गया। जर्मनी के गृह मंत्री एंड्रियास गिजेल ने कहा, कोराना वायरस की वैश्विक संकट के दौरान अमेरिका द्वारा किया गया यह व्यवहार कतई उचित नहीं है। जर्मनी के मीडिया में इस तरह की खबरें भी आई थीं कि अमेरिकी कंपनी 3एम के लिए एक चीनी कंपनी ने मास्क बनाए थे। लेकिन अमेरिकी कंपनी 3एम ने सफाई दी है कि उसके पास ऐसी कोई जानकारी नहीं है, जिससे यह पता चले कि कंपनी के लिए बनाए गए फेस मास्क जब्त कर लिए गए हैं। कंपनी के पास बर्लिन पुलिस के लिए फेस मास्क बनाने की कोई सूचना नहीं है।

घर पर रहकर खुश नहीं है राष्ट्रपति का छोटा बेटा बैरन

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का छोटा बेटा बैरन घर पर रहकर खुश नहीं है। 14 वर्षीय बैरन अपनी मां मेलानिया और पिता डोनाल्ड ट्रंप के साथ राष्ट्रपति भवन व्हाइट हाउस में ही रहता है। 1963 में जॉन एफ केनेडी जूनियर के बाद यह पहला मौका है जब किसी राष्ट्रपति का बेटा व्हाइट हाउस में पिता के साथ रह रहा है। व्हाइट हाउस के कुछ परंपरागत कार्यक्रमों में भाग लेने के अलावा बैरन सरकारी तड़क-भड़क से दूर रहता है। पत्रकारों के सवाल पर ट्रंप ने कहा, 'बैरन अच्छा एथलीट है। उसे फुटबॉल काफी पसंद है। वह भी अन्य लोगों की तरह ही है। वह अपने कमरे में खुश है, लेकिन उतना नहीं जितना सामान्य दिनों में होता है।' राष्ट्रपति ने यह बात तब कही जब कुछ पत्रकारों ने उनसे घर पर रहने के दौरान अपने छोटे बेटे के अनुभवों को साझा करने का आग्रह किया। ट्रंप ने कहा, बैरन को खेलना पसंद है। देखते हैं क्या होता है।

बैरन। फाइल/एएफपी

ट्रंप ने मोदी से किया क्लोरोक्विन भेजने का आग्रह

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कोरोना वायरस के इलाज में कारगर मलेरिया की दवा हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन दवा भेजने का आग्रह किया है। उल्लेखनीय है अपने देश में कोरोना के बढ़ते प्रकोप के बीच भारत ने इस दवा के निर्यात पर रोक लगा दी है।

ट्रंप ने बताया कि उन्होंने शनिवार की सुबह भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर बातचीत की। हमने उनसे मलेरिया के इलाज में काम आने वाली दवा हाइड्राक्सीक्लोरोक्विन दवा का निर्यात खोलने का आग्रह किया। ट्रंप ने शनिवार को व्हाइट में नियमित प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि भारत में यह दवा बड़े पैमाने पर बनती है। यह दवा काफी सस्ती है और कोरोना के इलाज में भी कारगर है। मेरे आग्रह पर भारत गंभीरता से विचार कर रहा है। उल्लेखनीय है कि भारत के विदेश व्यापार निदेशालय ने चार अप्रैल को हाइड्राक्सीक्लोरोक्विन दवा और इसके फार्मूले के निर्यात पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि यदि भारत अमेरिका को इस दवा की आपूर्ति करता है तो वे अहसानमंद रहेंगे। हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि अमेरिकी कंपनियों ने भारत को कितनी मात्रा का आर्डर दिया है। करीब आठ हजार लोगों की मौत और तीन लाख से अधिक लोगों के चपेट में होने से अमेरिका कोरोना से गंभीर रूप से पीड़ित देशों की सूची में शीर्ष पर पहुंच गया है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) ने कोरोना के इलाज में हाइड्रक्सीक्लोरोक्विन दवा के इस्तेमाल की छूट दे रखी है। दुनिया भर में अब तक करीब 64,000 लोगों की जान लेने और 12 लाख से अधिक लोगों को संक्रमित करने वाली इस बीमारी का इलाज ढूंढ़ने में आज दुनिया भर के वैज्ञानिक जुटे हैं।

वुहान में सामान्य हो रहे हालात

▶ प्रशासन ने जिले के नौ इलाकों को 'लो रिस्क' घोषित किया

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	15,362	124,632
स्पेन	12,418	130,759
अमेरिका	8,454	311,637
फ्रांस	7560	89,953
ईरान	3603	58,226
चीन	3,329	81,669
ब्रिटेन	4313	41,903

बीजिंग, एजेंसियां : वुहान में स्थितियां धीरे-धीरे सामान्य हो रही हैं। इसकी एक बानगी उस समय मिली जब जिले के नौ इलाकों को 'लो रिस्क' घोषित कर दिया गया जबकि चार अन्य इलाकों को 'मीडियम रिस्क' वाला घोषित किया गया है। 5.6 करोड़ की आबादी वाले हुबेई प्रांत का अब कोई भी जिला 'हाई रिस्क' की श्रेणी में नहीं है। वहीं चीन में संक्रमण के 30 नए मामले सामने आए हैं। इसमें स्थानीय संक्रमण के पांच मामले शामिल हैं।

चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग (एनएचसी) ने कहा कि 47 दूसरे लोग भी संक्रमित मिले हैं, लेकिन उनमें लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं। बिना लक्षण वाले 1,024 लोग अभी भी डॉक्टरों की निगरानी में हैं। इनमें से 244 विदेशी हैं। शनिवार को चीन में कोरोना से तीन और लोगों की मौत हुई है। ये सभी मौतें महामारी से सर्वाधिक प्रभावित हुबेई प्रांत में हुईं। इस तरह चीन में महामारी से मरने वालों की तादाद 3,329 हो गई है। संक्रमित लोगों की बात करें तो इनकी संख्या 81,669 है। इनमें से 1,376 मरीजों का इलाज चल रहा जबकि 76,964 लोगों को अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया है। चीन सरकार के निर्धारित मानदंडों के अनुसार जिन इलाकों में पिछले 14 दिनों में संक्रमण का कोई मामला सामने नहीं आया है, उन्हें लो रिस्क वाला घोषित किया गया है जबकि जिन इलाकों में 50 से कम संक्रमण के मामले दर्ज किए गए हैं उन्हें मीडियम रिस्क के तौर पर वर्गीकृत किया गया है।

नब्बे हजार पहुंची जर्मनी में संक्रमित लोगों की संख्या : जर्मनी में संक्रमित लोगों की संख्या 89,300 हो गई है जबकि 1250 लोगों की मौत हुई है। शनिवार को वहां पर 147 लोगों की मौत हुई जबकि संक्रमण के 5,600 नए मामले दर्ज किए गए।

टोक्यो में संक्रमण के 143 नए मामले : जापान की राजधानी टोक्यो में संक्रमण के 143 नए मामले सामने आए हैं। यह एक दिन में संक्रमित होने वाले लोगों की सर्वाधिक संख्या है। इस तरह टोक्यो में संक्रमित लोगों की संख्या का आंकड़ा एक हजार को पार कर गया है।

स्पेन में 774 और लोगों की मौत : स्पेन में पिछले चौबीस घंटों में 774 लोगों की मौत हुई है। इस तरह मरने वालों की कुल संख्या 12,418 हो गई है। 6,023 लोगों का टेस्ट पॉजिटिव आने के बाद संक्रमित लोगों की कुल तादाद 130,759 हो गई है। अमेरिका के बाद विश्व में सबसे ज्यादा स्पेन में लोग संक्रमित हैं। तीसरे नंबर पर इटली है। स्पेन के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि 38,080 लोग ठीक हो चुके हैं जबकि 58,744 लोग अभी भी अस्पताल में हैं। 6,800 लोगों का आइसीयू में इलाज चल रहा है।

ईरान में लागू होगी स्मार्ट डिस्टेंसिंग योजना : ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने कहा कि सोशल डिस्टेंसिंग के अच्छे परिणाम सामने आने के बाद अब देश में संक्रमण को रोकने के लिए 'स्मार्ट डिस्टेंसिंग' योजना लागू की जाएगी।

मरने वालों की संख्या 65 हजार से ज्यादा : विश्वभर में कोरोना से मरने वालों की संख्या 65,272 हो गई है वहीं 190 देशों के 1206480 लोग संक्रमित हैं। अब तक 233,300 लोग ठीक होकर घर जा चुके हैं।

सेवा करने वाले दुनिया के असली हीरो : पोप फ्रांसिस

वेटिकन सिटी, एपी : ईसाइयों के सबसे बड़े धर्मगुरु पोप फ्रांसिस ने श्रद्धालुओं से इतर अकेले में पाम संडे मनाया। सटे इटली में कोरोना वायरस से हो रही तबाही के बीच पोप ने कहा, लोगों को वह करना चाहिए- जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो। अपने दुख से भले ही मन भारी हो लेकिन हमें दूसरों की सेवा का उद्देश्य नहीं भूलना चाहिए।

धर्मगुरु ने कहा- उन असली नायकों की ओर देखो, जो इन दिनों सामने आए हैं। इससे पहले उन्हें कोई जानता नहीं था, वे अमीर नहीं थे और सफल भी नहीं थे। लेकिन इन थोड़े से दिनों में उन्होंने बड़े काम कर जीवन सफल बना लिया। उनसे सीखना चाहिए। जाहिर है पोप का इशारा सेवा कार्य में लगे डॉक्टरों और नर्सों की ओर था। पोप पिछले कई हफ्तों से ऑनलाइन ही अनुष्ठान कर रहे हैं।

द. कोरिया में प्रार्थना सभा आयोजित करने वाले चर्च पर होगी कार्रवाई

सियोल, आइएएनएस : दक्षिण कोरिया में कोरोना संक्रमण रोकने को लेकर जारी सरकारी आदेश का उल्लंघन करने पर राजधानी सियोल के एक प्रोटेस्टेंट चर्च पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। सियोल प्रशासन ने रविवार को इसका एलान करते हुए कहा, सारंग जेइल चर्च ने प्रशासन के आदेशों को नहीं मानते हुए अपने परिसर में लोगों को इकट्ठा होने दिया। सोशल डिस्टेंसिंग के प्रशासनिक आदेश को दरकिनार करते हुए चर्च ने लगातार दूसरे रविवार को प्रार्थना सभा का आयोजन किया। इससे कोविड-19 वायरस के खिलाफ जारी लड़ाई कमजोर हुई।

कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ ही उन्नत तकनीक का सहारा ले रहे दक्षिण कोरिया में नए मरीजों की संख्या में गिरावट देखने को मिली है। लेकिन सियोल और उसके आसपास के इलाकों में संक्रमण के मामलों में बढ़ोतरी हुई है। इसके पीछे संक्रमण के सामुदायिक स्तर पर पहुंचने की आशंका जताई जा रही है। दक्षिण कोरिया में कोरोना संक्रमितों की संख्या दस हजार के ऊपर पहुंच गई है। देश में 183 मरीजों की मौत हो चुकी है।

इटली में पहली बार आइसीयू में भर्ती मरीजों की संख्या घटी

मिलान, एजेंसियां : कोरोना महामारी से सबसे ज्यादा मौतें इटली में हुई हैं। लेकिन ताजा आंकड़ों से इटली में हालात सुधरने के संकेत मिले हैं। देश में पहली बार आइसीयू में भर्ती मरीजों की संख्या में कमी आई है। शनिवार को मृतकों की संख्या में भी कमी आई और यह मात्र 681 रही। इससे पहले 23 मार्च को सबसे कम 601 लोगों की मौत हुई थी। इटली में अब तक 15 हजार से ज्यादा मौत हो चुकी हैं।

इटली के नागरिक सुरक्षा विभाग के मुताबिक संक्रमित लोगों की संख्या भले ही एक लाख 19 हजार से बढ़कर एक लाख 24 हजार हो गई है, लेकिन पहली बार आइसीयू में मरीजों की संख्या में कमी आई है। शुक्रवार को गंभीर मरीजों की संख्या 4,068 थी जो शनिवार को कम होकर 3,994 हो गई। देश में इस वक्त 3.3 फीसद की दर से संक्रमण फैल रहा है। नागरिक सुरक्षा विभाग के प्रमुख एंजेलो बोर्रेली ने कहा, 'ये हमारे लिए बेहद अहम आंकड़े हैं क्योंकि पहली बार ऐसा हुआ है जब गंभीर मरीजों की संख्या में कमी आई है। जब से हमने इमरजेंसी के हालात देखे हैं तब से पहली बार गंभीर मरीजों की संख्या में कमी आई है।' अधिकारियों का कहना है कि संक्रमित मामलों में कमी आना अच्छा संकेत है और इससे यह पता चलता है कि अगर सख्त लॉकडाउन का पालन किया गया तो जल्द ही हम इस महामारी पर काबू पा लेंगे।

सिंगापुर में कोरोना पीड़ित दस भारतीय हुए ठीक

सिंगापुर, प्रेट्र : सिंगापुर में कोरोना वायरस की चपेट में आए 72 भारतीय नागरिकों में से दस ठीक हो चुके हैं। भारतीय उच्चायुक्त जावेद अशरफ ने रविवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि सिंगापुर सरकार की मदद से यहां फंसे भारतीयों की मदद की जा रही है। संक्रमण रोकने को लेकर अंतरराष्ट्रीय उड़ानें बंद होने से सिंगापुर में 700 से ज्यादा भारतीय फंसे हैं। इनमें कई पर्यटक और छात्र हैं। इनके अलावा सिंगापुर में बड़ी संख्या में विनिर्माण और शिपयार्ड के क्षेत्र में रोजगार पाने वाले भारतीय भी यहां फंसे हैं।

नए मामलों में कमी से ऑस्ट्रेलिया उत्साहित

मेलबर्न, रायटर : ऑस्ट्रेलिया की सरकार कोरोना के नए मरीजों की संख्या में आई तेज गिरावट से उत्साहित है। पिछले 24 घंटों में देश में कोरोना पॉजिटिव पाए गए मरीजों की संख्या 139 रही, जो मार्च के मध्य से हर दिन सामने आ रहे मामलों की तुलना में पांच प्रतिशत है। ताजा आंकड़े जारी करते हुए ऑस्ट्रेलिया के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ब्रेंडन मर्फी ने रविवार को कहा, यह उत्साहजनक है, लेकिन आगे सतर्कता बरतने की जरूरत है। उन्होंने आगाह किया कि लोग संक्रमण रोकने को लेकर सरकार के सभी निर्देशों का पूरा पालन करें। ऑस्ट्रेलिया में कोरोना मरीजों की संख्या 5600 से ज्यादा हो गई है।

नए मामलों में आई कमी को अच्छा संकेत मानते हुए ऑस्ट्रेलिया के स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि कोरोना पर जीत के लिए लोगों को सोशल डिस्टेंसिंग जैसे नियमों का अगले छह महीने तक पालन करना पड़ सकता है। वायरस के तेजी से फैले संक्रमण को रोकने के लिए ऑस्ट्रेलिया की प्रांतीय सरकारें कई नियमों का कड़ाई से पालन कराने में जुटी हैं। सार्वजनिक स्थलों को बंद करने के अलावा पुलिस को छूट दी गई है कि वे बिना किसी ठोस वजह के बाहर आने वालों पर भारी जुर्माना लगाएं।

ब्रिटेन पर दोहरी मार, अब गरीबी भी बढ़ने लगी

आर्थिक संकट

- एक करोड़ 40 लाख ब्रिटिश गरीबी में रह रहे हैं
- यह तादाद ब्रिटेन की कुल आबादी का करीब एक-चौथाई
- आर्थिक कटौतियों के बावजूद अब तंगहाली के हालात बन गए हैं

लंदन, एएफपी : कोरोना वायरस की वैश्विक महामारी ब्रिटेन में संक्रमण के साथ ही अब गरीबी बढ़ा रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि ब्रिटेन में वैश्विक आर्थिक संकट के बाद एक दशक से ब्रिटेन की सरकार ने आर्थिक कटौतियों का पालन किया है, उसके बावजूद अब तंगहाली के हालात बन रहे हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार ब्रिटेन में एक करोड़ 40 लाख लोग गरीबी में रह रहे हैं। यह तादाद ब्रिटेन की कुल आबादी का करीब एक-चौथाई है।

ब्रिटिश सरकार के आंकड़ों के अनुसार 42 लाख ब्रिटिश बच्चे गरीबी का शिकार हैं। यह आंकड़ा वहां के कुल बच्चों का 30 फीसद है। ब्रिटेन में कोरोना संक्रमण के कारण लॉकडाउन के चलते बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियां जा रही हैं। ऐसे में ब्रिटेन वासियों के लिए हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं।

सामाजिक परिवर्तन के लिए काम करने वाले संगठन जोसेफ राउनट्री फाउंडेशन के अर्थशास्त्र प्रमुख डेव इन्स ने कहा है कि अस्पतालों और खुदरा क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए गरीबी का खतरा खासतौर पर बढ़ रहा है। चूंकि इस क्षेत्र के लोगों का वेतन पहले ही बहुत कम है और नौकरियां भी असुरक्षित हैं। पिछले एक पखवाड़े में ब्रिटेन के करीब दस लाख नागरिकों ने यूनिवर्सल क्रेडिट यानी कर्ज के लिए आवेदन किया है। यह ब्रिटिश सरकार का सबसे प्रमुख सरकारी कर्ज है। कर्ज के लिए आवेदन की स्थिति सामान्य दिनों के मुकाबले दस गुना अधिक है।

ब्रिटेन के चाइल्ड पावर्टी एक्शन ग्रुप की एक डायरेक्टर लुइसा मैकग्रीहम ने कहा है कि कोरोना महामारी से पहले जिन परिवारों की आय अच्छी थी और अब उन्हें यह कर्ज लेना पड़ रहा है, वह एकाएक अपने को गरीबी के दायरे में पाएंगे। गरीबी और लॉकडाउन के चलते जिनके बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे, उन लोगों ने भी ऑनलाइन शिक्षा की मांग करके मुसीबत बढ़ा दी है।

गरीब बच्चों को शिक्षा भी नहीं : मैकग्रीहम ने कहा कि अगर वह गरीब बच्चे ऐसे परिवारों से हैं, जहां इंटरनेट या कंप्यूटर नहीं है, वह ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि हम ऐसे देश में रह रहे हैं जहां कोरोना संक्रमण चलते बच्चों को गरीबी का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि जिस तरह 2008 में वैश्विक आर्थिक संकट के बाद ब्रिटेन में बड़े पैमाने पर सरकारी और गैरसरकारी खर्चों कटौती की गई थी, उसके बाद अब इस कोरोना महामारी ने ब्रिटेन को गरीबी के संकट में झोंक दिया है। इसी के चलते लोग बड़े पैमाने पर सरकार से कर्ज ले रहे हैं।

फूड बैंकों को भी कम दान मिल रहा : ब्रिटेन में सरकारी सहायता पाने वाले 25 साल से अधिक आयु के ब्रिटिश नागरिक को एक हजार पाउंड (करीब 1,239 डॉलर) मिलेंगे। इस देश में गरीबी को रोकने के लिए एक व्यक्ति के घर में मासिक राशि 400 पाउंड ही दी जाएगी। फूड बैंक को भी कम दान मिल रहा है जो कोरोना पीड़ितों और बेघरों का भोजन मुहैया कराता है। 1200 फूड बैंक वाले ट्रुसैल ट्रस्ट के अनुसार उनके सामने बहुत बड़ी चुनौती है। हालांकि ब्रिटिश सरकार बच्चों को स्कूलों में मिलने वाला खाना अभी भी मुहैया करा रही है। नेशनल एजुकेशन यूनियन की अध्यक्ष और अध्यापिका अमंडा मार्टिन ने कहा कि वह अपने स्कूल में अभी भी खाने के पैकेट भेजती हैं, जहां से वह लोग भोजन ले जाते हैं।

लापरवाही

करीब चार हजार लोग तो सीधे वुहान से अमेरिका पहुंचे, लोगों का मानना है कि हवाई यात्रा पर पहले ही लगनी चाहिए थी रोक

कोरोना फैलने के बाद चीन से 4 .3 लाख लोग अमेरिका आए

न्यूयॉर्क टाइम्स से

वाशिंगटन : चीन द्वारा नववर्ष की पूर्व संध्या पर रहस्यमय कोरोना बीमारी की जानकारी देने के बाद से अगले दो माह तक करीब 4,30000 लोगों ने अमेरिका की यात्रा की। अमेरिकी प्रशासन द्वारा अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर रोक लगने से पहले तक दोनों देशों के बीच करीब 40 हजार उड़ानों का संचालन हुआ। यह जानकारी दोनों देशों से मिले आंकड़ों के जरिये सामने आई है।

चीन से अमेरिका आए इन यात्रियों में कई देशों के नागरिक शामिल थे। इनमें से ज्यादातर उड़ानें, सैनफ्रांसिस्को, लास एंजिलिस, न्यूयार्क, शिकागो, सिएटल, नेवार्क, न्यूजर्सी और डेट्रायट एयरपोर्ट पर आईं। हजारों यात्री कोरोना की शुरुआत वाले वुहान से भी सीधे यहां पहुंचे। अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर दो फरवरी से लगाए गए प्रतिबंध के बावजूद अमेरिकी नागरिकों को नियमों में मिली छूट के कारण एक हफ्ते पहले तक बीजिंग से सैनफ्रांसिस्को, न्यूयार्क व लास एंजिलिस के बीच उड़ानें जारी रहीं। इस तरह की कुल 279 उड़ानें संचालित की गईं। अमेरिकी स्वास्थ्य प्रशासन इस मुक्त आवाजाही से संभावित नुकसान का आकलन कर रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बार-बार दोहराया है कि यात्राओं पर उनके द्वारा लगाए गए प्रतिबंध से देश में कोरोना की रफ्तार धीमी हुई है। बीते मंगलवार को उन्होंने नियमित ब्रीफिंग में कहा कि बेशक हम लोगों ने जल्दबाजी दिखाई, लेकिन हमने समझदारी से बीमारी को थाम लिया।

हालांकि डाटा का विश्लेषण कर न्यूयार्क टाइम्स ने निष्कर्ष निकाला कि हवाई यात्राओं पर प्रतिबंध प्रभावी तो साबित हुआ, लेकिन इसे काफी देर से लगाया गया। कोरोना के 25 फीसद मरीजों में शुरुआती लक्षण न दिखाई देने की बात सामने आने के बाद तो यह और साफ है कि यात्रा पर प्रतिबंध बहुत पहले ही लग जाने चाहिए थे।

अमेरिका में कोरोना वायरस का पहला 20 जनवरी को पकड़ा गया था। कई विशेषज्ञों का मानना है कि कई मरीजों में लक्षण न उभरने से कई सप्ताह तक कोरोना के संक्रमण के मामले बिना पकड़ में आए अंदर ही अंदर बढ़ते रहे। जनवरी के पहले पखवाड़े में जब तक चीन इस बीमारी की भयावहता को कम बताता रहा तब तक वहां से आने वाले किसी भी यात्री की स्क्रीनिंग नहीं हुई। चीन से आने वाले यात्रियों की स्क्रीनिंग मध्य जनवरी से शुरू हुई वह भी केवल लॉस एंजिलिस, न्यूयॉर्क और सैन फ्रांसिस्को एयर पोर्ट पर। तब तक सीधे वुहान से आए करीब 4000 लोग अमेरिका में दखिल हो चुके थे।

बीजिंग एयरपोर्ट पर लॉस एंजिलिस के लिए फ्लाइट का इंतजार करते यात्री। फाइल/साभार : एनवाईटी

इटली से दान में मिले पीपीई को पैसे लेकर उसे ही दे रहा चीन

वाशिंगटन, एएनआइ : कोरोना वायरस मामले में चीन का कुत्सित चेहरा एक बार फिर दुनिया के सामने आया है। चीन में जनवरी-फरवरी में वायरस का प्रकोप चरम पर था, तब इटली ने उसे सहायता स्वरूप निजी सुरक्षा के उपकरण और पोशाक (पीपीई) भेजी थीं। लेकिन अब जबकि वायरस प्रकोप से इटली का बुरा हाल है और उसके पास पीपीई की कमी आ गई है, तब चीन उन्हीं पीपीई को उसे बेच रहा है। चीन से पैदा हुआ कोरोना वायरस इस समय इटली को बर्बाद कर रहा है।

दुनिया में सबसे ज्यादा मौतें (15 हजार से ज्यादा) इसी यूरोपीय देश में हुई हैं। इटली यूरोप का ऐसा प्रमुख देश है जिसके चीन से सबसे अच्छे रिश्ते हैं। इसी रिश्ते के चलते इटली ने चीन की गाढ़े वक्त में मदद की थी और उसे वे पोशाक व उपकरण भेजे थे जो डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों के लिए इलाज के दौरान सबसे ज्यादा जरूरी होते हैं।

अंडरवियर के कपड़े के मास्क बना भेजे पाकिस्तान

इस्लामाबाद, एएनआइ : अपनी हरकतों से चीन किसी को नहीं छोड़ रहा। यहां तक कि अपने खास दोस्त पाकिस्तान को भी नहीं। पाकिस्तान ने बड़ी उम्मीद से कोरोना से लड़ने वाले उपकरणों और स्तरीय मास्क की चीन से दरकार की थी। चीन ने उसे टेस्टिंग किट के साथ ही एन 95 स्तर के मास्क भेजने का वादा किया था। लेकिन जब चीन से आए कंटेनर खोले गए तो उनमें अंडरवियर से बने फेस मास्क मिले। एक स्थानीय पाकिस्तानी चैनल ने इस आमद पर कहा- चीन ने चूना लगा दिया। पता चला है कि सिंध के जिला अस्पतालों में जब डॉक्टरों ने आयातित सामग्री के कार्टन खोले तो पता चला कि फेस मास्क अंडरवियर के कपड़े के बने हुए हैं।

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
स्पोर्ट्स
सोमवार 6 अप्रैल 2020
www.jagran.com

मैंने ऑस्ट्रेलिया के प्रथम श्रेणी क्रिकेट से संन्यास ले लिया है।
— स्टीवन ओ कीफ, ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर

पता नहीं पिछली बार कब इतना लंबा ब्रेक ली थी : सिंधू

हैदराबाद, आइएएनएस : मौजूदा विश्व चैंपियन भारत की स्टार महिला बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने कहा है कि वह टोक्यो ओलंपिक के एक साल तक के लिए स्थगित होने की खबर सुनने के लिए मानसिक रूप से तैयार थी। सिंधू ने कहा कि अब पता नहीं पिछली बार कब मैंने इतना लंबा ब्रेक लिया था। हालांकि अभी पता नहीं कि मैं कोर्ट पर कब वापसी करुंगी।

एक नजर में

फॉर्मूला-1 चैंपियनशिप रद होनी चाहिए : बर्नी

लंदन : फॉर्मूला-1 के पूर्व प्रमुख बर्नी एक्लेस्टोन को लगता है कि 2020-21 की चैंपियनशिप को रद कर देना चाहिए। 89 वर्षीय बर्नी को लगता है कि कोरोना वायरस के संक्रमण के बीच रेस नहीं कराई जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि हमें चैंपियनशिप रोक देनी चाहिए और इन्हें अगले वर्ष से कराया जाना चाहिए। एक चैंपियनशिप सत्र को कराने के लिए आठ रेस की जरूरत होती है और अभी 14 रेस बाकी हैं। (आइएएनएस)

जून से पहले अर्जेंटीना में फुटबॉल संभव नहीं

ब्यूनस आयर्स : अर्जेंटीना के राष्ट्रपति अल्बटरे फर्नांडीज ने कहा है कि कोरोना वायरस के कारण देश में सभी तरह की फुटबॉल गतिविधियां रूकी हुई है और जून से पहले शुरू होना संभव नहीं है। फर्नांडीज ने कहा कि स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि देश में कोरोना वायरस संक्रमण अप्रैल और मई तक जारी रह सकता है। फर्नांडीज ने कहा कि कुछ गतिविधियां दूसरों की तुलना में अधिक प्रभावित होंगी। उनमें फुटबॉल, सिनेमा शामिल हैं। (आइएएनएस)

फिजी के दो रग्बी खिलाड़ी हुए गिरफ्तार

सुवा : फिजी के दो रग्बी खिलाड़ियों को आइसोलेशन नियम नहीं मानने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनों खिलाड़ी देश में प्रसिद्ध नहीं है, लेकिन फिजी रग्बी यूनियन ने बताया कि वे दोनों पेशेवर खिलाड़ी हैं। फिजी के प्रधानमंत्री फ्रैंक बैइनीमारामा ने दोनों खिलाड़ियों को देश की जनता की जान खतरे में डालने का आरोप लगाया है। एक खिलाड़ी सिंगापुर से लौटा था। (एएफपी)

कोबे ब्रायंट हॉल ऑफ फेम में शामिल किए गए

न्यूयॉर्क : दिग्गज बास्केटबॉल खिलाड़ी और इस साल के शुरू में दुर्घटना में अपनी जान गंवाने वाले कोबे ब्रायंट को हॉल ऑफ फेम में शामिल किया है। नेसिमित मेमोरियल बास्केटबॉल हॉल ऑफ फेम में इस साल नौ लोगों को शामिल किया गया है। इनमें ब्रायंट के अलावा एनबीए के अन्य स्टार टिम डंकन और केविन गार्नेट भी शामिल हैं। कोबे की पत्नी वेनेसा ब्रायंट ने कहा कि काश वह इस सम्मान का जश्न मनाने के लिए हमारे साथ होते। (एपी)

वेतन कटौती पर आइसीए की टिप्पणी है हास्यास्पद : गावस्कर

भारतीय क्रिकेटर्स संघ के बयान को लेकर संतुष्ट नहीं दिखे दिग्गज बल्लेबाज

क्रिकेट डायरी

मुंबई, आइएएनएस: पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने भारतीय क्रिकेटर्स संघ (आइसीए) के अध्यक्ष अशोक मल्होत्रा के उस बयान को लेकर उन्हें कड़ी फटकार लगाई है, जिसमें उन्होंने कहा था कि कोरोना वायरस के बीच दुनियाभर में खेल टूर्नामेंट के स्थगित होने के कारण भारतीय क्रिकेटरों को वेतन में कटौती करनी होगी।

गावस्कर ने सहयोगी अखबार मिड-डे के लिए अपने कॉलम में लिखा कि अन्य खेलों की तरह ही अगर आप नहीं खेलते हैं तो आपको वेतन नहीं मिलेगा और यही होगा। हालांकि यह पढ़कर बेहद हास्यास्पद लगा कि भारतीय क्रिकेटर्स संघ के अध्यक्ष ने कहा है कि भारत के अंतरराष्ट्रीय और प्रथम श्रेणी के खिलाड़ियों के वेतन में भी कटौती होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि कोई भी बीसीसीआइ के साथ पक्षपात करने का आरोप लगा सकता है, लेकिन सवाल यह है कि वह किस अधिकार से बात कर रहा है। भारत के मौजूदा अंतरराष्ट्रीय और प्रथम श्रेणी के खिलाड़ी आइसीए के सदस्य नहीं है, इसलिए वह उस आधार पर नहीं बोल सकते हैं। वेतन कटौती के बारे में बात करना आसान है बशर्ते कि इससे आपकी खुद की जेब ढीली न हो।

युवराज बोले, शुरुआत में रोहित ने इंजमाम की याद दिला दी थी: पूर्व भारतीय ऑलराउंडर युवराज सिंह ने कहा है कि सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने अपने करियर के शुरुआती दिनों में उन्हें पाकिस्तान के पूर्व कप्तान इंजमाम उल हक की याद दिला दी थी। युवराज ने कहा कि मुझे लगता है कि जब वह (रोहित) भारतीय टीम में आए थे तो ऐसा लगता था कि इंजमाम की तरह उनके पास शॉट खेलने के लिए बहुत समय है।

सुनील गावस्कर ● फाइल फोटो, प्रेट्र

स्थिति सुधरने के बाद बंद दरवाजों के बीच हो क्रिकेट : लैंगर

सिडनी : ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर का मानना है कि कोरोना वायरस के बाद अगर स्थिति में सुधार होती है तो बंद दरवाजो के बीच खाली स्टेडियम में क्रिकेट होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसा करना प्रशंसकों के लिए काफी अच्छा रहेगा जो कोरोना वायरस के कारण इन दिनों क्रिकेट मैच देखने के वंचित हो गए हैं। लैंगर ने कहा कि जब आप क्रिकेट खेलना शुरू करते हैं, जब आज छोटी उम्र में होते हैं तो उस समय आपके सामने कोई भीड़ नहीं होती है। उन्होंने कहा कि आपने तब क्रिकेट खेला क्योंकि आप इस खेल को पसंद करते हैं।

लंबा आराम गेंदबाजों के लिए चुनौती : नेहरा

नई दिल्ली : पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज आशीष नेहरा का मानना है कि लगातार तीन महीने से ज्यादा समय तक नहीं दौड़ना तेज गेंदबाजों की फिटनेस में बाधा बन सकता है। बल्लेबाज योग और ट्रेनिंग से खुद को फिट बनाए रख सकते हैं लेकिन तेज गेंदबाजों के लिए सिर्फ इन सबसे काम नहीं चलेगा और उन्हें जल्द ही दौड़ना शुरू करना होगा। कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए भारत में तीन हफ्ते का लॉकडाउन लगा है और यह अब दूसरे हफ्ते में है। सारी खेल गतिविधियां बंद हो चुकी हैं जिससे शीर्ष खिलाड़ियों को घर पर रहना पड़ रहा है और वे खुद को फिट रखने की कोशिश कर रहे हैं जबकि उन्हें उम्मीद है कि हालात सामान्य होने पर फिर से खेल शुरू हो जायेंगे। नेहरा ने कहा कि चलिए कुछ परिस्थितियां देखते हैं, जैसे कि अगर लॉकडाउन 15 अप्रैल को खत्म हो जाता है तो सामाजिक जीवन के सामान्य होने में काफी समय लगेगा। उन्होंने कहा कि अगर आप मुझे पूछोगे तो मुझे जुलाई से पहले किसी भी क्रिकेट गतिविधि की उम्मीद नहीं दिखती। इसलिए शुरुआत होने से पहले यह लंबा आराम है तो तेज गेंदबाजों के लिए फिट रहना सबसे बड़ी चुनौती होगी। भारतीय टीम के पूर्व फिजियो जॉन ग्लोस्टर की तरह नेहरा को भी लगता है कि ज्यादातर क्रिकेटरों के लिए जगह की कमी समस्या है और तेज गेंदबाजों के साथ यह ज्यादा परेशानी भरा है। नेहरा ने कहा कि तेज गेंदबाजों के लिए दौड़ने के लिए जगह की कमी होती है, लेकिन इन हालातों से बचा नहीं जा सकता।

लॉकडाउन में परिवार को नए-नए व्यंजन बनाकर खिला रहा हूं : बजरंग

कोरोना वायरस महामारी के चलते टोक्यो ओलंपिक 2020 रद होने का दर्द हर खिलाड़ी को दे गया। दुनिया के सबसे बड़े खेल मेले में बहुत खिलाड़ियों का पदक जीतने का सपना इस वर्ष पूरा नहीं हो पाएगा। देश- दुनिया में चल रहे लॉकडाउन में खिलाड़ियों को अपने घरों में बंद कर दिया हैं जिससे उनके सामने प्रशिक्षण जारी रखने की बड़ी चुनौती बनी हुई है। इन तमाम बातों को लेकर देश के स्टार पहलवान **बजरंग पूनिया** से **अनिल भारद्वाज** ने बातचीत की। पेश है मुख्य अंश-

साक्षात्कार

● सुना है आप अलग-अलग देशों के प्रसिद्ध व्यंजन बना लेते हैं?

-हां, अगर आप देखेंगे, तो मेरा समय रसोई में ज्यादा बीत रहा है। अगल-अलग डिश बनाकर अपने माता-पिता और भाई-भाभी को खिला रहा हूं। हर रोज मैं परिवार के साथ तय कर लेता हूं कि सुबह और शाम क्या बनाएंगे। इस प्लानिंग में मेरी भाभी ज्यादा सहयोग कर रही हैं। प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं के दौरान दुनिया के अलग-अलग देशों में जाने का मौका मिलता है और वहां पर हर देश की अलग-अलग व्यंजन खाने को मिलते है। इन दिनों मैं अपने परिवार को वही व्यंजन बना कर खिला रहा हूं। इससे मेरा दिन भी आराम से बीत जाता है और माता-पिता को अपने हांथों से बनाया हुआ भोजन खिला पाता हूं।

● लॉकडाउन में बजरंग कैसे अपने को फीट रख पा रहा हैं?

-लॉकडाउन से मुझे यह फायदा हुआ है मैं अपने माता-पिता और भाई-भाभी व भतीजे तक योगा व सूर्य नमस्कार साथ करता हूं। मेरे माता-पिता मेरे साथ योगा कर रहे हैं, जिससे मुझे खुशी है मैं उन्हें ऐसे में स्वस्थ रहने में सहयोग कर रहा हूं। मैंने घर पर बहुत सामान रखा है जिससे एक्सरसाइल होती है।

● आप भारत के पहले खिलाड़ी थे जिन्होंने राहत कोष में दान दिया, यह प्रेरणा कहां से मिली?

-कोरोना संकट में देश के हर नागरिक को इलाज व भोजन मिले। यह जिम्मेदारी सरकार के साथ हर नागरिक की बनती है। जिस भाई से जितना भी बनता है उसे सहयोग करना चाहिए। मुद्दा यह नहीं है कि कौन कितना दे रहा है, मुद्दा यह है हर किसी को आहूती में शामिल होना जरूरी है। देश हमारे लिए हर रोज करता है ऐसे समय हमें भी देश के लिए करना चाहिए। भारत देश के हर नागरिक का प्यार मेरे को मिलता है और संकट में मेरा फर्ज बनता है उसके साथ रहूं।

● अब टोक्यो ओलंपिक 2021 में होगा। इसे आप कैसे देख रहे हो?

-मेरा मानना है कि पदक अगले वर्ष जीता जा सकता है, इस वक्त लोगों की जान बचाई जानी जरूरी है। इस वक्त ओलंपिक की नहीं, लोगों की चिंता है। पहले हमने कोरोना से जीतना है और ओलंपिक जीतना है।

● ओलंपिक का एक वर्ष आगे बढ़ना आपके लिए फायदा या नुकसान?

-अब अगले वर्ष के लिए तैयारी करनी है। कोई फायदा व नुकसान नहीं होगा। क्योंकि एक वर्ष में कोई नया पहलवान नहीं आएगा और कोई जाएगा नहीं। लबभग वही पहलवान रहेंगे। हां, एक चुनौती रहेगी कि अपने को फीट व तैयार रखने की। हालात ठीक होने पर तैयारी शुरू की जाएगी।

● दिल्ली में हुई एशिया चैंपियनशिप में आप स्वर्ण पदक से चुक गए थे, क्या तैयारी बेहतर नहीं थी ?

-जब फाइनल में दो खिलाड़ी खेलते हैं तो दोनो के पास जीतने का बराबर का चांस होता है। यह सही मेरे हाथ रजत पदक लगा था लेकिन इसका मतलब यही नहीं था कि मेरी टोक्यो ओलंपिक की तैयारी बेहतर नहीं थी।

आइपीएल से जरूरी है टेस्ट क्रिकेट : एंड्रयू स्ट्रॉस

लंदन, एएफपी: इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एंड्रयू स्ट्रॉस ने कहा कि वह इस बात को अच्छी तरह समझते है कि इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) खिलाड़ियों के लिए क्यों जरूरी है लेकिन अगर वे टेस्ट क्रिकेट की जगह आइपीएल को प्राथमिकता देंगे तो इससे गलत उदाहरण पेश होगा। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड की आइपीएल नीति को लेकर स्ट्रॉस और पीटरसन में काफी विवाद हुआ था। इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज केविन पीटरसन ने एक दिन पहले ही संक्षिप्त आइपीएल कराने की वकालत की थी।

स्ट्रास ने कहा कि आइपीएल को लेकर केपी (पीटरसन) के साथ मेरी हमेशा सहानुभूति रही है। मुझे समझ में आ गया था कि आइपीएल में दुनिया भर के बड़े खिलाड़ी एक साथ खेलते हैं और वहां खिलाड़ियों को बड़ी रकम दी जाती है। उन्होंने कहा कि आइपीएल के लिए विंडो की जरूरत है। मैंने ईसीबी से कहा था कि हम प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते क्योंकि यह टीम के लिए समस्या बन जाता। पूर्व कप्तान ने कहा कि इसके साथ ही मुझे यह भी लगा कि टेस्ट क्रिकेट को छोड़कर खिलाड़ी को आइपीएल में खेलने की छूट देना काफी खतरनाक है। इससे आप युवा खिलाड़ियों को यह सीख दे रहे कि आइपीएल टेस्ट क्रिकेट से ज्यादा जरूरी है।

युवराज 50 लाख रुपये करेंगे दान

नई दिल्ली, जेएनएन: पूर्व भारतीय स्टार क्रिकेटर युवराज सिंह ने कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष में 50 लाख रुपये का दान देने का वादा किया।

युवराज ने अपने ट्विटर हैंडल पर लिखा, 'मैं प्रधानमंत्री राहत कोष में 50 लाख रुपये देने का वादा करता हूं। आप भी अपनी ओर से योगदान करें।'

जालंधर में राशन देंगे हरभजन : टीम इंडिया के सीनियर ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह और उनकी पत्नी गीता बसरा ने लॉकडाउन के दिनों में गरीबों की मदद करने के लिए हाथ आगे बढ़ाया है। हरभजन ने लिखा, 'गीता और मैं 5000 परिवारों को राशन मुहैया कराएंगे। हम अपने साथी नागरिकों का भार कम करने की कोशिश करेंगे। मैंने इस बारे में अपने दोस्त से पूछा तो उसने बताया कि हमने रविवार को 500 परिवारों को राशन दे दिया है। भगवान हम सभी पर दया करे। जय हिंद।'

दीपक, रवि, विरेंद्र दान करेंगे वेतन

टोक्यो ओलंपिक का टिकट पा चुके युवा पहलवान दीपक पूनिया, रवि दहिया, कॉमनवेल्थ गेम्स के स्वर्ण पदक विजेता सुमित मलिक और उनके कोच विरेंद्र कुमार ने जरूरतमंद लोगों की मदद करने का फैसला किया है और वे सभी अपने-अपने दो महीने का वेतन दान करेंगे। विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता दीपक हरियाणा के झज्जर के छारा गांव के रहने वाले हैं और वह अपना वेतन देकर भूखे और अन्य चीजों की जरूरतमंद वाले लोगों की मदद करेंगे। वहीं, विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता रवि भी सोनीपत के नाहरी गांव में ऐसे ही लोगों की मदद करेंगे जबकि सुमित ने दिल्ली के बवाना के पास दरियापुर गांव में भी यही कार्य करने का निर्णय किया है। विरेंद्र प्रधानमंत्री राहत कोष और दिल्ली में एलजी/सीएम राहत कोष में 20000 रुपये दान देंगे। वह बुराड़ी के हिरंकी गांव में एक महीने का वेतन देकर लोगों की मदद करेंगे।

हमें नए विदेशी कोच की उम्मीद : चिराग, सात्विक

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत के चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रेंकीरेड्डी की पुरुष बैडमिंटन डबल्स जोड़ी इंडोनेशिया के फ्लांडी लिंपेले के अचानक जाने के बाद अपनी ओलंपिक तैयारियों के लिए नए विदशी कोच की सेवाएं मिलने की उम्मीद कर रही है।

लिंपेले को टोक्यो ओलंपिक तक कोच नियुक्त किया था, लेकिन पिछले महीने वह पारिवारिक समस्याओं का हवाला देकर भारत के डबल्स कोच पद से हट गए थे। इस तरह वह कार्यकाल पूरा किए बिना इस्तीफा देने वाले चौथे विदेशी कोच बन गए थे। चिराग ने कहा, 'अब हमें निश्चित रूप से तैयारी करने का और समय मिल जाएगा। अब एक साल से भी ज्यादा का समय है तो मेरा मानना है कि हमें एक नया विदेशी कोच मिल जाएगा। अगर ओलंपिक इस साल हुए होते तो हमें कोच नहीं मिलता क्योंकि बस तीन-चार महीने ही बचे होते तो इसका कोई मतलब नहीं होता। लेकिन अब भारतीय बैडमिंटन संघ हमारी मदद के लिए एक कोच रखेगा।' वहीं, सात्विक ने कहा, 'यह हमारे लिए चिंता है क्योंकि वह ओलंपिक से पहले ही हमें छोड़ कर चले गए। वह अनुभवी कोच हैं और प्रत्येक मैच से पहले वह हमें जरूरी जानकारी देते थे।

साथ रहने का मौका मिला तो दूर हुए गिले-शिकवे

लॉकडाउन मैजिक ▶ दो महीने की मोहलत मिली अब जीवनभर साथ निभाएंगे

अंजली राय, भोपाल

लॉकडाउन होने के कारण न केवल कोरोना के संक्रमण का खतरा कम हुआ है, बल्कि इसकी वजह से रिश्तों में भी मिठास घुल रही है। इस दौरान कई परिवार ही नहीं, बल्कि पति-पत्नी के टूटते रिश्ते में सकारात्मक पहल हुई है। कुटुंब न्यायालय में 17 मार्च तक हुई काउंसिलिंग में कई दंपती को साथ रहने के लिए भेजा गया। साथ रह रहे तो गले शिकवे दूर होने लगे। अब ये जीवनभर साथ रहने के लिए तैयार हैं। इससे भोपाल के कुटुंब न्यायालय में तलाक के मामलों में 80 फीसद कमी की उम्मीद जगी है। काउंसलर का कहना है कि जो काम काउंसिलिंग के दौरान नहीं कर पाते थे, वह अब लॉकडाउन में ज्यादा बेहतर तरीके से हो रहा है। कई मामलों में पति-पत्नी की शिकायत होती थी कि वे एक-दूसरे को समय नहीं दे पाते हैं। अभी भरपूर समय मिल रहा है और परिवार को सभी का साथ मिल रहा है।

भोपाल कुटुंब न्यायालय में तलाक के 80 फीसद मामले घटने के आसार

प्रतीकात्मक

लॉकडाउन से पहले जितने भी मामलों को काउंसिलिंग कर साथ भेजा गया है, उन 80 फीसद मामलों में अब तलाक नहीं होंगे। लॉकडाउन में कई पति-पत्नी के बीच मतभेद खत्म होंगे और रिश्ते जुड़ेंगे।

- आरएन चंद, न्यायाधीश, कुटुंब न्यायालय, भोपाल

लॉकडाउन से पहले कुछ पक्षकारों को अंतिम काउंसिलिंग में समझाकर साथ में रहने के लिए भेजा गया था। इसमें कई पति-पत्नी अब जीवनभर साथ रहेंगे। इस लॉकडाउन से कई रिश्ते जुड़ेंगे।

- नुरन्निशां खान, काउंसलर, कुटुंब न्यायालय, भोपाल

केस-1: सालभर से मायके में रह रही थी पत्नी

शादी के पांच साल बाद सॉफ्टवेयर इंजीनियर और उनकी पत्नी का रिश्ता टूटने की कगार पर पहुंच गया। पति महाराष्ट्र का रहने वाला है और पत्नी भोपाल की। दोनों परिवारों में सामंजस्य बिठाने में दिक्कत हो रही थी, जिसे लेकर दोनों के बीच तनाव बढ़ता गया। पत्नी सालभर से मायके में रह रही थी। 17 मार्च को काउंसिलिंग कर दोनों को साथ रहने के लिए भेजा गया। अब दोनों ने साथ रहने की सहमति जताई है।

केस- 2 : तलाक तक पहुंच गई थी बात, अब साथ रहेंगे

शादी के 10 साल बाद बिजनेसमैन पति-पत्नी का मामला तलाक तक पहुंच गया। दोनों का एक सात साल का बेटा भी था। दोनों के बीच मनमुटाव के कारण एक साल से अलग रह रहे थे। दोनों को समझाकर दो माह का समय देकर साथ भेजा गया था। लॉकडाउन में दोनों ने एक-दूसरे का साथ दिया और बेटे के लिए अब जीवनभर साथ रहने के लिए राजी हुए हैं।

केस-3 : अब साथ रहने का किया फैसला

शादी के पांच साल बाद नौसेना में कार्यरत पति और एमबीए डिग्रीधारी पत्नी का मामला तलाक तक पहुंच गया था। दोनों की तीन साल की एक बेटी भी है। कई बार समझाने के बाद भी दोनों के बीच विवाद समाप्त नहीं हो रहे थे। लॉकडाउन से पहले दोनों को एक साथ रहने के लिए भेजा गया, अब उन्होंने एक साथ रहने की जानकारी दी है।

मूकबधिर सुनीत का हथियार, जज्बा और हिम्मत बेशुमार

मूकबधिर सुनीत कुमार।

सम्भल के चन्दौसी में साइकिल पर मास्क बेचते सुनीत कुमार।

कोरोना के योद्धा

दिव्यांगता को मात देकर जिंदगी की जंग लड़ रहे मूकबधिर सुनीत कुमार ने कोरोना को हराने की ठानी है। संक्रमण से लोगों को बचाने के लिए सिलाई छोड़कर अब मॉस्क बनाना शुरू कर दिया है। कीमत भी इतनी कम है कि लाभ की कोई गुंजाइश तक नहीं। बाजार में सबसे कम कीमत का 20 रुपये का मास्क है। वह खुद बनाए मॉस्क को पांच रुपये में उपलब्ध करा रहे हैं।

सम्भल के चन्दौसी के गोपाल मुहल्ले में घर पर मास्क बनाते मूकबधिर सुनीत कुमार।

फायदे-नुकसान से बड़ा जीवन

उत्तर प्रदेश के सम्भल जिले के शहर चन्दौसी के गोपाल मुहल्ले निवासी सुनीत बचपन से ना सुन सकते हैं और ना ही कुछ बोल सकते हैं। अपनी धुन के पक्के हैं और लिखकर सब बता देते हैं। घर में ही कपड़ों की सिलाई का काम करके परिवार को पालते हैं। लॉकडाउन हो गया तो खुद ही अपना काम बंद कर दिया और गरीबों के लिए एक नया संकल्प ले लिया। कहते हैं कि फायदे नुकसान से बड़ा जीवन है। यही सच और सनातन है।

मास्क बनाते हैं फिर लोगों तक पहुंचाते हैं

दस से 15 रुपये में आने वाला मास्क 20 से 30 रुपये में बिक रहा है। शहर में आसानी से उपलब्ध तक नहीं है तो गांव में तो सवाल ही नहीं है। सुनीत की बेटी अर्पणा बताती हैं कि ग्रामीणों द्वारा मास्क नहीं खरीद पाने लाचारी देखकर पिताजी ने सस्ते मास्क देने का काम शुरू किया। रात में पत्नी के साथ मिलकर मास्क बनाते हैं और दिन में साइकिल से गांव-गांव में बेचने निकल जाते हैं। वो बताती हैं कि जो लोग पांच रुपये भी नहीं दे सकते, उनको वो मास्क निश्शुल्क भी दे दिया जाता है।

अब तक 800 मास्क के हो चुकी है बिक्री

लॉकडाउन के बाद सुनीत और उनकी पत्नी मॉस्क ही बनाते हैं। बेटा शुभम भी कपड़ा काटने में मदद करता है। पांच रुपये प्रति मास्क के हिसाब से अब तक वह 800 मास्क बेच चुके हैं। परिवार में पत्नी बेटा शुभम और बेटी अपर्णा है।

प्रस्तुति : सम्भल के चन्दौसी से सचिन चौधरी

75 लाख से ज्यादा लोगों को उपलब्ध कराया जा रहा खाना

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय गृह मंत्रालय ने रविवार को कहा कि लॉकडाउन के मद्देनजर देश भर में स्थापित 19,460 विशेष भोजन शिविरों में प्रवासी मजदूरों समेत 75 लाख से ज्यादा लोगों को खाना मुहैया कराया जा रहा है। ये विशेष शिविर 27,661 शेल्टर से अलग हैं, जो प्रवासी मजदूरों और जरूरतमंद के लिए स्थापित किए गए हैं। इन शेल्टरों में 12.5 लाख से ज्यादा लोग शरण लिए हुए हैं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

नियमित प्रेस कांफ्रेंस में गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने कहा कि राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों की तरफ से 23,924 और गैर सरकारी संगठनों की तरफ से 3,737 शेल्टर स्थापित किए गए हैं। जबकि, भोजन मुहैया कराने के लिए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश की सरकारों की तरफ से 9,951 और एनजीओ की तरफ से 9,509 शिविर लगाए गए हैं। इसके अलावा 13.5 लाख कामगारों को शेल्टर और भोजन उनके नियोक्ता की तरफ से मुहैया कराया जा रहा है।

देशभर में जरूरतमंदों के लिए स्थापित किए गए हैं 27,661 शेल्टर

नियोक्ताओं की तरफ से 13.5 लाख कामगारों को भोजन और आश्रय

दवा उद्योग के लिए एसओपी बनाने का निर्देश

देश के कुछ क्षेत्रों में दवा उत्पादक कंपनियों के सामने आ रही दिक्कतों को भी केंद्र सरकार ने गंभीरता से लिए है। गृह सचिव अजय भल्ला ने सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को पत्र लिखकर दवा उत्पादक कंपनियों की मदद करने को कहा है। शारीरिक दूरी और स्वास्थ्य संबंधी प्रोटोकाल का पालन करते हुए दवा उद्योग से जुड़े कामकारों के एक राज्य से दूसरे राज्यों में आने-जाने के लिए मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) विकसित करने के लिए कहा गया है।

उन्होंने बताया कि मंत्रालय की तरफ से लॉकडाउन के लिए जारी दिशानिर्देशों में दवा, चिकित्सा उपकरण, कच्ची सामग्री और उनके पैकेजिंग सामग्रियों को अनिवार्य सेवाओं में रखा गया है। आवश्यक सामान की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए इस तरह की इकाइयों के कर्मचारियों को एक राज्य से दूसरे राज्यों में आने-जाने की अनुमति प्रदान की गई है।

आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के बारे में संयुक्त सचिव श्रीवास्तव ने कहा कि सामान की अंतरराज्यीय ढुलाई की अनुमति दी गई है और केंद्र के साथ ही राज्य और केंद्र शासित प्रदेश की सरकारें कीमतों पर नजर रख रही हैं। इसके लिए क्षेत्रीय अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। उन्होंने बताया कि 25 मार्च से चार अप्रैल के बीच रेलवे ने 7,630 रेक और 3.92 लाख वैगन आवश्यक वस्तुओं की ढुलाई की है। कीमतों पर नजर रखी जा रही है।

सुचारू कटाई-बोवाई सुनिश्चित करने को कहा

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि लॉकडाउन के चलते देश में कहीं भी कटाई और बोवाई के काम में किसी तरह की बाधा नहीं आए। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री जी. किशन रेड्डी ने रविवार को यह जानकारी दी। राज्यों से कृषि क्षेत्र से जुड़े संस्थानों को काम करने की अनुमति भी देने को कहा है। लॉकडाउन से हाईवे किनारे स्थित कृषि से संबंधित मशीनों, स्पेयर पार्ट्स और मरम्मत की दुकानों को खुले रखने की छूट दी गई है। चाय उद्योग को भी यह छूट प्रदान की गई है।

लखनऊ में प्रेमी युगल की पीट-पीटकर हत्या, आरोपित गिरफ्तार

जासं, लखनऊ : लखनऊ के सआदतगंज थाना क्षेत्र स्थित नौबस्ता-मंसूरनगर में 19 वर्षीय युवती और उसके प्रापर्टी डीलर प्रेमी की शनिवार रात पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। वारदात को युवती के घर में उसके परिवारीजनों ने लाठी-डंडों और ईंट से अंजाम दिया।

एडीसीपी विकास चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि पकड़े गए हत्यारोपितों में युवती का पिता उस्मान, ताऊ सुलेमान, उसका बेटा रानू और भाई दानिश शामिल है। एक आरोपित सुलेमान का दूसरा बेटा तानू फरार है। सभी के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। घटनास्थल पर पहुंचे पुलिस अधिकारियों ने छानबीन के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। पूछताछ में मृतक अब्दुल मलिक (32) के घरवालों ने बताया कि रात के वक्त युवती का फोन आया था। उसने बताया था कि घरवाले उसकी पिटाई कर रहे हैं। इस पर अब्दुल अपने दोस्त वसी के साथ युवती के घर पहुंचा। वहां पर युवती के परिवार वालों ने अब्दुल की पिटाई शुरू कर दी। यह देख वसी वहां से भाग निकला। वसी को भी चोटें आईं हैं। मृतक शादीशुदा और चार बच्चों का पिता था। पुलिस ने युवती के घर के बाहर से खून में सने तीन डंडे, एक टूटी हुई ईंट, मोबाइल फोन और अब्दुल की बाइक बरामद की है। दोनों शव भी वहीं पड़े थे।

50 फोर-एम टेंट तैयार कर दिए हैं कोरोना से जंग के लिए आयुध उपस्कर निर्माता-ओईएफ ने महज चार दिन के अंदर। शनिवार को इसकी पहली खेप अरुणाचल प्रदेश आपदा प्रबंधन विभाग को भेज भी दी।

इम्यून सेल से हो सकता है महामारी का इलाज

(स्रोत: डेली मेल)

लाइलाज कोरोना के बढ़ते प्रकोप के आगे आज सभी बेबस दिख रहे हैं। लेकिन सभी स्तरों पर इसके इलाज खोजने की कोशिशें पूरी मुस्तैदी से जारी है। इसी दिशा में डॉली भेड़ का क्लोन बनाने वाले वैज्ञानिकों की टीम ने एक आशा जगाई है। उनका कहना है कि स्वस्थ युवा वालंटियरों के इम्यून सेल्स (कोशिकाओं) से कोरोना को मात दी जा सकती है। ग्लासगो के निकट टीसी बायोफार्म के शोधकर्ताओं ने एक नई थैरेपी का इस्तेमाल किया है। इसमें कैंसर के सफल इलाज के लिए इम्यूनिटी बनाने वाली कोशिकाओं के ट्रांसफ्यूजन का प्रयोग किया गया है। मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि अब ये शोधकर्ता उम्मीद कर रहे हैं कि यह तरीका कोरोना वायरस के खिलाफ भी कारगर होगा और इस थैरेपी के ट्रायल के लिए ब्रिटिश सरकार से बातचीत कर रहे हैं। उम्मीद की जा रही है कि जुलाई तक यह थैरेपी नेशनल हेल्थ सर्विस (एनएचएस) के अस्पतालों में उपलब्ध होगी।

इलाज की चुनौती

टीसी बायोफार्म के सीनियर स्ट्रैटेजिक मेडिकल एडवाइजर डॉ. ब्रायन केली ने द डेली टेलीग्राफ को बताया, 'वायरल संक्रमण से निपटने में मुख्य चुनौती ऐसा कुछ विकसित करने की होती है, जो संक्रमित कोशिकाओं को नष्ट करें न कि सामान्य कोशिकाओं को। इसलिए हम जो समाधान ला रहे हैं, उसमें वायरल संक्रमण के प्रति प्राकृतिक प्रतिरक्षा को देखा जा रहा है। गामा डेल्टा टी-सेल्स का एक बहुत ही छोटा समूह है, जो वायरल संक्रमण से प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है।

यह है अवधारणा

जो रोगी वायरल संक्रमण से सफलतापूर्वक उबर चुके हैं, उनमें खुद का इम्यून सिस्टम बढ़ जाता है और यह फिर से संक्रमित होने से रोकथाम करता है। डोनर टी-सेल्स सामान्य इम्यून सेल्स (प्रतिरक्षा कोशिकाओं) से इस मायने में अलग होता है कि वे शरीर में बाहरी आक्रमणकारी वायरस के असामान्य मेटाबॉलिज्म (चयापचय) का पता लगाता है। जब डोनर सेल्स किसी वायरस का पता लगाते हैं तो वे उसे नष्ट करने के साथ ही शेष इम्यून सिस्टम को भी इस बात का संकेत देता है कि बाहरी आक्रमण का उन्मूलन करने की जरूरत है। डॉ. केली के मुताबिक, यदि वायरस उत्परिवर्तित (म्यूटेट) होकर भी शरीर में आता है तो इंफ्यूजन को दोहराया जा सकता है और यह तरीका काम करेगा। डॉक्टर इन कोशिकाओं को रोगियों में इंफ्यूज कर सकते हैं।

कोरोना वायरस से जंग लड़ने को मैदान में उतरे स्वयं सहायता समूह

सहयोग ▶ सरकारी विभागों के साथ आमजन को भी मिल रहा लाभ

महिलाओं ने बढ़ाए हाथ तो प्रशासन को मिली मदद

दिग्विजयनाथ यादव, देवरिया

स्वस्थ समाज

उप्र के देवरिया जिले के मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ) शिवशरणप्पा जीएन की सकारात्मक सोच ने स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को कोरोना जंग के मुकाबिल खड़ा कर दिया है। वह कोरोना से मुकाबले को मैदान में उतर गई हैं। लोगों को कोरोना से बचाने के लिए सैनिटाइजर और मास्क बना रही हैं। उनके बनाए सैनिटाइजर और मास्क की आपूर्ति जरूरतमंद सरकारी विभागों को हो रही है, ताकि मदद के हाथ रुकने न पाएं। इस दौरान फिजिकल डिस्टेंसिंग (शारीरिक दूरी) का भी पूरा पालन किया जा रहा है। यह आमजन को भी बेचे जा रहे हैं, ताकि वे भी सुरक्षित रह सकें।

मास्क तैयार करतीं कृति रानी मिश्रा। जागरण

मुख्य विकास अधिकारी की सोच और राष्ट्रीय आजीविका मिशन की पहल पर हम मैदान में उतरे हैं। इससे काम करने वाली महिलाओं की रुचि भी बढ़ी है। कोरोना से जंग में हम अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं तो आय भी हो रही है। इस दौरान फिजिकल डिस्टेंसिंग का भी पूरा पालन किया जा रहा है।
–कृति रानी मिश्रा, अध्यक्ष, लक्ष्मी महिला प्रेरणा समूह

चार समूहों की लगभग 25 महिलाएं प्रतिदिन 500 मास्क तैयार कर रही हैं। इनमें तुलसी स्वयं सहायता समूह, किरन स्वयं सहायता समूह, राधा स्वयं सहायता समूह, लक्ष्मी महिला प्रेरणा समूह शामिल हैं। एक मास्क की लागत पांच रुपये आती है, जिसे बाजार में 15 रुपये में बेचा जाता है। ये प्रतिदिन 150 शीशी सैनिटाइजर भी तैयार कर रही हैं। इसमें 70 फीसद स्प्रिट तथा 30 फीसद ग्लिसरीन के साथ गुलाब जल और इत्र का मिश्रण किया जाता है। इसकी लागत 20 से 25 रुपये रुपये आ रही है। 50 एमएल की शीशी 30 रुपये और 60 एमएल की 40 रुपये में बेची जा रही है। इससे मिलने वाली आय, समूह की महिलाएं आपस में बांट लेती हैं।

जिले में सैनिटाइजर व मास्क की कमी हो गई थी, ऐसे में इन समूहों की महिलाओं ने बड़ा सहयोग किया है। इसे तैयार कर आम लोगों के लिए मुहैया करा रही हैं।
–शिवशरणप्पा जीएन, सीडीओ, देवरिया

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/positive-news

तड़के तक चली गोलाबारी

प्रथम पृष्ठ से आगे

शनिवार को सेना ने छिपे आतंकियों के ठिकाने का पता लगाने के लिए हेलीकॉप्टर और ड्रोन की मदद ली थी। शाम चार बजे रंगडोरी बहक में सभी आतंकी घिर गए। आतंकियों ने रंगडोरी पहाड़ी के ऊपरी छोर पर पोजीशन ले रखी थी। वे सुरक्षाबलों पर ताबड़तोड़ फायरिंग करने लगे। सुरक्षाबलों ने जवाबी कार्रवाई की जो रविवार तड़के तक चली। साढ़े तीन बजे दो आतंकी मारे गए। अन्य भाग निकले। मारे गए आतंकियों के शव कब्जे में लेकर सुरक्षाबलों ने भागे आतंकियों को करीब 300 मीटर की दूरी पर दोबारा मुठभेड़ में उलझा लिया। सुबह छह बजे गोलियों की आवाज बंद हो गई। सूर्योदय के बाद जवानों ने मुठभेड़स्थल की तलाशी ली तो उन्हें गोलियों से छलनी तीन आतंकियों के शव मिले।

खराब मौसम में चॉपर नीचे उतरने में आई मुश्किलें : शनिवार शाम चार बजे शुरू हुई मुठभेड़ में रात को एक सैन्यकर्मी शहीद हो गया। जबकि चार अन्य जख्मी हो गए थे। सुबह भी रंगडोरी बहक इलाके में मौसम खराब था। चॉपर उतरने व घायल जवानों को अस्पताल पहुंचाने में मुश्किल हुई।

पांचों आतंकी मारे गए हैं। कुछ और साथियों के वहां छिपे होने की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता इसलिए तलाशी अभियान जारी है। मारे गए आतंकियों की पहचान नहीं हो पाई है। ये सभी पाक मूल के लश्कर और जैश के आतंकी हो सकते हैं।
– कर्नल राजेश कालिया, प्रवक्ता रक्षा मंत्रालय

लॉकडाउन और कर्फ्यू ने कतरे 'उड़ते पंजाब' के पर

जेएनएन, जालंधर

कोरोना वायरस का संक्रमण रोकने के लिए पंजाब में लगाए गए कर्फ्यू और लॉकडाउन ने उड़ते पंजाब की उड़ान पर अंकुश लगा दिया है। पिछले दो सप्ताह में नशा तस्करी के मामलों में करीब 74 फीसद की कमी आई है। जहां एक मार्च से लेकर 22 मार्च तक पंजाब के विभिन्न जिलों में नशा तस्करी के 628 मामले दर्ज किए गए, वहीं कर्फ्यू लगने के बाद से चार अप्रैल तक सिर्फ 161 मामले दर्ज हुए हैं।

कोरोना को रोकने के लिए एहतियाती उपायों के कारण आवागमन पूरी तरह बंद है। इसके बावजूद नशीले पदार्थ पकड़े जाने के मामले सामने आ रहे हैं। शनिवार को ही दो जगह बड़ी मात्रा में हेरोइन पकड़ी गई। जगराओं (लुधियाना) में डेढ़ किलो हेरोइन व 16.80 लाख रुपये ड्रग मनी के साथ तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया। फिरोजपुर में पाकिस्तान सीमा के साथ लगती कंटीली तार के पास से एक किलो हेरोइन बीएसएफ ने बरामद की। कर्फ्यू लगने के बाद बीएसएफ कंटीले तार के पास खेतों से करीब साढ़े 14 किलो हेरोइन बरामद कर चुकी है। तस्करों से हेरोइन के अलावा स्मैक, शराब, चरस, गांजा, अफीम, चूरा पोस्त, लाहन, नशे के तौर पर प्रयोग होने वाली गोलियां बरामद हुई हैं।

कहीं बढ़े तो कहीं एक भी केस नहीं : कपूरथला में एक मार्च से 22 तक 10 मामले दर्ज हुए थे, लेकिन कर्फ्यू के बाद 13 दिन में 16 केस हो गए। फिरोजपुर में भी तस्करी के मामले बढ़े। जबकि फरीदकोट और मानसा में नशा तस्करी का एक भी केस सामने नहीं आया है। वहीं दूसरी ओर नशे के इस कारण एक सप्ताह में दो लोगों की मौत हो चुकी है। नशा न मिलने पर 28 मार्च को जिला फतेहगढ़ साहिब के अवतार सिंह ने भाखड़ा नहर में छलांग लगा दी। वहीं, मानसा के युवर गुरप्यार सिंह की मौत नशे के कारण हो गई।

कर्फ्यू के चलते नशीले पदार्थों की तस्करी में काफी कमी आई है। कुछ इलाकों में काम कर रहे छोटे मोटे अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। हमारी कोशिश रहेगी कि जब कर्फ्यू खुले तो इसी तरह यह चेन टूटी रहे।
– सतीश चंद्रा, अतिरिक्त मुख्य गृह सचिव, पंजाब

नशीले पदार्थों की तस्करी में कमी के पीछे कई कारण हैं। कुछ समय में बड़ी संख्या में नशा पीड़ितों का नशा मुक्ति केंद्रों में उपचार किया जा रहा है। लॉकडाउन के चलते भी तस्करों की मूवमेंट कम हुई है। कर्फ्यू के दौरान बड़ी संख्या में पुलिस की तैनाती का असर भी देखने को मिल रहा है।
– हरप्रीत सिद्धू, एसटीएफ प्रमुख, पंजाब

नैनीताल के चाइना पीक में फिर भूस्खलन

जागरण संवाददाता, नैनीताल : नैनीताल की सबसे ऊंची चाइना पीक की पहाड़ी एक बार फिर दरक गई। रविवार को भारी भूस्खलन के साथ ही करीब छह मिनट तक धूल का गुबार भी उठता रहा। भूस्खलन की तेज आवाज से क्षेत्रवासी दहशत में आ गए।

भूगर्भिक दृष्टि से संवेदनशील हो चुकी चाइना पीक की पहाड़ी रविवार दोपहर सवा एक बजे अचानक दरक गई। भूस्खलन के बाद बड़ी मात्रा में पत्थर और मलबा आबादी क्षेत्र की ओर आ गया, इससे लॉकडाउन के चलते घरों में कैद क्षेत्रवासी दहशत में आ गए। गनीमत रही कि भूस्खलन के बाद पहाड़ी से गिरने वाला पत्थर और मलबा आबादी क्षेत्र तक नहीं पहुंचा। प्रत्यक्षदर्शी शहीद सैनिक स्कूल के प्रधानाचार्य विशन सिंह मेहता ने बताया कि डेढ़ मिनट तक पहाड़ी से पत्थर और मलबा गिरता रहा, जिससे काफी समय तक धूल का गुबार पहाड़ी के नीचे से उठता दिखाई दिया।

जनवरी में भी दरकी थी पहाड़ी : पहाड़ी पर इस वर्ष का यह दूसरा भूस्खलन है। इससे पूर्व जनवरी के अंतिम सप्ताह में पहाड़ी दरकी थी। इसके बाद जिला प्रशासन, जीएसआइ, लोनिवि और आपदा प्रबंधन की संयुक्त टीम ने मौका मुआयना कर पहाड़ी के पत्थर और मिट्टी के नमूने भी लिए थे। जीएसआइ (जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया) के भू-वैज्ञानिक रवि का कहना है कि पूर्व में ही आशंका जता दी थी कि पहाड़ी में मजबूत चट्टान न होने के कारण भूस्खलन हो सकता है।

सुनो कोरोना, हम लौटकर आएंगे इसी अड़ी पर . . .

शाश्वत मिश्रा, वाराणसी

▶ संदेश दे रहा बनारस का मौन, रहें सुरक्षित ताकि फिर लगे रेला फिर भरे मेला

▶ कह रहे पप्पू कि भईया विपदा है आन पड़ी, अब तो घर में जमाए रखो अड़ी

कालजयी पुकार : वापसी का विश्वास दिला रही विश्वनाथ की काशी, 'रात' के बीत जीने की प्रतीक्षा में सुबह-ए-बनारस

वाराणसी के अस्सी स्थित पप्पू की अड़ी के पास पसरा सन्नाटा। जागरण

एहू बिपत कट जाइ

बड़े ही आत्मविश्वास से कहते हैं पप्पू- बड़ी-बड़ी बिपदा कटल हौ एहू बिपत कट जाइ। जमी दरबार बाबा भोलेनाथ क अउर किलकिहें गंगा माई। त भईया लोगन धीरज धरा मन में। अड़ी फिर होई तन के खड़ी। का या रही तब्बे सब माया रही। त पंचो लाख टके क बात ई कि जइसन मोदी जी कहें वइसे माना...।

विश्वनाथ प्रसाद सिंह उर्फ पप्पू। फाइल

भारतीय संस्कृति के प्राणों को धारण करने वाली गंगा का प्रवाह आज मौन है। विश्वनाथ की काशी ठहर गई है। सुबह-ए-बनारस बेरंग है। मानो इस 'रात' के बीत जीने की प्रतीक्षा में है। अस्सी पर पप्पू की अड़ी, जहां बड़े-बड़े मौन-साधक भी बोल उठते थे, मौन पड़ी है। वहीं, पप्पू कह रहे हैं कि भइया अब तो अपने-अपने घर में ही अड़ी जमाए रखो...।

जीवन की रवानगी को प्रतिबिंबित करने वाले बनारस को आस है कि जल्द ही यहां की गलियां और घाट गुलजार हो उठेंगे। महसूस करें तो पाएंगे कि जगह भी एक जिंदा चीज होती है। आपको विश्वास न हो तो लॉकडाउन समाप्त होने के बाद बनारस आइए। इस भाव को आप यहां महसूस करेंगे। यह वो शहर है जो चौबीसों घंटे जागता है। इस नगरी में बैठकी लगाने वालों की अपनी-अपनी अड़ियों से जबरदस्त दोस्ती होती है। लेकिन यहां की अड़ी जमाने वाले आजकल उदास हैं क्योंकि उनका सबसे अच्छा दोस्त उनसे दूर है। कोरोना वायरस की वजह से लागू लॉकडाउन ने इस चिर आदिम और चिर नूतन शहर की गति छीन ली है।

गंगा के कमर पर रखे इस संस्कृति कलश का पानी कभी इतना स्थिर नहीं रहा जितना आजकल है। हमेशा चलने वाले शहर में ऐसी नीरवता इसलिए संभव हुई क्योंकि यह शहर दूसरों के लिए जीना जानता है। यह जानता है कि सृजन के मूल में वेदना होती है। आज हम नीरवता की इस वेदना को सह लें तो कल सृजन का सूरज फिर गंगा किनारे उगेगा और कोरोना का अंधेरा दूर होगा।

गाय आपन नाद पहिचानयले... : 'काशी का अस्सी' में ख्यात साहित्यकार काशीनाथ सिंह लिखते हैं कि है कि अस्सी 'अष्टाध्यायी' है और काशी उसका 'भाष्य'। मतलब बनारस को समझना है तो अस्सी को समझ लीजिए। कुछ यही भाव लिए मैं सुबह अस्सी पहुंचा। पप्पू की अड़ी (चाय की दुकान है) पर एक शख्स दिख गया। नाम पूछा तो बताया, राहुल सिंह। मैंने पूछा, आप लॉकडाउन में बाहर निकले हैं। उन्होंने कहा, बाहर कहां, अस्सी हमार घर हव। मन अकुलात रहल त अड़ी पे आ गईली। बिना अड़ी के कउनो जीवन हव। न गत क चाय मिलत हव न बात मिलत हव...। मेरी नजर उनकी तरल होती मुख मुद्रा पर थी। वे अपनी आंखों से अड़ी को पीये जा रहे थे। मैंने कहा, चाय तो घर में भी मिल जाती होगी। उन्होंने कहा, गाय जउने नाद में सानी खाले ओके पहिचानयले। इतना बोलकर वो सज्जन जाने लगे। निराशा के कदम इतने धीरे होते हैं यह पहली बार महसूस हुआ। उनके जाने के बाद वो सुनसान सड़क और सुनसान हो गई।

फिर गुलजार होंगी सड़कें... : अंग्रेजी हटाओ आंदोलन हो या आपातकाल इस शहर ने हर मुसीबत को पीछे छोड़कर खिलखिलाती जिंदगी को अपनाया है। इस बार भी यह शहर उठेगा। क्योंकि यह गुण इसके डीएनए में है। आज नहीं, सैकड़ों साल पहले ब्रहमवैवर्त पुराण में भी इस शहर के बारे में लिखा गया है कि

छत्राकारं तु किं ज्योतिर्जलादूर्ध्व प्रकाशते।

निमग्नायां धरण्यां तु न निमच्जति तत्कथम।।

अर्थात, जल के ऊपर छत्राकार फैली वह कौन सी च्योति है जो प्रलय में सारी धरणी के निमग्न हो जाने पर भी च्यों की त्यों बनी रहती है।

गाहे-ब-गाहे अड़ी की बइठकी में इ-चार दिन बदे खरमंडल भलहीं भयल होय, बाकी अड़ी खुदे बइठ गयल होय अइसन बिपदा हमरे जिनगी में कबहो नाहीं आयल...। एक गहरी सांस के साथ यह बोझिल उद्गार है बनारस की जिंदादिली व रौनक के जीवंत ठीहे अस्सी की अड़ी के प्रतीक पुरुष पप्पू भइया (विश्वनाथ प्रसाद सिंह) के। उन्होंने बीते दिनों से घर की चौखट के पीछे खुद को कैद कर रखा है। घर में हुई एक मुलाकात में उदासी की चादर ओढ़े बैठे पप्पू भइया कहते हैं- ठहका और पिंगलबाजी बिना मेदा का हाजमा बिगड़ गयल हौ, बाकी असल बात ई कि काया रही तब्बे सब माया रही। त पंचो लाख टके क बात ई कि जइसन मोदी जी कहें वइसे माना। अपने फेमिली के संगे घरवे में जमावा अड़ी। किरौना (कोरोना) के धोबिया पाट (धोबी पटक दांव) देवे क कसम ठाना...।

लॉकडाउन के बीच किसानों को मिला ई-बाजार

जागरण विशेष

हिमांशु अस्थाना, वाराणसी

▶ डॉ. दीप्ति का गृहस्थ ज्योर्जिक लिमिटेड स्टार्टअप जरूरतमंदों के लिए साबित हुआ संजीवनी

'गृहस्थ' की डॉ. दीप्ति। फाइल/ जागरण

लॉकडाउन की वजह से जनता घरों में कैद हो गई है। बचाव के लिए कुछ ने सबकी चिंता की तो कुछ ने चिंता करने वालों की चिंता की। जीवन के इस फलसफे के बीच जीने की राह निकल पड़ी। जब पहिए रुक गए, दुकानों में ताला लग गया तो उस वक्त बहुतायत घर तक खाद्यान्न सहित अन्य घरेलू सामान पहुंचाने की डॉ. दीप्ति की दृढ़ इच्छा और प्रबल हो गई। वह गृहस्थ ज्योर्जिक लिमिटेड स्टार्टअप के नाम से पहले से कार्य कर रही हैं।

बीएचयू परिसर ही नहीं, शहर में 1685 लोगों को जोड़कर उनके घरों तक राशन पहुंचा रही हैं। लॉकडाउन में 200 परिवार और जुड़े हैं। इस बढ़ी संख्या से वह घबराई नहीं, बल्कि इसे चुनौती के रूप में लिया। इनकी मदद पति रोहित सिंह सहित चार डिलीवरी ब्वॉय कर रहे हैं। वह भी पूरी तरह ऑनलाइन सिस्टम से। इस सिस्टम ने दो सौ से अधिक किसानों को स्थायी ई-बाजार दिया है। बहुतायत सामान इन्हीं से लेकर उपभोक्ता तक पहुंचाया जाता है।

उपभोक्ता आइआइटी, बीएचयू के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार मिश्रा बताते हैं कि गृहस्थ की वेबसाइट या वाट्सएप पर वस्तुओं की सूची देखकर हम ऑर्डर देते हैं और डिलीवरी ब्वॉय तत्काल राशन का झोला रखकर चले जाते हैं। मिलान के बाद ऑनलाइन पेमेंट कर दिया जाता है।

अपडेट 225 किसानों को स्थाई रोजगार : बनारस, भदोही और आसपास के 225 किसान डॉ. दीप्ति के स्टार्टअप से जुड़कर अन्न बेचने के साथ कई खाद्य सामग्रियां भी तैयार करते हैं। यही नहीं, इन पंजीकृत किसानों को समय-समय पर वैज्ञानिक खेती की ओर प्रोत्साहित करने के लिए कार्यशालाएं आयोजित कराई जाती हैं ताकि वे पूरी तरह से अपडेट रहें।

46 ग्राहकों ने बनाये आपने फैमिली फॉर्मर : फैमिली डॉक्टर की तरह ही बीएचयू कैंपस और शहर के कुल 46 ग्राहकों ने फैमिली फार्मर बना रखा है। ये अपने स्वाद और जरूरत के मुताबिक उत्पाद तैयार कराने को सीधे किसानों से जुडे हुए हैं।

डॉ. दीप्ति ने अगस्त, 2019 में यह स्टार्टअप आइडिया प्रस्तुत किया था, जिसे एग्रो स्टार्टअप आरकेवीवाइ-रफ्तार स्कीम तहत इन्क्यूबेट किया गया है। इसे बढ़ाने के लिए उन्हें दस लाख रुपये की वित्तीय सहायता भी अब प्रदान की जा रही है।
–प्रो. पीके मिश्रा, आइआइटी, बीएचयू स्थित मालवीय एवं नवप्रवर्तन केंद्र के समन्वयक

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/jagran-special

बदलाव की बयार

कल नीले अंबर में इठलाएगा गुलाबी चंदा

खूबसूरत खगोलीय घटनाओं के क्रम में इस बार आगामी मंगलवार का दिन है सबसे खास, दिखेगा सुपरमून

रमेश चंद्रा, नैनीताल

▶ सात अप्रैल को सूर्यास्त के बाद दिखेगा साल का सबसे बड़ा चंद्रमा

▶ लॉकडाउन के बाद प्रदूषण में कमी के चलते आसमान की दृश्यता बढ़ाएगी सौंदर्य

प्रतीकात्मक फोटो

जहां भी सुंदरता का पैमाना तय होता है तो सबसे पहले जिक्र चांद का होता है। उस पर रंगत भी गुलाबी हो जाए तो क्या कहने। साफ नीले अंबर में टिमटिमाते असंख्य तारों के बीच कुछ ऐसी ही आभा लिए होगा चंदा। सात अप्रैल को यही चांद पिंक मून या सुपरमून कहलाएगा। साथ ही इस वर्ष के अपने सबसे बड़े आकार में होगा। लॉकडाउन के चलते थम सी गई धरती से प्रदूषण मुक्त साफ आसमान में चांद को निहारना बेहद अलग अनुभव होगा।

खूबसूरत खगोलीय घटनाओं के क्रम में इस बार मंगलवार का दिन खास रहने वाला है। चंद्रमा की गुलाबी और बेहद स्पष्ट छवि दशकों बाद देखने को मिलेगी। सात अप्रैल को सूर्यास्त के बाद चंद्रमा हल्की लालिमा लिए हुए उदय होगा। इसके बाद बेहद चमकदार नजर आने लगेगा। इसकी चमक अन्य दिनों में पूर्ण चांद की अपेक्षाकृत 15 फीसद बढ़ी हुई होगी। आकार में भी सात प्रतिशत अधिक बढ़ा नजर आएगा। धरती के अधिक करीब आने के कारण यह बदलाव नजर आएंगे। तब इसकी दूरी पृथ्वी से लगभग 3.57 लाख किमी रह जाएगी। यह दूरी इस वर्ष की सबसे निकटतम दूरी होगी।

आर्यभटट् प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) नैनीताल के वरिष्ठ खगोल वैज्ञानिक डॉ. शशिभूषण पांडे के अनुसार इस बार वायु प्रदूषण में कमी आने के कारण भी चंद्रमा की चमक काफी निखरी हुई होगी। हालांकि चंद्रमा के रंग व आकार में परिवर्तन का इस घटना से कोई सीधा सरोकार नही है, लेकिन दृश्यता के लिहाज से जरूर स्पष्टता आएगी।

बसंत ऋतु के दौरान पूर्व मध्य अमेरिकी देशों में फ्लॉक्स नाम की घास के मैदानों में गुलाबी फूल खिलने लगते हैं। जिस कारण अमेरिका ने इसे पिंक नाम दिया है। इसके अलावा पूर्व में इसे ऐगमून व फिशमून नाम भी दिए गए हैं।

खगोल प्रेक्षण विज्ञान के लिहाज से अनुकूल हो चला है आसमान : लॉकडाउन के बाद वायु प्रदूषण में आई कमी को लेकर डॉ. शशिभूषण पांडे का कहना है कि इन दिनों खगोलीय प्रेक्षण की स्थितियां बेहतरीन हो चली हैं। इन स्थिति में आकाशीय पिंडों की तस्वीरों के परिणाम बेहतर निकल सकते हैं।

बागेश्वर के जंगल में लगी आग में दो महिलाएं जिंदा जली

जागरण संवाददाता, बागेश्वर : उत्तराखंड में पुड़कुनी के जंगल में लगी आग में दो महिलाओं की जलकर मौत हो गई है। वहीं, एक महिला घायल हुई है, जिसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जंगल गांव से करीब डेढ़ किमी की दूरी पर है।

गत शनिवार सुबह करीब सात बजे चचई गांव की करीब छह महिलाएं पुड़कुनी के जंगल में चारा लेने गई थीं। उन्होंने दिनभर घास काटी और उसे सुखाने को छोड़ दिया। देर शाम अचानक चीड़ के जंगल में आग लग गई। अंधड़ और तेज हवा चलने से आग ने विकराल रूप ले लिया। इसमें चचई निवासी नंदी देवी और इंद्रा देवी झुलस गईं। नंदी का शव शनिवार देर शाम बरामद हो गया, लेकिन इंद्रा का शव रविवार सुबह गधेरे से बरामद किया गया। जबकि गंगा देवी भागते समय गिर गईं और घायल हो गईं। उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है।

मौसम विशेष

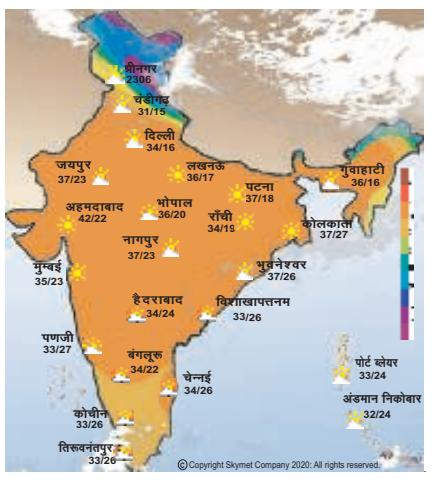

पंजाब, उत्तरी राजस्थान उससे सटे हरियाणा में कुछ स्थानों पर गरज और तेज हवाओं के साथ वर्षा संभव है। इन राज्यों के शेष भागों व दिल्ली का मौसम आरामदायक रहेगा। जम्मू-कश्मीर के ज्यादातर हिस्सों व हिमाचल प्रदेश में कुछ स्थानों पर गरज के साथ वर्षा व बर्फबारी संभव है।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	32/20/आंबा	अहमदाबाद	39/16/व
कोलकाता	33/23/आंबा	बड़ौदा	38/16/सा
चेन्नई	33/23/आंबा	नागपुर	38/20/व
हैदराबाद	36/22/सा	इन्दौर	34/18/आंबा
बंगलूरू	34/21/आंबा	रांची	31/16/व
त्रिवेन्द्रम	35/25/आंबा	पटना	33/19/आंबा
गुवाहाटी	34/21/आंबा	जमशेदपुर	33/20/व
गंगटोक	16/10/आंबा	पुणे	35/18/व

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

आजकल

सोमवार 6 अप्रैल 2020

14

www.jagran.com

भाजपा की आज ही हुई थी स्थापना

आज ही 1980 में भाजपा की स्थापना हुई। पहले इसे जनसंघ के रूप में जाना जाता था। पहले अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी थे। पहली बार 1984 में पार्टी ने आम चुनाव लड़ा और उस वक्त सिर्फ दो सीटें मिली थीं। आज केंद्र और कई राज्यों में पार्टी सरकार में है।

आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत का दिन

आज ही के दिन 1896 में आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत एथेंस में हुई थी। 6 अप्रैल से 15 अप्रैल तक इन खेलों का आयोजन हुआ था। इसमें 14 देशों के 241 एथलीटों ने भाग लिया था और 43 खेल हुए।

विदेश में अवॉर्ड पाने वाली पहली अभिनेत्री सुचित्रा

1931 में आज ही के दिन बांग्लादेश में जन्मीं सुचित्रा सेन का असली नाम रोमादास गुप्ता था। वर्ष 1952 में आई बांग्ला फिल्म सारे चतुर उनकी पहली फिल्म थी। 1963 में आई फिल्म सात पाका बांधे के लिए मास्को फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ फिल्म अभिनेत्री के पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। यह उपलब्धि हासिल करने वाली वह पहली भारतीय अभिनेत्री थीं। बाद में इसी कहानी पर वर्ष 1974 में हिंदी फिल्म कोरा कागज बनीं। उन्होंने 1955 में आई देवदास से हिंदी सिनेमा में प्रवेश किया। भारत सरकार ने उन्हें 1972 में पद्मश्री से नवाजा गया। 17 जनवरी 2014 को देहांत हो गया।

कोरोना की जांच के लिए बनाई थर्मल गन

तलाशी राह ▶ मेघालय की नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने की तैयार

डिग्री सेल्सियस और फॉरेनहाइट दोनों ही स्केल में माप सकती है तापमान

नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी। फाइल

शिलॉग, प्रेट्र : कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप को रोकने के लिए सतर्कता के साथ-साथ किफायती जांच उपकरण भी जरूरी हैं। दुनियाभर में इस महामारी से निपटने के लिए वैज्ञानिक और शोधकर्ता लगातार प्रयासरत हैं। इस कड़ी में नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (नेहू) के शोधकर्ताओं ने एक ऐसी थर्मल गन विकसित की है, जिसके जरिये लोगों की स्क्रिनिंग की जाएगी। इन्फ्रारेड आधारित यह डिवाइस शरीर का तापमान मापने के साथ-साथ कोरोना वायरस के संक्रमितों की पहचान कर सकती है।

संस्थान के सहायक प्रोफेसर सुदीप पॉल ने कहा, 'बायोमेडिकल इन्स्ट्रूमेंटेशन एंड सिग्नल प्रोसेसिंग लैबोरेट्री के इनायक माझी ने इस डिवाइस को महज साढ़े तीन दिनों में तैयार किया है।' उन्होंने कहा कि यह डिवाइस एक ईंट की दूरी से किसी भी व्यक्ति के तापमान को डिग्री सेल्सियस और फॉरेनहाइट दोनों ही स्केल में माप सकती है।

पॉल ने कहा कि नेहू के रजिस्ट्रार प्रोफेसर जे एन नायक ने संस्थान में स्क्रीनिंग डिवाइस की कमी को ध्यान में रखते हुए छात्रों से इसे तैयार करने को कहा था, ताकि संस्थान में आने जाने वाले लोगों की थर्मल स्क्रीनिंग की जा सके।

प्रोफेसर जे एन नायक ने कहा, 'कोरोना वायरस के बढ़ते खतरे को देखते हुए संस्थान ने थर्मल गन खरीदने का प्रयास भी किया था लेकिन वर्तमान हालात में खरीद संभव नहीं हो पाई, जिसके बाद संस्थान के छात्रों को ही इसे तैयार करने का टास्क दिया गया और वे इस तैयार करने में सफल रहे।' उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी बात यह है कि केवल साढ़े तीन दिनों में ही यह डिवाइस बन कर तैयार की गई है।

'सीसीटीवी कैमरा थर्मामीटर' बनाने की तैयारी : इस डिवाइस को तैयार करने वाले इनायक माझी ने कहा कि 'हमारी थर्मल गन और अन्य नॉन-इन्फ्रारेड थर्मामीटर के बीच यह अंतर है कि सामान्य थर्मामीटर आपको शरीर से छूना पड़ता है लेकिन नए उपकरण के जरिये एक निश्चित दूरी से ही किसी बी व्यक्ति का तापमान जांचा जा सकता है।' उन्होंने कहा कि डिवाइस की रेंज महत्वपूर्ण है क्योंकि थर्मल विकिरण की ऊर्जा दूरी के साथ कम हो जाती है। उन्होंने कहा कि अब वह ऑटोमेशन पर काम कर रहे हैं। यदि ऐसा करने में वे सफल रहते हैं तो 'सीसीटीवी कैमरा थर्मामीटर' बनाया जा सकता है। इसके लिए इसे हाथों से पकड़ने की भी जरूरत नहीं होगी।

आइसोलेशन वार्ड में रोबोट पहुंचाएंगे भोजन और दवाइयां

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना के प्रकोप को देखते हुए यदि किसी भी व्यक्ति में इसके संक्रमण के लक्षण पाए जाते हैं तो उन्हें कम से कम 14 दिनों के लिए आइसोलेट यानी एकांतवास में रखा जाता है, जहां उन्हें डॉक्टरों के अलावा कोई मिलने तक नहीं आ सकता। ऐसे में सबसे बड़ी समस्या उन्हें भोजन और दवाई देने की होती है, जिन मरीज की हालत ज्यादा खराब होती उनकी देखभाल सबसे बड़ी चुनौती होती है। लेकिन अब भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) गुवाहाटी के शोधकर्ता इस समस्या के समाधान में जुट गए हैं। वे दो ऐसे रोबोट तैयार करने में जुटे हैं जो आइसोलेशन में रखे हुए मरीजों को दवा और भोजन पहुंचाएंगे। साथ ही, संक्रामक कचरा भी एकत्र करेंगे।

महामारी से जंग में ड्रोन का प्रयोग

कोरोना वायरस से लड़ने के लिए दुनियाभर में तरह-तरह के अनूठे प्रयोग किए जा रहे हैं। नीदरलैंड में पुलिस शारीरिक दूरी का सख्ती से पालन कराने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल कर रही है। ड्रोन पर माइक लगाकर लोगों को एक स्थान पर इकट्ठा न होने की चेतावनी दी जा रही है। ड्रोन में कैमरे भी लगे हैं। उल्लंघन करने वालों पर पुलिस बेहिचक कार्रवाई कर रही है। एएफपी

लॉकडाउन में भी जारी रखें नियमित व्यायाम

शोध अनुसंधान

शोधकर्ताओं का कहना है कि लॉकडाउन के दौरान नियमित व्यायाम करना बंद नहीं करें। स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली को बनाए रखने में दैनिक व्यायाम महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'एक्सरसाइज इम्यूनोलॉजी रिव्यू' जर्नल में प्रकाशित शोध में कहा गया है कि लोगों को इस बात से नहीं डरना चाहिए कि अधिक व्यायाम से उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होगी और उनके कोरोना वायरस के संक्रमण में आने की संभावना बढ़ जाएगी। दरअसल, 2018 में इस तरह का एक अध्ययन प्रकाशित हुआ था, जिसमें व्यायाम के बाद लोगों के संक्रमित होने की ज्यादा संभावना जताई गई थी। इस शोध को डॉ कैंपबेल और डॉ जेम्स टर्नर ने चुनौती देते हुए कहा कि इस सिद्धांत के समर्थन में वैज्ञानिक साक्ष्य बहुत सीमित हैं। लेकिन इस बात के विश्वसनीय सुबूत हैं कि व्यायाम प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए लाभकारी है। शोधकर्ताओं ने कहा कि अल्पावधि में व्यायाम प्रतिरक्षा प्रणाली यानी इम्यून सिस्टम को जीवाणुओं से लड़ने में मदद करता है जबकि लंबी अवधि में नियमित व्यायाम उम्र के साथ शरीर में होने वाले उन परिवर्तनों को धीमा कर देता है। - आइएएनएस

कम लागत वाला प्लास्टिक फेस शील्ड तैयार

कोरोना के संक्रमण से बचाव के लिए अमेरिकी शोधकर्ताओं ने कम लागत वाले प्लास्टिक फेस शील्ड का डिजाइन तैयार किया है। मैसाच्युसेट्स के साउथब्रिज स्थित केप्लसके थर्मोफार्मिंग नामक कंपनी ने इस तरह के अस्सी हजार मास्क का उत्पादन भी शुरू कर दिया है। यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाच्युसेट्स एमहर्ट्स के शोधकर्ताओं ने इंजीनियर, डॉक्टर और नर्सों की सलाह पर इसका डिजाइन तैयार किया है। इससे जुड़े पीटर रिनहार्ट ने कहा, पूरे चेहरे को ढकने वाली इस फेस शील्ड को फ्रंट लाइन पर काम करने वाले स्वास्थ्य कर्मचारियों को अप्रैल मध्य तक बांटा जाएगा। फेस शील्ड आंखों सहित पूरे चेहरे की रक्षा करेगा। - आइएएनएस

इधर-उधर की

घर से निकलने के अजीब बहाने

लंदन, एजेंसी : लॉकडाउन ने लोगों को काफी प्रभावित किया है। बहुत कुछ बदल गया है और इसमें पुलिस के पास आने वाले इमरजेंसी कॉल के विषय तक शामिल हैं। ब्रिटेन के ग्वेंट में पुलिस ने अपने फेसबुक अकाउंट पर थिंक बिफोर यू डायल हैशटैग के साथ एक पोस्ट की है। जिसमें उन्होंने लिखा है कि आपातकालीन स्थिति में ही आपात नंबरों का इस्तेमाल करें। पुलिस को यह पोस्ट घर से बाहर निकलने की अनुमति लेने के लिए आने वाले बेवजह के फोन कॉल्स के लिए करनी पड़ी है। एक शख्स ने घोड़े को नहलाने के लिए बाहर जाने की इजाजत मांगी तो दूसरे ने पूछा कि क्या वह बिल्ली को दूध पिलाने के लिए बाहर जा सकता है? पुलिस ने मुश्किल वक्त में ऐसे फोन कॉल्स नहीं करने के लिए कहा है।

कोविड-19 के इलाज का किफायती मॉडल बना रहा केजीएमयू

रूमा सिन्हा, लखनऊ

- सिर्फ दो डॉक्टर ही मरीजों को देखकर कम कर रहे पीपीई और मास्क की खपत
- मामले बढ़ने पर अन्य संस्थानों के लिए उदाहरण हो सकती है यह रणनीति

कोरोना संक्रमण के मामले बढ़ने के साथ ही चिकित्सा संसाधनों, खासकर डॉक्टरों और पैरामेडिक स्टाफ की सुरक्षा के लिए आवश्यक सामग्री की तंगी पर सवाल उठने लगे हैं। बहरहाल, इस बहस में उलझने के बजाय किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ (केजीएमयू) के डॉक्टरों ने ऐसा किफायती मॉडल विकसित किया है जिसमें उपलब्ध संसाधनों का युक्ति पूर्वक इस्तेमाल कर कोरोना पीड़ितों को विश्व स्तरीय चिकित्सा मुहैया कराई जा रही है। इस मॉडल में डॉक्टरों और सहयोगी स्टाफ के संक्रमण के खतरे से पूरी तरह मुक्त रहने का दावा किया जा रहा है।

कोरोना संक्रमण के मामले जिस तेजी से बढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए अगले दो सप्ताह काफी महत्वपूर्ण होंगे। मरीज बढ़े तो जाहिर तौर पर संसाधनों की जरूरत बढ़ेगी। ऐसी परिस्थिति से निपटने के लिए केजीएमयू के डॉक्टरों ने खास रणनीति बनाई है। कोरोना पॉजिटिव के इलाज में पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) किट महत्वपूर्ण होती है। एक पीपीई किट की कीमत 1500-2000 रुपये होती है। डॉक्टर जानते हैं कि मरीज बढ़ने की स्थिति में अधिक मास्क और पीपीई की जरूरत पड़ेगी। यद्यपि सीमित संसाधनों में अपेक्षानुसार किट की उपलब्धता संभव नहीं दिखती। यह मानते हुए केजीएमयू में कम पीपीई और मास्क खर्च करने पर जोर दिया जा रहा है। सिर्फ केजीएमयू की ही बात करें तो मरीज बढ़ने पर इसे एक लाख पीपीई और डेढ़ लाख मास्क की जरूरत पड़ेगी। सिर्फ पीपीई और मास्क ही नहीं, मरीजों को देखने के दौरान डॉक्टरों को संक्रमण से बचाने के लिए फीवर क्लीनिक भी अलग ढंग से संचालित की जा रही है, जो देश के दूसरे चिकित्सा संस्थानों को राह दिखाने का काम करेगी।

विशेष कोटिंग से नष्ट होंगे वायरस

शशांक शेखर भारद्वाज, कानपुर

वैश्विक महामारी बन चुके कोरोना वायरस की काट खोजने में कई देशों के विशेषज्ञ जुटे हैं। इस जंग में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) कानपुर ने भी शंखनाद कर दिया है। यहां के विशेषज्ञ पॉलीमर, इथेनॉल और अन्य पदार्थों से विशेष कोटिंग तैयार करेंगे, जिसको पीपीई किट (पर्सनल प्रोटेक्शन इक्विपमेंट) पर इस्तेमाल किया जाएगा। इस कोटिंग से कोरोना और उस जैसे अन्य वायरस नष्ट हो जाएंगे। मास्क और एप्रिन वायरस से संक्रमति होने से न सिर्फ बचेंगे बल्कि कई बार इस्तेमाल किए जा सकेंगे। इस तकनीक को केमिस्ट्री विभाग की प्रो. नगमा परवीन विकसित करेंगी, जबकि विभाग के प्रो. आशीष पात्रा और प्रो. एमएलएन राव सहयोग कर रहे हैं। प्रो. परवीन को साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड (एसईआरबी) की ओर से तकनीक विकसित करने के लिए 25 लाख रुपये की ग्रांट मिली है।

इस तरह कम कर रहे खपत : केजीएमयू के इंफेक्शियस डिजीज हॉस्पिटल (आइडीएच) के इंचार्ज डॉ. डी हिमांशु बताते हैं कि पीपीई और मास्क को एक बार एक ही मरीज को देखने में प्रयोग किया जा सकता है। अब तक इसके चलते हमारे बहुत से पीपीई इस्तेमाल हो चुके हैं। अब हमने यह तय किया है कि मरीजों के पास दो ही डॉक्टर जाएंगे। बाकी टीम दूर रहेगी। यही नहीं, ओपीडी में फीवर क्लीनिक में हमने केबिन व्यवस्था शुरू की है। वहां जो रजिस्ट्रेशन काउंटर था, उसको कवर करके डॉक्टर उसमें बैठेंगे और मरीज को अंदर से देखेंगे।

लॉकडाउन के बाद पहले मंदिर जाऊंगा : मनीष पॉल

सात सवाल

अभिनेता और होस्ट मनीष पॉल बच्चों के सिंगिंग रियलिटी शो 'सा रे गा मा पा लिटिल चैंप्स' को होस्ट करते दिख रहे हैं। उनकी कुछ फिल्में भी रिलीज होने की कतार में हैं। लॉकडाउन के दौरान बदली जीवनशैली पर उनसे बातचीत :

• आपकी दिनचर्या में किस तरह का बदलाव आया है?

मेरा दिन बहुत जल्दी शुरू होता है, लेकिन लॉकडाउन के बाद से मैं देर से सोकर उठता हूं। मेरा पूरा दिन फिल्में और वेब सीरीज देखने में गुजरता है। अपने घर में ही बने जिम में रोजाना व्यायाम करता हूं। मेरी पत्नी और बच्चे भी प्रतिदिन योग करते हैं। जहां तक खाने की बात है, हम संतुलित और पौष्टिक खाना खा रहे हैं।

• घर में बैठकर आपने कौन-सी नई चीज में हाथ आजमाया?

- मैंने खाना कभी नहीं बनाया था। इस समय मैं घर में रहकर अपनी पत्नी से खाना बनाना सीख रहा हूं। पूरे दिन भर घर में खाली बैठने से अच्छा है कि घरवालों की मदद की जाए। कुछ नए विचार भी आ रहे हैं, जिन्हें मैं लिखने की कोशिश कर रहा हूं।

• इस दौर में बच्चों को घर के अंदर रखना काफी चुनौतीपूर्ण है। आप कैसे संभालते हैं?

-बच्चों को सभांलना सबसे सरल होता है। उनको आप जिस तरह से ढालेंगे, वे ढल जाएंगे। बस आपको उन्हें संभालना आना चाहिए। मैंने उन्हें बहुत सारे गेम दे रखे हैं। उन्हें समझ आ चुका है कि घर के बाहर नहीं जाना है, शारीरिक दूरी बनाकर रखनी है। मेरे दोनों बच्चे घर के अंदर आपस में खेलते हैं।

• इस दौर से मिला क्या सबक आप हमेशा याद रखना चाहेंगे?

- अब हमें समझ आ रहा है कि हर छोटी चीज की अपनी अहमियत होती है। सड़क पर आजादी से खुली हवा लेने को हम बहुत आसान समझते थे, लेकिन आज बाहर निकलना भी मुश्किल है।

• आपकी फिल्म भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज होने वाली थी?

- मेरी वेब फिल्म 'विजयनगर' बनकर तैयार है। इसे रिलीज करने को लेकर कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के अधिकारियों के साथ हमारी पिछले महीने मीटिंग थी, जिसे लॉकडाउन के कारण स्थगित करना पड़ा।

• लॉकडाउन के बाद सबसे पहले क्या करना चाहेंगे?

- स्थिति सामान्य होने के बाद सबसे पहले मंदिर जाऊंगा। ऊपरवाले से अपनी सभी गलतियों की माफी मागूंगा और ईश्वर का शुक्रिया अदा करूंगा।

• करियर में आगे किस तरह के प्रोजेक्ट्स पर काम करना चाहेंगे?

-'सा रे गा मा पा लिटिल चैंप्स' के अलावा मैं दो वेब फिल्मों पर काम कर रहा था। दो अन्य फिल्में रिलीज होनी हैं। मैं किसी थ्रिलर फिल्म का हिस्सा बनना चाहूंगा।

दीपेश पांडेय

दुबई में फंसीं मान्यता दत्त

लॉकडाउन के दौरान लोगों से जहां हैं, वहीं रहने की अपील पर गौर करते हुए संजय दत्त की पत्नी मान्यता दत्त दुबई में ही रुक गई हैं। उनके करीबियों के मुताबिक, मान्यता होली के बाद बच्चों के साथ दुबई गई थीं। इधर घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर रोक लगा दी गई। विदेश से आने वालों की जांच की जा रही है। सरकार की अपील के बाद मान्यता ने अपने बच्चों के साथ दुबई में रुकना ही उचित समझा। हालात सामान्य होते ही वह स्वदेश वापसी करेंगी। इस बीच संजय दत्त मुंबई में घर में अकेले रह रहे हैं। वह रोजाना पत्नी व बच्चों से बात करते हैं। बतौर निर्माता मान्यता ने फिल्म 'प्रस्थानम' का निर्माण किया था। पिछले साल रिलीज यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कमाल नहीं दिखा पाई थी। वहीं संजय दत्त आगामी दिनों में 'केजीएफ चैप्टर 2', 'भुज' और 'सड़क 2' में नजर आएंगे।

जब वीडियो पर मिले 'खिचड़ी' और 'साराभाई वर्सेस साराभाई' के सितारे

इस वक्त ज्यादातर चैनलों पर शोज रिपीट हो रहे हैं। कई पुराने प्रसिद्ध शोज को दोबारा चैनल पर दिखाए जा रहे हैं। दूरदर्शन पर 'रामायण', 'महाभारत', 'ब्योमकेश बख्शी' जैसे शोज के बाद अब स्टार भारत पर 'साराभाई वर्सेस साराभाई' और 'खिचड़ी' शो को 6 अप्रैल से प्रसारित किया जाएगा। सुबह 10 से 12 तक ये शोज प्रसारित होंगे। दोनों ही शोज के दो-दो एपिसोड एक साथ दिखाए जाएंगे। इस बात की जानकारी शोज के निर्माताओं जेडी मजीठिया और आतिश कपाड़िया ने दी। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए दोनों निर्माताओं के साथ कलाकार रत्ना पाठक, सुप्रिया पाठक, सतीश शाह, राजेश कुमार, सुमीत राघवन, रूपाली गांगुली, वंदना पाठक, देवेन भोजानी ने शो से संबंधित बातें कीं। जेडी मजीठिया ने बताया कि इन शोज से जो फायदा हम देख रहे हैं, वह है लोगों का प्यार और इज्जत। रचनात्मक

लोग मानवीय भावनाओं से जुड़े होते हैं। लोग स्वस्थ रहें और इन शोज का आनंद उठाएं, हमारी बस यही इच्छा है। अगर ये शोज इस बार भी कॉमर्शियली सफल रहे, तो हो सकता है भविष्य में हम इन शोज के आगे के सीजन लेकर आएं। आतिश कपाड़िया ने बताया कि दोनों शोज के सभी एपिसोड दिखाए जाएंगे। भले ही शूटिंग शुरू हो जाए, लेकिन शोज को बंद नहीं किया जाएगा। समय बदल सकता है।

अक्षय का 'मुस्कुराएगा इंडिया' गाना आज होगा रिलीज

कोरोना वायरस से जंग लड़ रहे देश को सकारात्मक संदेश देने के लिए 'मुस्कुराएगा इंडिया' गाना आज रिलीज किया जाएगा। अभिनेता अक्षय कुमार और जैकी भगनानी इसे प्रस्तुत कर रहे हैं। अक्षय ने कहा, 'हम चाहते हैं कि लोग एक बात सुनिश्चित करें, कि सब कुछ सामान्य हो जाएगा।' वहीं जैकी भगनानी ने कहा कि यह गीत सभी भारतीयों के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए एक विनम्र ट्रिब्यूट है। इस गाने को विशाल मिश्रा ने गाया है।

मनरंजन

कथक का रियाज कर रही हैं माधुरी दीक्षित

हर सितारा अपना-अपना पसंदीदा काम घर पर रहकर कर रहा है। माधुरी दीक्षित के नृत्य के प्रति लगाव से हर कोई वाकिफ है। माधुरी अपने घर में रहकर कई और कामों के साथ ही कथक का रियाज भी कर रही हैं। यह रियाज ऑन कॉल चल रहा है। वीडियो कॉल पर माधुरी ताबला वादक कालीनाथ मिश्रा के साथ जुड़कर अपना रियाज कर रही हैं। उन्होंने इस वीडियो के साथ लिखा, 'इस कीमती वक्त को व्यर्थ मत कीजिए। आपको वह करने से कोई नहीं रोक सकता है, जिसे आप दिल से करना चाहते हैं। माधुरी ने सोशल मीडिया पर फैंस के पूछे गए सवालों के जवाब भी दिए। इस दौरान वह सकारात्मक कैसे रहती हैं, इसके बारे में बताते हुए माधुरी ने लिखा कि वह चीजों को सकारात्मक तरीके से देखती हैं। उन्हें काम की वजह से ज्यादा वक्त नहीं मिलता है। इस वक्त को वह अपने परिवार के साथ बिता रही हैं। वह सभी चीजें करती हैं, जो उनकी बकेट लिस्ट में हैं। फ्रेंच टोस्ट बनाना उनकी खासियत है, इन दिनों वह बच्चों के लिए बना रही हैं। माधुरी ने कहा कि उन्हें गाना पसंद है और वह अपने घर पर गाने का एक सेशन भी रखती हैं।

बेटे के लिए मंदिरा बेदी ने बनाया कड़ाह प्रसाद

अपने फिटनेस वीडियो से मंदिरा बेदी घर पर बैठे लोगों को प्रेरित करती रहती हैं। इन दिनों वह प्रतिदिन अपना वीडियो पोस्ट करती हैं। इसके अलावा वह हर उस बात के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती रहती हैं, जो उन्हें इस जीवन में मिली है। वह अपने बेटे के लिए प्रसाद भी बना रही हैं। मंदिरा ने एक वीडियो पोस्ट किया है, जिसमें वह सूट पहने हुए सिर पर दुपट्टा रखकर आटे का हलवा बना रही हैं, जिसे 'कड़ाह प्रसाद' कहा जाता है। इस प्रसाद की अहमियत समझाते हुए मंदिरा अपने बेटे को बता रही हैं कि यह प्रसाद गुरुद्वारे में बनाया जाता है। इसे गुरुनानक जी को भोग लगाएंगे और हम प्रसाद स्वरूप ग्रहण करेंगे। इस वीडियो के साथ मंदिरा ने लिखा, 'आटे का हलवा। जब घर पर बनता है तो दिल में प्रार्थना होती है। सिर ढका होता है। इस तरह यह प्रसाद बन जाता है। है ना?' इसके बाद मंदिरा ने उन सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया, जो इस वक्त आगे आकर महामारी से लड़ रहे हैं। डॉक्टर, नर्स, पुलिस, मीडिया, सफाईकर्मी के साथ राशन दुकानदार और खाना डिलीवर करने वाले लोगों के प्रति उन्होंने अपना आभार व्यक्त किया।

बेटी की पहली मुस्कान पर फिदा कल्कि

हर कोई अपने परिवार के साथ वक्त बिता रहा है। अभिनेत्री कल्कि कोएचलिन का वक्त उनके जीवन में आई नन्ही परी के साथ बीत रहा है। फरवरी में कल्कि ने बेटी को जन्म दिया था। उनकी बेटी साफो दो महीने की हो गई हैं। कल्कि ने सोशल मीडिया पर उन्हें गोद में थामे हुए मुस्कुराती हुई एक प्यारी तस्वीर साझा की है। इस तस्वीर में उन्होंने अपने ब्वॉयफ्रेंड गाइ हर्शबर्ग को टैग किया है। इसके साथ ही उन्होंने हैशटैग में लिखा, पहली मुस्कान से प्यार हो गया है। इस तस्वीर पर अनुष्का शर्मा ने दिल की इमोजी बनाई है।

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
योग बाई बाबा रामदेव : सुबह 6.00
सिने संगीत : सुबह 7.00
रंगोली : सुबह 8.00
रामायण : सुबह 9.00 / रात 9.00
कोविड 19 अपडेट्स : सुबह 10.30/ रात 7.00
ब्योमकेश बक्शी : सुबह 11.00
गोदान : दोपहर 12.30
वाह क्या टेस्ट है : दोपहर 1.00
बातें फिल्मों की : दोपहर 1.30
सर्कस : दोपहर 3.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
बुनियाद : शाम 5.00
शक्तिमान : रात 8.00
चाणक्य : रात 10.00

डीडी भारती
उपनिषद गंगा : शाम 6.00
महाभारत : दोपहर 12.00/शाम 7.00

स्टार प्लस
ये रिश्ते हैं प्यार के : सुबह 6.00/ शाम 8.00
महाराज की जय हो : सुबह 6.30
कसौटी जिंदगी की : सुबह 7.00
ये रिश्ता क्या कहलाता है : सुबह 8.30
नजर : सुबह 9.30
दीया और बाती हम : दोपहर 3.30
साथ निभाना साथिया : शाम 4.30
सिया के राम : शाम 7.00
राधाकृष्ण : शाम 7.30

स्टार भारत
सावधान इंडिया-एफआइआर : दोपहर 12.00/1.00
सावधान इंडिया : इंडिया फाइट्स बैक : शाम 5.00

सोनी
द कपिल शर्मा शो : सुबह 7.00
क्राइम पेट्रोल डायल 100 : दोपहर 12.00
मेरे साईं-श्रद्धा और सबूरी : शाम 7.00
विघ्नहर्ता गणेश : शाम 7.30
सुपरस्टार सिंगर : रात 8.00
ये उन दिनों की बात है : रात 10.30

सब टीवी
मैडम सर : सुबह 10.00
तारक मेहता का उल्टा चश्मा : सुबह 10.30/ दोपहर 3.00